तोलोङ सिकि (लिपि) गही सनख़ी कत्थख़ी:री

तोलोङ सिकि (लिपि) का संक्षिप्त इतिहास

(मई 1989 से जून 2016 तक की संघर्ष यात्रा)

भाग – 1

तोलोङ सिकि डिस्प्ले सिस्टम

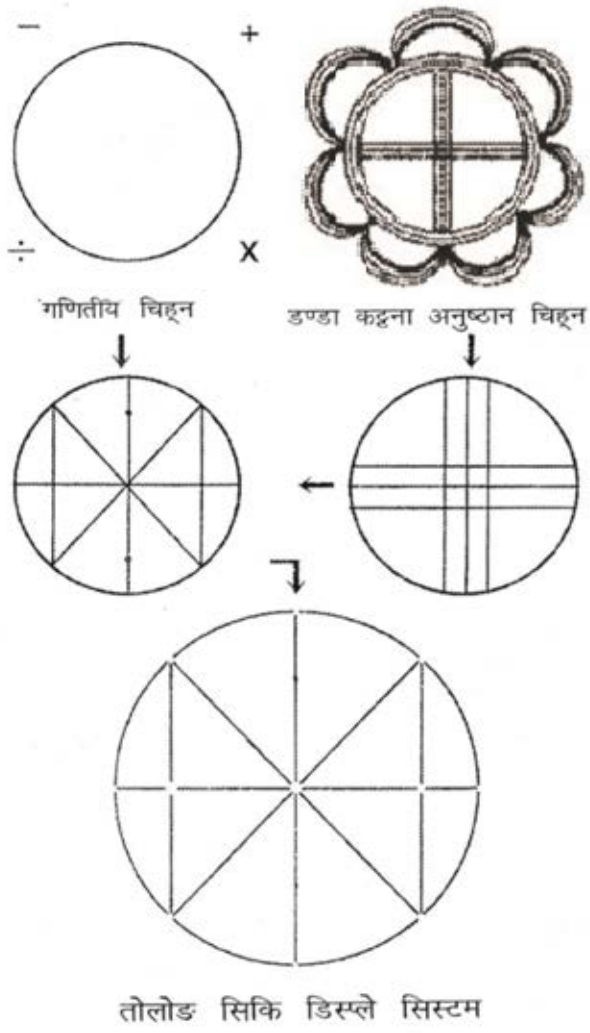

संकलन एवं सम्पादन :

डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव

सहायक प्राध्यापक, गॉस्सनर कॉलेज, राँची

प्रकाशक :

अद्दी अखड़ा

केन्द्रीय कार्यालय : म0 न0 10, करमटोली चौक, मोरहाबादी रोड, राँची, पिन – 834008

सहायतार्थ –

तोलोंग सिकि (लिपि) : एक झलक

(तोलोंग सिकि को सरकार की मान्यता)

[**तोलोंग सिकि (लिपि),** भारतीय आदिवासी आन्दोलन एवं झारखण्ड का छात्र आन्दोलन की देन है। यह लिपि, आदिवासी भाषाओं की लिपि के रूप में विकसित हुई है। इस लिपि को **कुँड़ुख (उराँव)** समाज ने **कुँड़ुख़ भाषा की लिपि** के रूप में स्वीकार किया है तथा झारखण्ड सरकार, कार्मिक, प्रषासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के पत्रांक 129 दिनांक 18.09.2003 द्वारा कुँड़ुख (उराँव) भाषा की लिपि के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने हेतु अनुषंसित किया गया है। साथ ही, झारखण्ड अधिविद्य परिषदं, राँची के विज्ञप्ति संख्या 17/2009, DPO - 20.02.2009 }kjk 2009 सत्र में सर्वप्रथम, कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, गुमला, विद्यालय के 39 छात्रों को मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिखने की अनुमति दी गयी थी। तत्पश्चात, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अधिसूचना संख्या – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा वर्ष 2016 से की मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा पत्र को तोलोङ सिकि लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई है।]

/ Tolong Siki Alphabets

(तोड़पाब) = वर्णमाला (Alphabets)

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i — ए e — उ u — ओ o — अ a — आ ā

(सेला) = लम्बी ध्वनि, ~ (सेवाँ) = स्वर ध्वनि सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र,

• (मितला) = व्यंजन ध्वनि सूचक, ’ (घेतला) = षब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = व्यंजन अ.

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	ऩ् ṉ
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या (numerals)

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

शोध–प्रस्तावक समूह :

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION (TRACE), RANCHI

प्रचारिणी संस्था समूह :

अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली (रजि0)
अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची (रजि0), कुँड़ुख़ कत्थ खोंडहा भगीटोली, डुमरी, गुमला।

कम्प्यूटरीकरण : श्री किसलय

तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर वर्जन KellyTolong font को www.newswing.com या www.tolongsiki.com से निःशुल्क डाउनलोड करें।

तोलोंग सिकि (लिपि) ही चिनहाँ गही थम्बाथाह

तोलोंग सिकि के लिपि चिह्नों का आधार

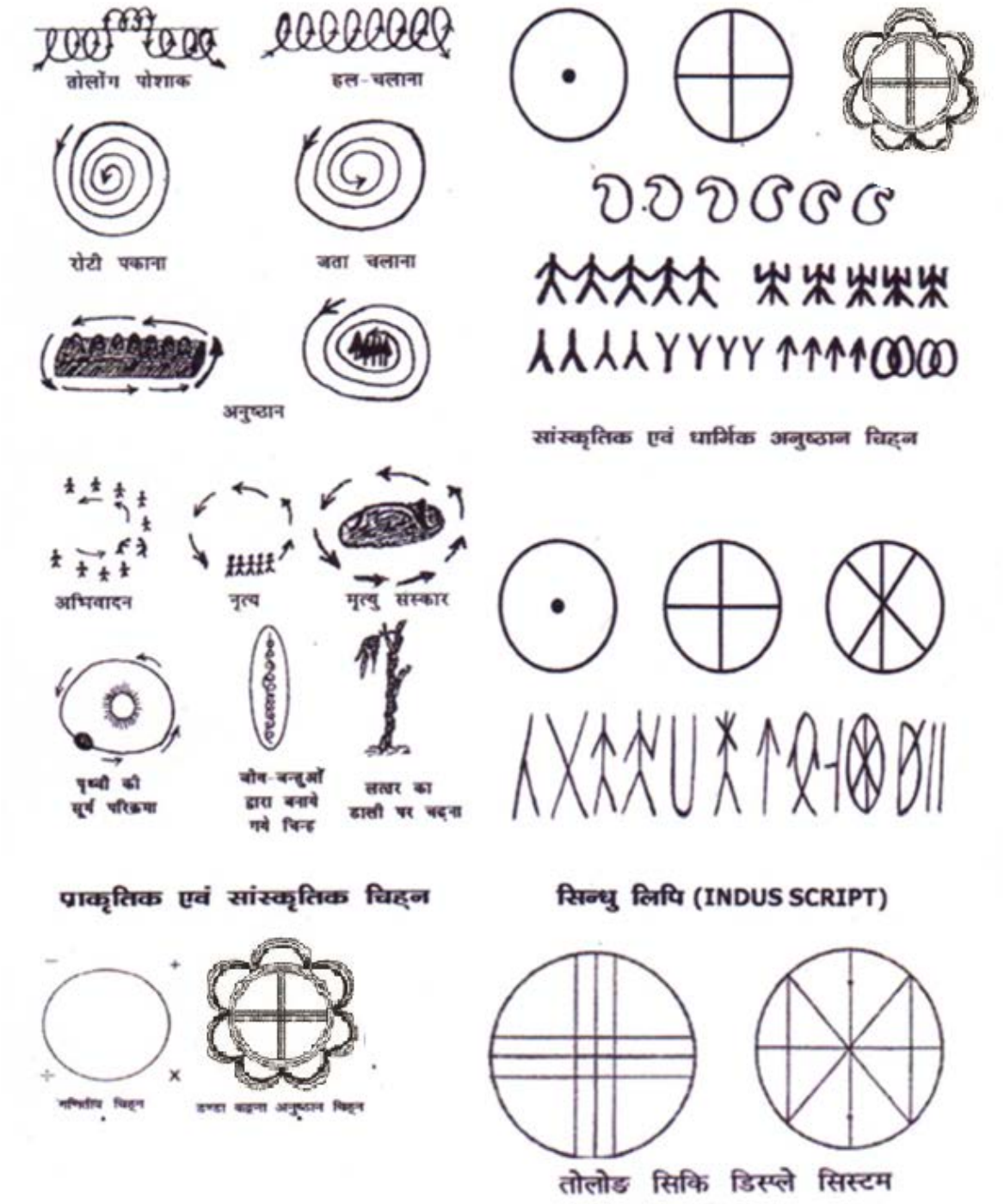

तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी संस्कृति, विज्ञान एवं अध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

मुखत्यार सिंह, भा० प्र० से०
Mukhtiar Singh, I.A.S.
आयुक्त एवं सचिव
Commissioner and Secretary

झारखण्ड सरकार

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची ।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
☎ 0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

114

पत्रांक :-8/रा०-8/2001का0-......129..............., दिनांक : 18-9-2003

सेवा में,

सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उरांव/ कुरूख भाषा को शामिल करने के संबंध में ।

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उरांव/ कुरूख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है । संथाली भाषा को लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उरांव/ कुरूख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी है । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उरांव/ कुरूख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में करने वाली जनसंख्या क्रमश: 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों में इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है ।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय । अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत उपाबद्ध आठवी अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उरांव/ कुरूख भाषा को सम्मिलित किया जाय ।

विश्वासभाजन,
(मुखत्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

ज्ञापांक,

प्रशाखा पदाधिकारी
कार्मिक प्र० सु० तथा राजभाषा विभाग
झारखण्ड, राँची

03

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुड़ुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/ पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि-1-12/2002-565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुड़ुख कथा खोड़हा लुर एड़पा भागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुड़ुख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार
ह./-
(पोलिकार्प तिर्की)
सचिव,
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09
D.O.P : 20.02.09

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ...../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुड़ुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में 'तोलोंग सिकी' अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक / उपाध्यक्ष के निजी सहायक / सचिव के निजी सहायक / संयुक्त सचिव के निजी सहायक / उपसचिव के निजी सहायक / गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड / निदेशक (मा० शि०)' को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

तोलोंग सिकि (लिपि) के संस्थापक का परिचय

नाम : डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'

जन्म स्थान : ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला (झारखण्ड)।

षिक्षा–दीक्षा

1. Matriculation – 1979 ई0, संत तुलसी दास उच्च विद्यालय, सिसई, गुमला।
2. I. Sc. – 1981 ई0, राँची कॉलेज, राँची। आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची में रहकर, झारखण्ड अलगप्रांत के छात्र आंदोलन में सक्रीयता।
3. M.B.B.S. (LNMU) – 1988 ई0, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार)।
4. PGDMCH (IGNOU) – 2001 ई0।
5. FCGP (IMACGP) – 2007 ई0।

*** शेष अंतिम पृष्ठ पर

तोलोंग सिकि (लिपि) सलाहकार समिति

1. डॉ0 विशप निर्मल मिंज मो0 न0 – 08987458689
   संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कॉलेज, राँची (वर्ष 1971 ई0 में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई शुरू हुई।)
2. डॉ0 करमा उराँव मो0 न0 – 09304454836
   प्रोफेसर, स्नातकोत्तर मानवषास्त्र विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची।
3. डॉ0 रविन्द्रनाथ भगत मो0 न0 – 09431107316
   प्रोफेसर, बिजनेस मैनेजमेंट, बी0 आई0 टी0 मेसरा, राँची, पूर्व वी0सी0, वि0भा0 वि0 हजारीबाग।
4. फा0 अगस्तिन केरकेट्टा मो0 न0 – 08051155574
   अध्यक्ष, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय समिति।
5. डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' मो0 न0 – 09771163804
   संस्थापक, तोलोंग सिकि (लिपि) सह महासचिव, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा।
6. डॉ0 जेफ्रेनियुस बख़ला मो0 न0 – 09905582725
   संस्थापक, कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, डुमरी, गुमला।
7. फा0 जेम्स टोप्पो मो0 न0 – 09835389339
   पूर्व प्रधानाचार्य, संत जॉन हाई स्कूल, राँची।
8. डॉ0 हरि उराँव मो0 न0 – 09334907447
   असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची।
9. डॉ0 नारायण भगत मो0 न0 – 08521458677
   असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कुँड़ुख़, डोरण्डा कॉलेज, राँची।
10. डॉ0 बिन्दु पहान मो0 न0 – 09234707509
    असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थषास्त्र, ए0बी0एम0 कॉलेज जमषेदपुर।
11. श्री विनोद भगत 'हिरही' मो0 न0 – 08987625713
    कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा।
12. श्री किसलय मो0 न0 – 09431113111
    वरिष्ठ पत्रकार, 218 एल एन मिश्रा कॉलोनी, इटकी रोड, राँची।

*** शेष अंतिम पृष्ठ पर

ଓଡ଼ଶଘୋଳ-ଲଡ଼ଶଘୋଳ ଯୀକଡ଼ ଗଁୱଃଵ ଯୀଡ଼ଳଘଘ॥

ଲୀଳଘୀଶ - ୱଗ॥ ଲ॥:ଶଡ଼ ଯୀଶଲଯୱଓ ଯଯଶଗ॥ ୀଶ॥ ଗୱ:ଗଘୀଳ ଗୀଲ'॥ ଽୀଯଡ଼ଽୀଓ, ॥ ଲ॥:ଶଡ଼ ଓୀଘଓୱ ଗୱ:ଗୱଘ ୀଲଲ ଶଡ଼ ଶଡ଼ଳଶଯଯଗ॥ ଶୀକଶଘ॥ ୀଶ॥ ଯୱଵଵୱ ଳଁ ଃ:ଗ॥ ଯଡ଼ଡ଼ ଃ:ଗ॥ ଶୀକଶଘ॥. ଡ଼ଲଏୀଳ ୱ:ଶୀଶ ଯୀଶଲଯୱଓ ଯୱ ଯୀ:ଘ ଯୀଘ ଘୀଯଯଡ଼ଽ॥ ଗୱଳଶଯୱଘ, ଗୀଳଗୱ ॥ଓ ଲଡ଼:ଏଡ଼ଳ ଗୀଲଘୀଓ. ଲଡ଼:ଏଡ଼ ଗୀଲଯୀଶଗ॥ ଗୱ:ଗ॥ ଃଶଲଡ଼ ଲୱଏ॥ ଃଘଘୀଲ ଶୀ॥ ଳୱଘଘଶଶ॥. ॥:ଯ ଳଁ ଯୀଶଲଯୱଓ ଯୱ ଯୀ:ଘ ଯୀଘ ଘୀଯଯଡ଼ଽ॥ ଗୱଳଶଯୱଘ, ଗୀଳଗୱ ଃ:ଗ॥ ଳଁ ଲଡ଼ଘଘଡ଼ ଳୀଳଗୀଳ ଗୀଲଳ॥ ଳୱ ଓୀଳଳଶଯଯ ୀଲଲ ଳଁ ଲଡ଼:ଶଳଓ ଗୀଲଘୀଓ. ୀଲଏ॥ ଗୀଲଯୀଶଗ॥ ଓଡ଼ ଃ:ଗ॥-ଘ॥ଗ॥ ଘୀଯଶ॥ ଗୀଲଘୀଓ. ୀଲଏୀଯ ଃଶଲଡ଼ ଲ॥:ଶଡ଼ ୀଲଲ ଃଘୀଲ ଶୀ॥ ଳୱଘଘଶଶ॥ ଗୀଳଗୱ ଯୀଶଲଯୱଓ ଯୱ ଘୀଯଯଡ଼ଽ॥ ଗ॥ ଏଲଏ॥ ॥:ଘଃ ଃଶଲଡ଼ ଲ॥:ଶଡ଼ ୀଲଲ ଳଁଃଲ ଶୀକ॥ ଳୱଘଘଶଶ॥ ୱ:ଗୀଲ ଯୀଶଲଯୱଓ ଯୱ ଘୀଯଯଡ଼ଽ॥ ଗ॥ ଏଲଏ॥ ଳଁଃଲ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ಅಗಿಲ ಗಜ:ಇ ಬಜಗಶಗ ಖಗಆಗ ಗಆಬ ಅಲ ಲಗಇಆಲ ಜಆಶಗಆ ಖಗಆಬಅಲ ಬಜಅಗಅ ಗಅಆಗ. ಇಅಲಗಆಗಅ ಅ:ಆಗಆ ಖಗಆಬಅಲ ಲಗ:ಆಗಅ - ಅಶಜ ಗಗಆಅ. ಗಗಆಅಗಅ ಬಅಲಗಆ ಇಅಲಗಗಆಗ ಖಗಆಬಅಲ ಇಲ ಗಅಲಗಶಗ ಅಜ ಗಗಆಅಗಅ ಲಗಲ ಅಗಆಅಲ ಜಆಜಆ'ಗ ಇಅಲಇಆಗ. ಖಗಆಬಅಲ ಇಲ ಗಅಲಗಶಗ ಅಲ ಗ ಗಗಆಅ ಖಲಬ ಲಗಆಶಆಗ ಖಗಆಗ ಗಗಅಗಗ ಗಅ:ಗಅಇ ಲಗಆಗಗ ಗಅಆಗ. ಗಆಅಲಅಇಅ ಖಗಆಬಅಲ ಗಗಅಗಗ ಅಲ ಗಆಖಬ ಅಗಜ ಆಗಜ ಜಆಬಅಲ ಅಲಅಗಅ-ಅಗಆಜಅಗಅ ಅಜಜಜ ಲ:ಆಅಗಗ ಖಗಆಗ ಅಲಆಲಗಅಗಗ ಅಲಅಅಗ. ಅಜಜಜ ಅಅ ಇಗಬಅಅಅಗ ಅಗ ಖಗಆಬಅಲ ಲ ಅಗಅಅಗಆ ಗಗಆಅ ಅಲ ಅಜಅಅಗಜ ಗಗಆಅ'ಗ ಇಗಬಖಗಅ ಗಆಅ ಗ ಅಗಅಗಆ ಅಲ ಅಗಅಅಗಆ ಅಜಅಅಗಅ ಬಜಆಅಖಗ ಅಗಆಗ ಇಆಅಗಆಅಗಆ-ಅಗಆಜಅಗಆ

कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोंग सिकि (लिपि)

– डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा''

कुँड़ुख़ कत्था ओन्टा अद्दी कत्था तली। मना उङगी का एकअम बेड़ा नु इदि गही हुदा अक्कुन ती बग्गे रहचा हअन। मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईःद उल्ला गइनका खतरते काःला लगी। इदिन टूड़र की उइय्या गे नमहँय पुरखर उरजिस नंज्जर हअन पहें बग्गे परदआ पोल्लर। अक्कुन हूँ नाम तीःरकम रअ्दत। अद्दी कत्था मंज्जका ती मना उङगी का ई कत्था गही एकअम बेड़ा नु सिकि (लिपि) रहचा हअन, मुन्दा अक्कुन आद ख़न्न एःख़ा गे हूँ मल इथिर'ई। ई चड्डे नमहँय लूरगरियर तमहँय बेड़ा सिरे ता नन्ना सिकि तिके टूड़ा ओःरे नंज्जर। मुन्ध नु पुरखर रोमन लिपि ती कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ा ओरे नंज्जर अदि ख़ोःख़ा देवनागरी लिपि ती टूड़तारआ हेल्लरा। रोमन अरा देवनागरी लिपि नु कुँड़ुख़ कत्थन टूड़ा गे ठउका–ठउका सिकि चिनहाँ मलका चड्डे इबड़ा सिकि ती कुँड़ुख़ कत्थन फुरचारना बेसे टूड़ा पोलताइ'ई। ई गे कत्थन दव कुना ख़ोःजर दरा उइय्या गे मलता इदिन बर'उ ख़द्दर गूटी पुरखर गही खुर्जिन अँड़स्त'आ गे नलख ननना अकय चाँड़ रअ्ईं। इन्ने नंज्जका ती अयंग कत्था गही मइनता अरा मरजाइद बछरओ दरा नमहँय खोंड़हा मुंदभारे परदो, मला होले एका बेसे बेड़ा बरआ लगी का एका बेसे बेड़ा बरना गही हँहास ख़खरआ लगी अदी गही ताःका ती नाम उढ़ियारओत काःलोत। गोट्टे ख़ेःख़ेल राःजीन एःरना ती लग्गी का उरमी गुसन कोंहा कत्था सन्नी कत्थन नुलख़ा लगी, जे लेखा का कोंहा इंज्जो, सन्नी इंज्जोन नुलख़ी। भखा पंडितर बअ्नर – ओरे नु गोट्टे बेलख़ा नु 16000 कत्था रहचा मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईद 6900 लेखआ बछरकी रअ्ई। अबड़ा 6900 नु 3500 बग्गे, एबसेरना गही पांःती नु रअ्ई। इबड़ा 3500 बग्गे एबसेरना बेसे कत्था नु कुंड़ुख़ कत्था हुं संग्गे रअ्ई। ईद नमागे अकय एलेचना बेसे कत्था रअ्ई।

अवंगे कत्थन अरा खोंड़हन बछाबअ्आ गे नमन संग्गे मनर, इन्दिर'ईम मला इन्दिर'ईम उरजिस नननम मनो। अक्कुन ता बेड़ा नु भूमण्डलीकरण मलता ग्लोबलाइजेशन बअर की एलेचना बेसे ओन्टा बइरबण्डो बरआ लगी। ईद बेगर पसअम अरा बेगर नुंजताचकम अकय ससईत चिअ्ई। ईद एन्ने जिनिस तली का इत्तु के ओरमर एकअम मला एकअम रूपे नु धर्रकर रअ्नर अरा अदी तरा नतगरनुम काःला लगनर। नमहँय अयंग कत्था हूँ इदी गही ताःका ती बछर'आ पोल्ला लगी। नमहँय कत्था – हिन्दी, अंगरेजी अरा नगपुरिया ती अरब'रा दरा पुटसी निनास होअ्आ लगी। अवंगे कत्था अरा खोंड़हन बछाबअ्आ गे नमन खोंड़हा मइनतन टूड़र की उइनम मनो, तबेम नाम इबड़न बछाबअ्आ ओंग्गोत। गोट्टे ख़ेःख़ेल राःजी नु एका खोंड़हा तमहँय कत्थन टूड़र उइय्या आःदिम इन्ना ता बेड़ा नु परिदका खोंड़हा बाःतारआ लगी अरा एकदा खोंड़हा तमहँय कत्थन टूड़र पोल्ला उइय्या आद मेटेरआ लगी। ई चड्डे तंगआ अयंग कत्थन ख़ोःजा अरा अदी गही महबन पर्दआ गे ओन्टा जुदम कत्थ एःख़ (लिपि) गही मइनता चिअ्ना हूँ अकय चाँड़ रअ्ई।

लिपि एका बेसे मनना चही ?

अककुन ता बेड़ा विज्ञान ता बेड़ा तली। अक्कुन ता नलख मशीन गही मदइत ती चाँःड़े–चाँःड़े दव कुना मनी। नमन अक्कुन ता बेड़ा नु डहरे एःका ओंग्गना दरा मशीन गने धरतारना बेसे नलख ननना चही। इदी गनेम तंगआ मूली कत्थन, मूली चाःलोन उइना मनो। परिदका राजी

ता आलर ओन्टा एन्ने कम्प्यूटर कमचका रअ्नर का आद आलर गही कत्थन मेनर की टूड़ी चिअ्ई (वर्ल्ड दिस वीक, दिनांक 11.03.1994 ई0)। कत्थन टूड़ा गे मशीन नु ख़ेक्खन बेःचताअ्ना गही दरकार मल मनी। ईद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ आईन नु र'ई। अवंगे भखा पण्डितर बअ्नर का पुना लिपि एन्ने मनना चही का आद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ आईन नु ओक्कनन नेकआ। टूड़ा गे आद सरनन नेकअन। अदी गही एःख़ किय्या का मइय्या मल ओक्कना चही अरा टूड़ो बारी ओण्टा ख़ोःख़ा ओण्टा ओक्कना (one by one) चही। अख़आ गे देवनागरी लिपि नु **लिपि** बक्क टूड़ा गे मुन्ध नु **लि** अदी ख़ोःख़ा **पि** टूड़ना मनी। मून्धता **लि** नु उरमी ती मुन्ध ह्रस्व इ ही मात्रा (ि) टूड़ना मनी अदी ख़ोःख़ा **ल** टूड़तार'ई एकदन भाखा विज्ञान दव मल बद'ई, एन्देरगे का **लि** फरचारना नु **ल** ही ख़ोःख़ा **इ** हहस बरई, पंहेस टूड़ो बाःरी ि**(इ)** ही ख़ोःख़ा **ल** टूड़तार'ई। एन्नेम, बग्गे ती बग्गे हहसन जुक्की चिनहाँ ती टूड़ा ओङगना बेसे चिन्हां उइतारना चही। अदी गने ई पुना चिन्हा तुरू, खोंड़हा चाःलोन उजगो ननना बेसे मनना चही। मुंज्जा नु एन्ने मनना चही का कत्थन एका बेसे कछनखरतार'ई अन्नेम टूड़ताःरना चही अरा एका बेसे टूड़का रअ्ई अन्नेम कछनखरताःरना चही। इदी गनेम ईःद मशीन नु हूँ दव कुना ओक्कतारआ ओङगनन नेकआ।

तोलोङ सिकि (तोलोङ लिपि) :–

तोलोङ सिकि मलता तोलोङ लिपि ओण्टा वर्णात्मक लिपि तली। ई लिपि तिके कुँडुख़ कत्थन दव कुना टूड़ा अरा बचआ ओङतार'ई। इदिन बेद्द ओथोरआ गे कुँडुख़ खोंड़हा ता नेःगचार, चाःलो अरा मइनतन डींड़ उईका रअई। कुँडुख़ खोंड़हा ता आःलर एका बसे नितकी उल्ला गोहला उइनर का एका बेसे असमा मेक्खनर, का एका बेसे गुण्डा कसनर, का एका बेसे पुजा–धजा ननो बारी ख़ेक्खन किन्दराअ्नर, अबड़न दिम एःरर की लिपि चिनहाँ उइतारकी रअई। डण्डा कट्टना नेग नु एका बेसे चिनहा कमतार'ई रअ्ई अदिन नेंव अरा डींःड़ उइका रअ्ई। खोंड़हा ता इबड़ा चिनहन तोलोंग अत्तना–पुन्दुरना नु एका बेसे चिनहां कमतार'ई आ बेसेम उरमिन हेःचका रअ्ई।

ई लेखे ख़ल्ल–उखड़ी, पद्दा–ख़ेप्पा, टोड़ंग–परता, टोला–पड़ा, एड़ता–पल्ली, अखड़ा–खूरी, नाल–टोंका गुट्ठी अड्डा तिके अनआ–मनआ चिनहाँ ख़ोःजतारा। अदी ख़ोःख़ा मूली हहसन ख़ोंःड़'अर, अदी गही बराबरी नु ओन्टा चिनहाँ उइताःरा। मूली सड़न ख़ोंःड़आ गे अक्कुन गूटी ता कुँडुख़ लूरगरियर गही टूड़का पुथिन डींड़ उईतारना मंज्जा। इदी ख़ोःख़ा ध्वनि विज्ञान गही आईन लेखेम इदिन सरियाअ्ना की उइना मंज्जकी रअ्ई। मशीन नु ओक्त'आ गे ''बाइस सेगमेन्ट डिस्प्ले सिस्टम'' नाःमे ही ओण्टा फरमा कमअर अइय्या चिनहन ओकताचका रअ्ई। ई फरमन कमआ गे कुँडुख़ खोंड़हा ता ''डण्डा कट्टना नेःग चिनहन डींड़ उइका रअ्ई। इदी ख़ोःख़ा एका सड़ा गही बेहवार बग्गे मनी अदी गे सेब्बा चिन्हाँ उइका रअ्ई अरा *बग्गे ती बग्गे* चिनहन *घड़ी गही किर्रना डहरे ती बिड़दो डहरे नु (anticlockwise direction)* उईका रअ्ई। एन्देर गे का कुँड़ख़ खोंड़हा नु उज्जना गूटी ता उरमी नेःगचार घड़ी गही बिड़दो डहरे नु ननतार'ई। *ख़ेःख़ेल हूँ बीःड़ी गही चउगुड़दी किन्दरारओ बाःरी घड़ी गही बिड़दो डहरे नु किन्दरार'ई। लड़ंग हूँ डाःड़ा नु अरगो बाःरी घड़ी गही बिड़दो डहरे नु किन्दरारनुम अरगी। बइरबण्डो हुं घड़ी ही बिड़दो डहरे नुम किन्दरार'ई अरा अम्म भँवरी हुं अन्नेम अक्कुन्ता बेड़ा ता घड़ी ही बिड़दो डींड़ नुम किन्दरार'ई। इबड़न दिम एःरर की नमहँय पुरखर उरमी नेःगचार गुट्ठिन तीःना ती डेब्बा घड़ी गही बिड़दो डहरे नु ननना ओःरे नंज्जर।*

ई लेखे ई पुना सिकिन (लिपि) इंजिरओ बाःरी कुँडुख़ ख़ोंड़हा ही नेःगचारन, मशीन गही आईनन अरा भखा विज्ञानन दव कुना गुनईन ननर किम डहरे ओथोरतारकी रअ्ई।

हुदा कत्था (विशेषताएँ) :–

(1) **"तोलोङ सिकि (लिपि)"** सँवसे कुँडुख़ खोंड़हा अरा कुँडुख़ चाःलोन डींःड़ उईयर ख़ोःजतारकी रअ्ई। नाम भारत देश नु ढेर बग्गे भखा अरा लिपि ही दबी नु रअ्दत। अवंगे, कुँडुख़ खोंड़हा गही एकता अरा परदना गे **कुँडुख़ भखा–कुँडुख़ लिपि** गही हुही दिम कुँडुख़ारिन ओन्टे मेःर नु हेओ।
(2) इदी गही तोड़न (वर्णमाला) भाषा विज्ञान नु तिङगका डहरे बेसेम उईतारकी रअ्ई।
(3) कुँडुख़ कत्था गही 60 गोटङ मूली हहस (सरह – 24 अरा हरह – 35+1) रअ्ई अदिन 41 गोटङ मूली सिकि (लिपि) चिनहाँ अरा 5 गोटंग पँड़सु चिन्हाँ ती दव कुना टूड़तार'ई। कुँङख़ कछनखरना नु 35 गोटंग हरह, 24 गोटंग सरह हहस अरा 1 (ओन्टे) हेचका हरह मनी। ई सिकि नु मूली चिन्हाँ 41 गोटङ एका मनी। इदिन निस्ठआ गे डण्डा कट्टना नेग चिन्हा नु कमरका चिन्हा नु नतगरका डींड़ (30 गोटंग) अरा हेःरका अड्डा (11 गोटंग) जोःड़ना ती 30 + 11 = 41 दिम मनी। अन्नेम पुजा ननो बाःरी बिरही अरा संजगी लग्गी, अबड़द संगरा चिन्हा ही जोक्खा तली।
(4) ई सिकिन पर्दआ गे केन्दीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर अरा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग रांची, विश्वविद्यालय राँची ता लूरगढ़ियर ती सलहा ख़खरकी रअ्ई।
(5) इदि गे झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची ती सलहा ख़खरकी रअ्ई।
(6) ई सिकि गही कम्प्यूटरीकरण मंज्जा दरा इदी ही सोफ्टवेयर, इन्टरनेट नु ख़खरआ लगी। इदिन www.newswing.com मलता www.tolongsiki.com ती डाउनलोड ननतारआ उंग्गी।
(7) **तोलोङ सिकिन** झारखण्ड राजी ता कुँडुख़र **कुँडुख़ कत्था गही लिपि** बअर अंगियाचर अरा चान् 1999 तिकेम गैर सरकारी स्कूल नू टूड़ना–बचना ओःरे नंज्जका रअ्नर।
(8) इदिन कार्मिक, प्रषासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार ही पत्रांक 129 दिनांक 18.09.2003 तुले **"कुँडुख़ कत्था ही लिपि तोलोंग सिकि तली"** बअर मइनता ख़खरकी रअ्ई दरा संविधान ही आठवीं अनुसूची नु मंक्खा गे केन्द्र सरकार, गृह विभाग गुसन तईका रअ्ई।
(9) इदिन, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची गही प्रेस विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009 तुरू ओण्टा स्कूल, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला, स्कूल गे, वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 नु परीक्षा टूड़ा गे मईनता चितारकी रअ्ई।
(10) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची ही अधिसूचना सं0 – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12.02.2016 तुरू वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2016 ती परीक्षा टूड़ा गे मईनता चितारकी रअ्ई।
(11) ई सिकि ती टूड़ा–बचआ गे गुमला–लोहरदगा तरता कुँडुख़र, धुमकुड़िया कोल्लर अरा पूर्वी–पष्चिमी सिंहभूम तरता कुँडुख़र, टिस्को कम्पनी ही साक्षरता अभियान नलख गने जोड़ोरअर कुँडुख़ कत्था अरा तोलोंग सिकिन सिखिरआ दरा बींःड़आ लगनर।
(12) असम, प0 बंगाल, ओड़िसा, छतीसगढ़, मध्यप्रदेश अरा महारष्ट्र (नागपुर) ता कुँड़ख़र ई सिकि नु तमहय अड्डा लेखआ पुथी कमअर, ई सिकिन बींःड़आ लगनर।

– डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'

-----X-----

मातृभाषा कुँड़ुख़ और तोलोङ सिकि

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, दिनांक 21 फरवरी 2012 को दैनिक समाचार पत्र प्रभात खबर में एक बड़ी खबर छपी – **दुनियाँ में 3500 भाषाएँ विलुप्ति की कगार पर**। रिर्पोट के मुताबिक, दुनियाँ में 6900 भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन इनमें से 3500 भाषाओं को चिंताजनक स्थिति वाली भाषाओं की सूची में रखा गया है। इस षीर्षक के माध्यम से कहा गया है कि – **यूनेस्को ने वर्ष 1999** में विष्व की उन भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की ओर दुनियाँ का ध्यान आकर्षित करने के लिए हर वर्ष **21 फरवरी** को **अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस** मनाने का निष्चय किया, जो कहीं–न–कहीं संकट में हैं। इसी तरह दिनांक 23.5.1997 को दैनिक समाचार पत्र **जनसत्ता** के माध्यम से बतलाया गया कि – पूर्व में दुनियां में 16000 भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो 20वीं सदी में मात्र 6000 रह गयी हैं।

वर्तमान में भारतर्ष में 1911 के जनगनना के अनुसार लगभग 840 अनुसूचित जनजातियाँ हैं जिनमें से दो जनजातियों की भाषा (संताली एवं बोड़ो) को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिला है। इसी तरह झारखण्ड में कुल 32 अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनमें से मात्र 5 भाषाओं (कुँड़ुख़, मुण्डारी, खड़िया, हो एवं संताली) की पढ़ाई विष्वविद्यालय स्तर पर होती हैं।

इस षीर्षक लेख में **मातृभाषा** का तातपर्य **कुँड़ुख़ भाषा** से है, जो वर्तमान में **दुनियाँ की उन 3500 भाषाओं में से है, जो विलुप्ती की कगार पर हैं।** इस भाषा को बोलने वाले **उराँव** लोगों की संख्या पूरी दुनियाँ में लगभग 40 लाख से अधिक हैं किन्तु अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का मानना है कि इस भाषा को बोलने वालों की संख्या दिनों–दिन घटती जा रही है।

अपनी मातृभाषा की वर्तमान दषा का मुख्य कारण यह है कि नई पीढ़ी अपनी भाषा–संस्कृति से विमुख हो रही है। बुजुर्ग एवं पढ़े–लिखे लोग इसे उचित सम्मान दिलाने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। पढ़ा–लिखा वर्ग भौतिकवाद की दौड़ में रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी के पीछे हैं और उन्हें देखकर अनपढ़ एवं दरपढ़ वर्ग हीन ग्रन्थी का षिकार हो रहा है। स्थिति यह है कि एक सषक्त सभ्यता एवं संस्कृति की वाहक एवं पोषक भाषा अपने ही घर में तिरस्कृत हो रही है। यह मात्र गाँव की भाषा तथा अनपढ़ लोगों की भाषा बनकर रह गई है। यह स्थिति कुँड़ुख़ भाषा की **प्राकृतिक मौत** का द्योतक है अर्थात भाषा के साथ–साथ उस भाषा से जुड़ी सभ्यता एवं संस्कृति का भी प्राकृतिक मौत का संकेत है। क्या, हम इस चुनौती के लिए तैयार हैं ?

कुँड़ुख़ भाषा की वर्तमान दषा के कारण :–

(क) ऐतिहासिक कारण :–

इतिहास साक्षी है कि कुँड़ुख़ पुरखों ने अपनी जाति, परम्परा एवं सम्मान की रक्षा हेतु तुड़ख़र (गैर कुड़ुख़) लोगों से अनेकों बार युद्ध करना पड़ा। कई बार कुँड़ुख़ पूर्वज विजयी रहे और कई बार उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। अन्ततोगत्वा अपनी भाषा, संस्कृति एवं स्वाभिमान की रक्षा हेतु वे जंगलों में शरणागत हुए। कई साथी बिछुड़े, कई मिट गये और कई भटक गये। इस संक्रमण काल में कँड़ुख़ भाषा कई अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आयी। फलस्वरूप भाषायी सम्मिश्रण हुआ। कालान्तर में प्रबुद्ध वर्ग की भाषा को राजकीय भाषा का दर्जा मिला, फलस्वरूप कुँड़ुख़ एवं अन्य छोटे समूह की भाषा का विकास अवरूद्ध हो गया।

(ख) राष्ट्रीय कारण :–

यूँ तो कँड़ुख़ भाषा भारत वर्ष में आदिकाल से ही विद्यमान है फिर भी इसका अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। मुगल काल में हिन्दी के साथ–साथ उर्दू भाषा का विकास हुआ। ब्रिटिष काल में अंग्रेजों

के साथ अंग्रेजी आयी। अंग्रजों ने अपने षासन काल में सरकारी नौकरी के लिए अंग्रेजी को अधिकाधिक महत्व दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिला तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी को स्वीकार किया गया, जिसके चलते ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी रोजगार की भाषा बन गई और अन्य भाषाओं को मौका दिये बिना ही इन दो भाषाओं का उत्तरोत्तर विकास होता गया।

(ग) क्षेत्रीय कारण :–

कुँडुख़ समुदाय अपने कई पड़ोसी गैर कुँडुख़ (तुडुख़) समुदायों के साथ–साथ रहती आयी है। एक साथ रहने के चलते इनके बीच भाषायी एवं सांस्कृतिक सम्मिश्रण हुआ और एक नई सम्पर्क भाषा (जैसे नागपुरिया यथा सादरी आदि) का विकास हुआ। बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक समुदायों के बीच यह सम्पर्क भाषा को राजनैतिक एवं प्रषासनिक संरक्षण प्राप्त हुआ जिसके चलते यह कुँडुख़ भाषा को पछाड़ते हुए आगे निकल गई। कहा जाता है बीरू राजा का क्षेत्र (वर्तमान सिमडेगा जिला) में कुँडुख़ भाषा बोलने की मनाही थी तथा पकड़े जाने पर उन्हें आर्थिक दण्ड भुगतना पड़ता था।

(घ) भूमण्डीकरण का प्रभाव :–

भूमण्डलीकरण के प्रभाव से कोई भी भाषा–संस्कृति अथवा समाज अछूता नहीं है। आज नई तकनीकि के विकास के साथ उन चीजों के साथ उनकी भाषा एवं संस्कृति भी साथ आईं और दूसरे समाज में बिन बुलाये मेहमान की तरह घुस आई। चूँकि नई तकनीकि–षिक्षा, सभी समाज को स्वीकार्य है। अतएव नई तकनीक के साथ उनके साथ आयी भाषा–संस्कृति को अपनाये बिना आगे बढ़ पाना मुष्किल होता है। इस तरह के प्रभाव से कुडुख़ भाषा–संस्कृति भी अछुता नहीं रह पाया।

(ङ) कुँडुख़ समाज की विफलता :–

कुँडुख़ समाज अपनी भाषा को संग्रहित एवं सुरक्षित रख पाने में सफल नही हो पाया। वैसे कहा गया है कि – ''भाषा परिवर्तनषील है'' किन्तु भाषा का वह रूप जो प्रकृति प्रदत है यानि जो सिर्फ बोली और सुनी जाती है, का रूप स्थिर नहीं होता है। परन्तु जो स्वरूप सभ्यता एवं संस्कृति से मिलता है यानि आँख से देखकर पढ़ सकने एवं लिख सकने की कला, जो भाषा को स्थिरता प्रदान करती है उस क्षेत्र में कुँडुख़ समाज सबसे पीछे रहा और आज तक पिछड़ा हुआ है। मौखिक भाषा को संरक्षित कर पाना मुष्किल है और आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी पहचान चिह्न अथवा नई लिपि दिये वगैर अपनी भाषा–संस्कृति को संरक्षित कर पाना भी मुष्किल है।

कुँडुख़ भाषा की वर्तमान दषा से निवारण :–

(1) कुँडुख़ भाषा के लिए अपनी नई लिपि की स्थापना :–

कुँडुख़ भाषा को वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में संरक्षित एवं सुरक्षित रखने हेतु साहित्य सृजन अपनी नई लिपि में होगी, जो नये दौर में भाषायी क्षरण का कवच बन पायेगा।

(2) विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्थापित करना :–

कुँडुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक कुँडुख़ क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से करनी होगी। जिन्हें तकनीकि अथवा व्यवसायिक विषयों की पढ़ाई करनी होगी वे नवीं कक्षा से व्यवसायिक विषयों की ओर मुढ़ेंगे क्योंकि व्यवसायिक विषयों की पढ़ाई नवीं कक्षा से ही आरंभ होती है तथा जो मैट्रीक तक एक साहित्यिक विषय के रूप में मातृभाषा पढ़ना चाहतें हों वे अपनी मातृभाषा के साथ आगे बढ़ सकेंगे। साथ ही महाविद्यालयों में मातृभाषा विषय के पठन–पाठन की समुचित व्यवस्था करायी जानी चाहिए।

(3) अपनी संस्कृति एवं भाषा को अपने जीवन संस्कृति में उतारना :–

कुँड़ुख़ समाज के लोगों को तकनीकि षिक्षा, उच्च षिक्षा आदि चीजों में पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा पूर्वक परिश्रम करना चाहिए किन्तु दैनिक जीवन में अथवा अपने व्यक्तिगत जीवन में अपनी मातृभाषा का अनादर करना छोड़ना ही होगा।

''तोलोङ सिकि'' एक परिचय :–

''तोलोङ सिकि'' एक लिपि है। इसे आदिवासी भाषाओं के विकास के लिए विकसीत किया गया है। लिपि के प्रारूपण में मध्य भारत के मुख्य आदिवासी भाषाओं की ध्वनियों को आधार माना गया है। लिपि चिह्नों के संकलन हेतु हल चलाते समय बनी हुई आकृतियां, परम्परागत पोषाक तोलोंग, पूजा अनुष्ठान में खींची गयी आकृतियां, डण्डा कट्टना पूजा अनुष्ठान चिह्न तथा दीवारों में बनायी जाने वाली आकृतियाँ एवं खेल–खेल में खींची जाने वाली रेखाएँ लिपि चिह्न का मुख्य आधार है। साथ ही आधुनिक तकनीक में खरा उतरने हेतु गणितीय चिह्न जोड़, घटाव, गुणा, भाग, वृत, आयत, वर्ग आदि को भी आधार माना गया है। तोलोंग एक प्रकार का मर्दाना पोषाक है, जिसे कमर में लपेट–लपेट कर पहना जाता है। यह तोलोंग षब्द कुँड़ुख़, मुण्डा, खड़िया, हो, संताली आदि सभी भाषाओं में उभयनिष्ट है। सिकि का अर्थ लिपि है। इस प्रकार तोलोङ सिकि का अर्थ तोलोङ लिपि है।

कुँड़ुख़ भाषा के लिए नई लिपि की आवष्यकता क्यों ?

भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि किसी भी भाषा के दो रूप होते है :–

(1) Verbal Speech या कान की भाषा।

(2) Visual Speech या आँख की भाषा।

कान की भाषा प्रकृति प्रदत है तथा यह परिवर्तनषील है। आँख की भाषा सभ्यता की देन है तथा यह किसी भी भाषा को स्थिरता प्रदान करता है। वैज्ञानिकों का मानना है स्थिर स्वरूप के बिना बोली का स्थायित्व नहीं होता है। स्थिरता प्रदान करने वाला रूप ही आंख की भाषा है। अतएव आंख की भाषा अर्थात लिपि चिह्न का विकास किया जाना आवष्यक है। जिस किसी समाज ने आंख की भाषा को अपनाया, वह वर्तमान समाज में अगली पंक्ति पर खड़ा है।

कुँड़ुख़ भाषा के पास अबतक सिर्फ प्रथम स्वरूप है, जिसके चलते यह भाषा अपनी परिवर्तनषील प्रकृति के अनुसार ही गतिषील है। अर्थात यदि इसे स्थिरता प्रदान करने का उपाय नहीं किया गया तो यह अपनी प्राकृतिक मौत की ओर अनायास ही बढ़ती चली जायेगी। अतः जब तक भाषा को स्थिरता प्रदान करने वाला रूप यानि लिपि नहीं दिया जायेगा तबतक इसे बचा पाने में कठिनाई होगी।

तोलोङ सिकि (लिपि) ही क्यों ?

उपलब्ध कुँड़ुख़ साहित्यों के अवलोकन से पता चलता है कि पूर्व में ईसाई मिषनरियों ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए सर्वप्रथम रोमन लिपि का व्यवहार किया। उसके बाद देवनागरी लिपि का व्यवहार किया जाने लगा। वर्तमान में महाविद्यालों में कुँड़ुख़ भाषा का पठन–पाठन का माध्यम देवनागरी लिपि है। इस परिस्थिति में एक नई लिपि ''तोलोङ सिकि'' को स्वीकार करने की बात जनमानस को झकझोरती है कि – ''एक नई लिपि की षुरूआत क्यों की जाय ?'' इस समस्या का समाधान निम्नलिखित प्रष्नों के उत्तर में निहीत है। हम सभी स्वयं से प्रष्न करें :–

(1) क्या, उपरोक्त लिपियाँ (रोमन एवं देवनागरी) कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त हैं ?

(2) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की सभी ध्वनियों को प्रतिनिधित्व करती हैं ?
(3) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रख पाएंगी ?
(4) क्या, उपरोक्त लिपियाँ कुँड़ुख़ समाज एवं संस्कृति हो प्रतिविम्बत करती हैं ?
(5) क्या, उपरोक्त लिपियों से कुँड़ुख़ भाषा एवं समाज को भूमण्डलीकरण का दबाव एवं आदिवासी समाज के चारों तरफ का revers force के दबाव से बचाया सकेगा ?

इन सभी प्रष्नों का उत्तर है – नहीं। यदि इन प्रष्नों का उत्तर उपरोक्त लिपियाँ नहीं है, तो सही उत्तर क्या है ? इन सभी प्रष्नों का सही उत्तर है – ''तोलोङ सिकि''।

''तोलोङ सिकि'' का आधार कुँड़ुख़ भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज एवं मान्यता है। इसमें कुँड़ुख़ भाषा की सभी मूल ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न (लिपि चिह्न) है। यह कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रखने में सक्षम है। यह भूमण्डलीकरण के कुप्रभाव से बचने के लिए प्रतिरोधक का कार्य कर सकता है। साथ ही यह भूमण्डलीकरण के दबाव के बीच कुँड़ुख़ सभ्यता, संस्कृति को दूसरे बड़े समुदाय के बीच नेत्रग्राह्य बनाएगा।इतिहास की ओर मुड़कर देखने से पता चलता है कि रोमन लिपि का इतिहास रोमन सभ्यता से है तथा देवनागरी लिपि का इतिहास वैदिक सभ्यता से। इस प्रकार इन दोनों में कुँड़ुख़ सभ्यता अथवा आदिवासी सभ्यता की झलक लेष मात्र भी नहीं है। अतएव वर्तमान में रोजगार एवं तकनीकी षिक्षा हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी को अपनाया जाना आवष्यक है तथा अपनी भाषा–संस्कृति को बरकरार रखने के लिए अपनी मातभाषा को पठन–पाठन का आधार बनाकर आगे बढ़ना भी आवष्यक है।

इन तीनों के लिए राष्ट्रीय षिक्षा नीति मे त्रिभाषा फार्मूला को स्थान दिया गया है। साथ ही झारखण्ड सरकार ने भी इस फार्मूला को लागू किया है। अब बारी समाज की है कि आगे कैसे बढ़ें ?

विषेषताएँ :–

(1) ''तोलोङ सिकि या तोलोङ लिपि,'' कुँड़ुख़ समाज एवं कुँड़ुख़ संस्कृति को आधार मानकर विकसित किया गया है।

(2) इस लिपि का वर्णमाला का निर्धारण, अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान में बतलाये गये दिषा निर्देष के अनुसार किया गया है।

(3) कुँड़ुख़ भाषा में 60 मूल ध्वनि हैं जिसे 46 लिपि चिह्नों से लिखा जा सकता है। कुँड़ुख़ बोलचाल में 35 व्यंजन ध्वनि, 24 स्वर ध्वनि तथा एक अर्द्धस्वर अ अथवा व्यंजन अ् ध्वनि है।

(4) इसे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची, विष्वविद्यालय राँची के प्राध्यापकों का मार्ग दर्षन प्राप्त है।

(5) इसे झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची के विद्वतजनों का मार्गदर्षन प्राप्त है।

(6) इस लिपि का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है तथा सॉफ्टवेयर, इन्टरनेट में उपलब्ध है। सॉफ्टवेयर डिजाएनर श्री किसलय जी ने वर्ष 2002 में KellyTolong Font के नाम से कम्प्यूटर वर्जन विकसित किया है और आदिवासी समाज को निशुल्क समर्पित है, जिसे www.newswing.com या www.tolongsiki.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

(7) इसे झारखण्ड के कुँड़ुख़ लोग, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप स्वीकार किया है तथा वर्ष 2001 से ही गैर सरकारी स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई किया जाता है।

(8) इसे झारखण्ड सरकार ने सितम्बर 2003 में कुँड़ुख़ भाषा में मान्यता देते हुए केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने हेतु भेजा जा चुहा है।

(9) इस नई लिपि से मैट्रिक परीक्षा में परीक्षा लिखने के लिए झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा 19 फरवरी 2009 को मान्यता प्राप्त है।

(10) इसे झारखण्ड सरकार युवा, संस्कृति एवं खेल मंत्रालय की ओर से 28 अक्टुवर 2011 को ''तोलोंग सिकि'' लिपि के अनुसंधान हेतु डॉ0 नारायण उराँव सैन्दा को **सांस्कृतिक सम्मान – 2011** प्रदान किया गया है।

(11) दिनांक 30.11.2015, समय 11.30 बजे पूर्वाहन, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में मुख्य अतिथि विशप डॉ0 निर्मल मिंज की अघ्यक्षता में **कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक शब्दावली शब्द भण्डार** का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में डॉ0 के0 सी0 टूडू, (विभागाघ्यक्ष, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची), डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज (अध्यक्ष, कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली), डॉ0 फांसिस्का कुजूर, डॉ0 एच0 एन0 सिंह, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 रामकिशोर भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तीन केरकेट्टा, श्री अशोक बाखला, श्री जिता उराँव (सचिव, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची), श्री सरन उराँव, श्री बन्दे उराँव, श्री तेतरू उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के बहुत सारे छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। इन सभी भाषा विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों ने **पारिभाषिक शब्दावली** (तीन लिपि – देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि में लोकार्पित) के गुण–दोषों एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए इसकी आवश्यकता आदि तथ्यों पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए जनसाधारण के व्यवहार के लिए **कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक शब्दावली शब्द भण्डार** को लोकार्पित किया गया तथा आह्वान किया गया कि इन पारिभाषिक शब्दावलियों के आधार पर विद्वतजन व्याकरण की रचना करें और पठन–पाठन में सहयोगी बनें।

(12) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अधिसूचना संख्या – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा वर्ष 20016 से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा पत्र को तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई है।

(13) वर्ष 20016 से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा पत्र को तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति मिलने पर दो विद्यालय –

1. कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा लूरडिप्पा भगीटोली, डुमरी, गुमला तथा
2. कार्तिक उराँव आदिवसी कुँड़ुख़ उच्च विद्याालय, मंगलो, सिसई, गुमला

के छात्रों ने कुँड़ुख़ भाषा पत्र की तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखी और अच्छे से परीक्षा पास हुए।

तोलोङ सिकि की व्याकरणात्मक विवेचना एवं विशेषता

1. 'तोलोङ सिकि' अथवा 'तोलोङ लिपि' एक वर्णात्मक लिपि है । इसे 'रोमन लिपि' की तरह एक के बाद एक लिखा जाता है। यह 'देवनागरी लिपि' में मात्रा चिह्न लगाने की परम्परा से मुक्त है। इस लिपि से किसी षब्द को उसके षब्द–खण्ड **(**Syllable**)** के आधार पर लिखा एवं पढ़ा जाता है । जैसे – कमहड़। इस षब्द में कम् + हड़ दो षब्द खण्ड है। इसे तोलोङ सिकि में इस प्रकार

लिखा जाता है – **[illegible]+[illegible] = [illegible].** 2. किसी एक षब्द–खण्ड में, व्यंजन वर्ण के साथ कम से कम एक स्वर वर्ण का होना आवष्यक है। बिना स्वर के षब्द–खण्ड पूरा नहीं होता है। जैसे – **[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].** 3. किसी षब्द–खण्ड में एक मात्र स्वर रह सकता है किन्तु एक व्यंजन, स्वर वर्ण के बिना अकेला नहीं रह सकता। जैसे – **[illegible]** (ओ + था), **[illegible]** (ओथोऱ + आ), **[illegible]** (मेसेऱ + आ), **[illegible]** (गछऱ + आ)। 4. वाक्य में, किसी षब्द–खण्ड के साथ स्वर वर्ण के बाद अधिक से अधिक दो व्यंजन वर्ण होते हैं। जैसे – **[illegible] + [illegible] = [illegible]** (बर्ह + माःरना त्र बर्हमारना)। 5. यदि किसी षब्द–खण्ड के प्रथम दोनों आरंभिक वर्ण व्यंजन वर्ण हो, तो पहला व्यंजन, द्वितीय व्यंजन के साथ संयुक्त होकर, द्वितीय व्यंजन के स्वर के अनुरूप उच्चरित होता है। जैसे – प्यार – **[illegible],** क्रिया – **[illegible].** 6. षब्द–खण्ड का अंतिम वर्ण यदि **'अकारान्त'** हो, तो वह स्वर रहित होता है। जैसे – कर्म – **[illegible],** समान – **[illegible].** यहाँ अन्तिम वर्ण म् एवं न् स्वर रहित है, चूंकि षब्द–खण्ड का दोनों अन्तिम वर्ण **'अकारान्त'** है। 7. यदि किसी षब्द में प्रथम षब्द–खंड के बाद षब्द–खंड के रूप में स्वर आए तो उसे, पूर्व के षब्द–खंड से अलग दिखलाने के लिए **घेतला** ¼ **'** ½ चिन्ह दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस चिन्ह का प्रयोग वैसे स्थान पर भी होता है जहाँ एक वर्ण, प्रथम षब्द–खंड के अंतिम वर्ण के रूप में तथा बाद वाले षब्द खंड के प्रथम वर्ण के रूप में एक ही स्थान पर व्यवस्थित हो। वैसी स्थिति में इसके उच्चारण एवं षब्द–खंड को दिखलाने के लिए घेतला चिह्न (षब्द खण्ड सूचक चिह्न) पड़ता है । जैसे – पर्दो – **[illegible],** पर्दओ – **[illegible]** बन्ना – **[illegible],** बनना – **[illegible].**

8. यदि ''प'' वर्ग, ''त'' वर्ग, ''ट'' वर्ग, ''च'' वर्ग, ''क'' वर्ग के अक्षर के पहले अनुनासिक ध्वनि आये तो उस अनुनासिक ध्वनि के स्थान पर **मितला** (**˙**) चिह्न दिया जाता है। जैसे – मेंत, चेंठ, पंच, कंक, बोंगा आदि क्रमषः **[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]** आदि। 9. यदि य, र, ल, व, स, ह, ख़, ड़, ढ़ आदि के पहले, अनुनासिक ध्वनि हो, तो क्रमषः अपने उच्चारण स्थान के अनुसार अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक स्थान लेता है। अतएव इन वर्णों के पूर्व अनुनासिक ध्वनि रहने पर, स्वर ध्वनि सूचक चिह्न ˜ (**सेवाँ**) दिया जाता है। जैसे – **[illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible];** किन्तु कुछ विदेषज षब्दों के प्रयोग में 'स' वर्ण के पूर्व 'न' का भी प्रयोग होता है। जैसे – सन्स **= [illegible].**

10. यह लिपि वर्णात्मक है, इसलिए हलन्त का प्रयोग नहीं होता है।

11. **सेला (:)** चिह्न का प्रयोग स्वर के उच्चारण समय को लम्बा करने तथा **हेचका** (**।**) का प्रयोग स्वर को झटके के साथ उच्चारण करने के स्थान पर किया जाता है। जैसे – **[illegible]** ¼एःड़ा½ = बकरी, **[illegible]** ¼बअ्ना½ = बोलना।

12. **सेवाँ** (˜) का प्रयोग देवनागरी लिपि के चन्द्र बिन्दु (ँ) के स्थान पर होता है अर्थात **सेवाँ** चिह्न अनुनासिक स्वर सूचक है, जबकि देवनागरी का बिन्दु (ं) चिह्न व्यंजन ध्वनि सूचक है। **सेवाँ** चिह्न का प्रयोग हमेषा ही अनुनासिक स्वर के रूप में होता है तथा लम्बी स्वर ध्वनि के साथ सिर्फ सेवाँ का ही प्रयोग होगा। जैसे – **ᒣ৬ഞ॥, ൈV̈:ᑌ, ഗV̈:ൈVൽ, ൈఠ̃:൬, ഖP̃:৬P, ധ్ऍ৬൬P, ൈॉ:৬V ധ४ൡൠP.**

13. षब्द के अन्त में यदि अकारान्त संयुक्त ‘र’ हो तो ‘र’ के पूर्व वर्ण में **रेवाँ** (‿) ‘र’ देकर लिखा जाता है, जैसे – राष्ट्र – **ଚ॥ଓ്ര,** मित्र – **ഖPര,** वक्र – **ഖ1ഗ,** चक्र – **ൈ1ഗ,** सत्र – **ഗ1ര,** गोत्र – **ധ४ര.**

14. कुँडुख़ भाषा में ङ् एवं ञ् का व्यवहार विषेष रूप से होता है। जैसे, ङ् ध्वनि का प्रयोग – इतङली = **Pഖലൊ1ß P**, झिलङी = **ഒPßലP,** झोलङो = **ഒ४ßല४** आदि। इसी तरह ञ् ध्वनि का प्रयोग, जैसे – चिञा = **ൈPൊ॥**, चोञा = **ൈ४ൊ॥,** कोञा = **ഗ४ൊ॥,** मइञा = **ഖ1Pൊ॥,** टईञा = **ൡ1Pൊ॥** आदि।

15. देवनागरी लिपि से कुँडुख़ भाषा के सभी ध्वनियों को ज्यों का त्यों लिखने में कठिनाई होती है। अतः देवनागरी लिपि के मूल सिद्धांत **‘एक ध्वनि एक संकेत’** के अनुसार तथा पुनरूक्ति दोष से बचने हेतु प्रचलित ध्वनि चिह्न के नीचे या उपर **‘‘भाषा विज्ञान एवं तकनीकि सम्मत’’** पूरक चिह्न देकर पढ़ने एवं लिखने के तरीके को पुस्तक में अपनाया गया है, जैसा कि उर्दू भाषा के ध्वनियों को दिखलाने के लिए देवनागरी अक्षर के नीचे विन्दु देने की मान्यता है । जैसे – क़, ख़, ग़, ब़, फ़, ज़, व़, श्र आदि।

कुँडुख़ भाषा के ध्वनियों को देवनागरी लिपि में दिखलाने के लिए पूरक चिह्नों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है :–

(क) दिगहा सरह (Long Phone) को दिखलाने के लिए **दिगहा ए** एवं **दिगहा ओ** ध्वनि को क्रम में एः तथा ओः की तरह लिखकर पढ़ा एवं समझा गया है। फॉदर कामिल बुल्के की पुस्तक ‘‘अंग्रेजी–हिन्दी षब्दकोष’’ में अक्षर के बाद ‘ **:** ’ (कॉलन) चिह्न देकर दिगहा सरह ¼Long Phone½ को दिखलाने के लिए व्यवहार किया गया है। इस पद्धति को हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ0 दिनेष्वर प्रसाद द्वारा भी समर्थन किया गया है। जैसे – कोंःड़ा–कोंःड़ा, मोःड़ा, ओःड़ा, एःड़ा, तेःला, मोःख़ो आदि।

(ख) हेचका हरह (Glotal stop) को दिखलाने के लिए **‘ अ् ’** चिह्न का व्यवहार किया गया है। जैसे – रअ्ना, बअ्ना, चिअ्ना, नेअ्ना, खेअ्ना, होअ्ना, चोअ्ना आदि। देवनागरी लिपि में लिखते समय देवनागरी लिपि के आधार पर पूरक चिह्न हो।

¼x½ कुँडुख़ भाषा की उच्चारण विषेषता को दिखलाने के लिए घेतला चिह्न (**’**) यानि षब्दखण्ड सूचक चिह्न दिया गया है। जैसे – बरई – बर’ई, कमई – कम’ई इत्यादि।

¼?k½ कुँडुख़ भाषा के षब्दों को, ‘रोमन लिपि’ में लिप्यन्तरण हेतु भाषाविद् स्व0 डॉ0 फ्रांसिस एक्का के 6 (six) vowel concept के सिद्धांत को स्वीकारा गया है, जो व्यवहार की दृष्टि से

सर्वोत्तम है। इस सिद्धांत के अनुसार छठवाँ vowel के रूप में a के उपर पड़ी लकीर दिया गया है। जैसे :– जैसे – i, e, u, o, a, ā यथा अ = a, आ = ā, अँ = ã, आँ = ā̃ है। 16. कुछ उर्दू , अरबी, फारसी, अंगरेजी, संस्कृत आदि ध्वनियाँ हैं, जिनका उच्चारण सीखना चाहिए, जिससे दूसरी भाषाओं को भी सही–सही बोला एवं लिखा जा सकता है। उन ध्वनियों को निम्न प्रकार से लिखा जाता है :– फ़ = [illegible] / ब़ = [illegible] / ज़ = [illegible] / व़ = [illegible] / क़ = [illegible] / ग़ = [illegible] / ष् = [illegible] / ष् = [illegible] / त्र् = [illegible] / श्र् = [illegible] / द्र = [illegible] / कृष्ण = [illegible] / पर्व = [illegible] आदि।

अपवाद :– लिखना एवं पढ़ना अभ्यास की चीज है। किसी लेख को कई तरह से पढ़ा जा सकता है, किन्तु व्यवहार में जो प्रचलन में सरल हो, उसका अनुषरण करना चाहिए जैसे – अँटना = [illegible], काँटा = [illegible], रँड़ी = [illegible] आदि।

– डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'

तोलोंग सिकि के विकास के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ

वर्ष – 1989

जिस समय डॉ0 नारायण उराँव, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास कर इन्टर्न थे, उस समय उन्होंने आदिवासी समाज के कई सामयिक प्रष्नों के प्रत्युत्तर में एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है – **सरना समाज और उसका अस्तित्व**। (इस पुस्तक का लेखन कार्य मई 1989 ई0 में पूरा हुआ और इस कार्य के दौरान ही नई लिपि की आवश्यकता एवं उपयोगिता महशूस हुई)। इस पुस्तक को लिखते समय मन में कई प्रष्न उठे –

1. आदिवासियों को कमजोर और छोटी जाति का, क्यों समझा जाता हैं ?

2. ऊँची जाति कहलाने वाले लोग कौन हैं, उनकी पहचान का आधार क्या है ?

3. आदिवासी लोग, मानसिक कुण्ठा का शिकार क्यों हो जाते हैं ?

इन ग्रंथियों को दूर करने के लिए यह जानना आवष्यक था कि आदिवासियों को छोटा समझने वाले लोग कौन हैं और उनकी पहचान क्या है ? कहीं, यह सामंतवादी ताकत का असर तो नहीं ? दूसरी ओर यह तथ्य है कि आदिवासी समाज के पास अभी भी बहुत सारे ज्ञान भण्डार हैं, जिसे पूरी दुनियाँ को बतलाया नहीं जा सका है। जिस दिन इस ज्ञान उर्जा को संचित एवं विकसित कर विकसित समाज के समक्ष रखा जाएगा, उसी दिन यह हीन ग्रंथि हम सभी से दूर होगी।)

इस उधेड़बुन में अस्पताल में कार्य करते हुए उन्हें दो चीजें दिखलाई पड़ीं –

1. माला डी – गर्भ निरोधक गोली की पर्ची।
2. 100 रूपया का नोट।

(इसमें कई लिपियों में एक ही नाम को अलग–अलग तरीके से लिखा हुआ था। इसे देखकर उनका ह्रदय रोमांचित हो उठा और सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे आदिवासी भाषा एवं सांस्कृतिक धरोहर को बचाने की कड़ी की माला में एक फूल पिरोने का कार्य आरंभ किया। ईष्वरीय प्रेरणा से उनको आभास हुआ कि यदि आदिवासियों की भाषा की भी अपनी लिपि होती तो इन पर्चियों में आदिवासियों की भाषा भी दर्ज होती।)

वर्ष – 1990

यह वर्ष उनके जीवन का चुनौती भरा वर्ष था। इस वर्ष उन्हें तीन एस. (Three S = S - Subject, S - Service, S - Shadi) का चुनाव करना था। इसी बीच उन्होंने तय किया कि वे राज्य स्वास्थ्य सेवा में ही अपना भविष्य सवाँरेंगे और अपने जरूरत–मंद भाई–बहनों की सेवा करेंगे। इस

लगन के साथ वे 06 नवम्बर 1990 को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर योगदान कर राज्य सरकार की स्वास्थ्य सेवा में कार्यारंभ किया।

वर्ष – 1991

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर कार्य करते हुए – *हिन्दी दैनिक – 'हिन्दुस्तान', दिनांक 13 अगस्त 1991 का अवलोकन हुआ .....**मुण्डा संयुक्त राष्ट्र पहुंचे** – राँची विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व झारखण्ड आन्दोलन के नेता डॉ0 रामदयाल मुण्डा ने अब आदिवासियों के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा खटखटाया है। दूसरी तरफ भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ में यह कहा कि उसके यहां **आदिवासी** नामक कोई चीज नहीं है। जेनेवा में आदिवासियों के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में भाग लेकर वापस लौटने के बाद डॉ0 मुण्डा ने यह जानकारी दी। यह समाचार डॉ0 उराँव के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी क्रम में उनके मन में तरह–तरह के प्रश्न उठने लगे, जिसका उत्तर ढूँढ़ने हेतु वे आगे बढ़ते गए और रास्ता निकलता गया।

साभार – सरना फूल, सरहुल विषेषांक, प्रकाषन – सरना नवयुवक संघ, रांची, 25 मार्च 1993 ई0।

1. प्रष्न – भारत सरकार की नजर में अगर हम आदिवासी नहीं हैं तो क्या हैं ??? उत्तर मिला – नहीं। 2. क्या, हमारे पूर्वज आर्य हैं ? उत्तर मिला – नहीं। 3. क्या, हम कुँड़ुख़ भाषा, आर्य भाषा परिवार की है ? उत्तर मिला – नहीं। 4. क्या, आदिवासी हिन्दु (धर्म के अर्थ में) हैं ? उत्तर मिला – नहीं। 5. हमारी भाषा षूद्र है ? उत्तर मिला – नहीं। 6. भारतीय संविधान (कुँड़ुख़), कौन सी भाषा परिवार की है ? उत्तर – द्रविड़ भाषा परिवार। 7. दुनियाँ हमें किन–किन में हमारी पहचान क्या है ? उत्तर – अनुसूचित जनजाति। नामों से जानती है ? उत्तर – Tribe, Indigenous.

(Tribe एवं Indigenous का हिन्दी अनुवाद भी उनके हृदय को स्पर्ष नहीं कर पाया और वे अपनी पहचान ढूँढ़ने आगे बढ़े। उन्हें अपनी अन्तर्रात्मा से उत्तर मिला, अपनी भाषा–संस्कृति को दुनियाँ के सामने स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ो और वे आगे बढ़ते गए।

वर्ष – 1992

I – दिनांक 12 मई 1992 को करमटोली, राँची निवासी श्री राजू उराँव एवं श्रीमती सीता टोप्पो की चौथी पुत्री, सुश्री ज्योति टोप्पो (व्याख्याता, संस्कृत, गॉस्सनर कॉलेज, राँची) के साथ विवाह कर, पारिवारिक बंधन में बंधे।

II – अखिल भारतीय कुँड़ुख़ कत्थ जतरा, गुमला, दिनांक 17–18 अक्टूबर 1992 में प्रो0 बेर्नाड मिंज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस जतरा में तीन लिपियों के बारे में बातें हुईं –

1. श्री सामुएल रंका – 1937 ई0 से षुरूआत – कुँड़ख़ लिपि।
2. फादर बेन्जामिन कुजुर – कुँड़ख़ लिपि।
3. डॉ0 अनन्ती जेबा सिंह – 1991 ई0 – बराती लिपि।

इस जतरा में हुए कार्यवाही का संकलन, सरना फूल, पत्रिका के सरहुल विषेषांक के हलचल षीर्षक में प्रकाषित है, जिसमें उल्लिखित मुख्य बातें इस प्रकार हैं –

1. **प्रो0 हरी उराँव** ने अबतक कुँड़ुख भाषा में उपलब्ध समस्त पुस्तकों, लेखकों की विस्तार से चर्चा की।
2. **डॉ0 बिशप निर्मल मिंज** ने डॉ0 अनन्ती जेबा सिंह की बराती लिपि की विस्तार से चर्चा

की और बताया कि इस लिपि को कम्प्यूटर ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त बतलाया है।
3. **श्री महादेव टोप्पो** ने प्रतिनिधियों से कहा कि वे विभिन्न लिपियों को जाने, समझें जरूर लेकिन जब भी लिपि के चुनाव की बात आये, सर्वसम्मति से किसी एक को ही स्वीकार करें।
4. **श्री उपेन्द्र नारायण उराँव** ने लिपि समस्या पर बोलते हुए ऐसी लिपि की खोज पर बल दिया जो अधिक वैज्ञानिक, सर्वग्राह्य एवं सर्वमान्य हो। इसके लिए उन्होंने देवनागरी लिपि को काफी हद तक उपयोगी बतलाया।

साभार – सरना फूल, सरहुल विषेषांक, प्रकाषन – सरना नवयुवक संघ, राँची, 25 मार्च 1993 ई0। शीर्षक : हलचल।

III – कुँड़ुख़ कत्थ जतरा, गुमला में लिपि के अग्रेतर विकास हेतु चयनित बराती लिपि के अध्ययन के बाद वांछित लिपि के विकास के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए ऑल झारखण्ड स्टूडेन्टस यूनियन (आजसू) के वरीय नेताओं यथा **श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की, डॉ0 देवषरण भगत, प्रो0 प्रवीण उराँव, षहीद स्व0 सुदर्षन भगत** आदि द्वारा **नई लिपि** के विकास संबंधी कार्य के लिए डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' को उत्प्रेरित किया गया।

नई लिपि के लिए समाज की उत्कंठा का उदेष्य –

प्रष्न – यदि आने वाले समय में झारखण्ड अलग प्रांत होता है तो वही पुराना सिस्टम रहेगा यानि मंत्री से संतरी तक तथा सचिवालय से निदेषालय तक पहले वाला ही सिस्टम रहेगा। ऐसे में हमारे समाज को क्या मिलेगा ? तब, यह आन्दोलन क्यों और किसके लिए ?
उत्तर – आदिवासी समाज के पास उसकी अपनी भाषा और संस्कृति है। यदि आन्दोलन के माध्यम से इसे बचा पाने में सफलता मिलती है तो हम सब की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जाएगी। इसके लिए हमें अपनी भाषा को बचाने के उपायों पर कार्य करना होगा। भाषा को बचाने के लिए उसे नेत्र ग्राह्य बनाकर, वर्तमान स्कूल व्यवस्था अर्थात शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाना आवश्यक है, तभी भाषा बचेगी। जब भाषा बचेगी तो संस्कृति अपने आप बच जाएगी।
प्रष्न – कुछ लोगों का कहना है – यूरोपीय देशों में अधिकाधिक देशों की भाषा की लिपि, रोमन लिपि है, अतएव भारत में, नई लिपि के स्थान पर, देवनागरी लिपि, क्यों नहीं ?
उत्तर – इस प्रश्न के संबंध में डॉ0 रामदयाल मुण्डा का मानना था – यूरोप के अधिकाधिक देशों में एक देश, एक भाषा, एक लिपि जैसी स्थिति है। सभी भाषा की लिपि रोमन लिपि है, ऐसी बात नहीं है। भारतीय संविधान ने हमें अपनी भाषा, सम्यता–संस्कृति, लिपि को अक्षुण रखने का अधिकार दिया है तथा एक देश, अनेक भाषा, अनेक लिपि संवैधानिक तरीके से अक्षुण है। ऐसे में किसी दूसरे सम्यता–संस्कृति के माध्यम से अपनी भाषा, सम्यता–संस्कृति को अक्षुण नहीं रखा जा सकता है। इसलिए वर्तमान में – रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंगरेजी को अपनाते हुए, एक तीसरी भाषा यथा अपनी मातृभाषा एवं लिपि की साधना करें।

–: लिपि चिह्न का आधार :–

डण्डा कट्टना पूजा अनुष्ठान एवं अनुष्ठान चिह्न

कोंहापाःही अनुष्ठान एवं अनुष्ठान चिह्न

परम्परागत तोलोंग पोशाक पहनकर नृत्य करते हुए आदिवासी युवक

III – **श्री भूनेष्वर उराँव,** अपने पुत्र **डॉ0 नारायण उराँव** को कागज–कलम में गोल–मटोल एवं टेढ़ी–मेढ़ी आकृति खींचते देखकर बोले – बेटा, एन्देर ननाा लगदय ? ख़ने तंगदस बाःचस – कुँडुख़ कत्था गे लिपि गढ़आ लगदन। तंगदस गही चिहुँटन एःरर तम्मबस मेंज्जस – इबड़न ने बुझुरओ ? तम्मबस गही कत्थन मेनर तंगदस किरताचस – नीन टूड़ा–बचआ एकसन सिखिरकय। ख़ने बबस गच्छरस – स्कूल नु सिखिरकन। तम्मबस गही किरताचकन मेनर तंगदस बिड़दाचस – ई लिपि हुँ स्कूल नु पढ़ाई मनो होले ओरमर सिखिरओर। कत्थन बुझुर'अर बबस आःनियस – एन्ने मनी, होले कला दव कुना ननाा।

डॉ0 नारायण उराँव के पिता श्रद्धेय भूनेश्वर उराँव

IV – **श्रीमती फूलमनी उराँव,** अपने पुत्र **डॉ0 नारायण उराँव** को अपने पिताजी के साथ बाद–विवद में उलझते देख सामने आयीं और बोलीं – *निंग्गन नेखअय ती हुँ एलेचना मल्ला। निम्बस सम्भड़आ पोल्लोस, होले एःन एःरोन! खोंड़हा गही दव नलख खतरी नीन दव नलखन दव कुना नना। धरमे अरा धरमी सवंग निंग्गन डहरे एःदओ।* अपनी माँ के इस बात से उनको बल मिला और वे इस कार्य में आगे बढ़ते गये। **डॉ0 उराँव** बतलाते हैं कि उनके साधारण खेतिहर पिताजी मेडिकल कॉलेज में एडमिशन के लिए मना कर दिये, क्योंकि मेडिकल का खर्चीला पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं कर पाते। इस पर, उनकी माँ ने कहा – *नीन कला अउर नाःमे लिखतआ, एःन झरा बीःसा–बीःसा निंग्गन पढ़तोओन।* माँ ने अपना वचन पूरा किया और बेटे को डाक्टर बनाया।

डॉ0 नारायण उराँव की माँ, श्रीमती फूलमनी उराँव

V – डॉ0 उराँव जब शोध कार्य कर रहे थे, तब उन्हें राँची में पत्राचार के लिए एक ठिकाना तलाश करना था, जो 1992–93 के आसपास, आंदोलनकारियों के लिये कठिन चुनौती था। **श्रीमती सीता टोप्पो,** पति : श्री राजू उराँव, करमटोली, राँची, अपने दामाद के संकट को समझी और पत्राचार के लिए अपने घर का पता देकर, कार्य को आगे बढ़ाने में ढाढ़स बंधायी।

डॉ0 नारायण उराँव की सास माँ, श्रीमती सीता टोप्पो

वर्ष – 1993

1. **नई लिपि** के विकास की परिकल्पना का साकार रूप आरंभ एवं इसके प्रचार हेतु Tribal Research Analysis Communication & Education (TRACE) नामक संस्था का गठन हुआ। इस संस्था का सम्मानित अध्यक्ष **इंजिनियर ए0 एम0 खलखो,** करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची तथा सम्मानित निदेषक **डॉ0 नारायण उराँव** बने।

ई0 ए0 एम0 खलखो

2. इस लिपि का नाम **तोलोंग सिकि** चुने जाने एवं इसे स्थापित किये जाने में **डॉ0 नारायण उराँव** की परिकल्पना को **श्रद्धेय डॉ0 बहुरा एक्का, श्रद्धेय डॉ0 रामदयाल मुण्डा** एवं **श्रद्धेय डॉ0 बासुदेव बेसरा** ने अपने उत्कृष्ट विचारों का बहुमुल्य योगदान दिया।

3. दिनांक 24 सितम्बर 1993 ई0 को **सरना नवयुवक संघ** द्वारा आयोजित, करम पूर्व संध्या, के अवसर पर पहली बार जनमानस के अवलोकन हेतु तोलोंग सिकि को राँची कॉलेज, राँची के सभागार में रखा गया।

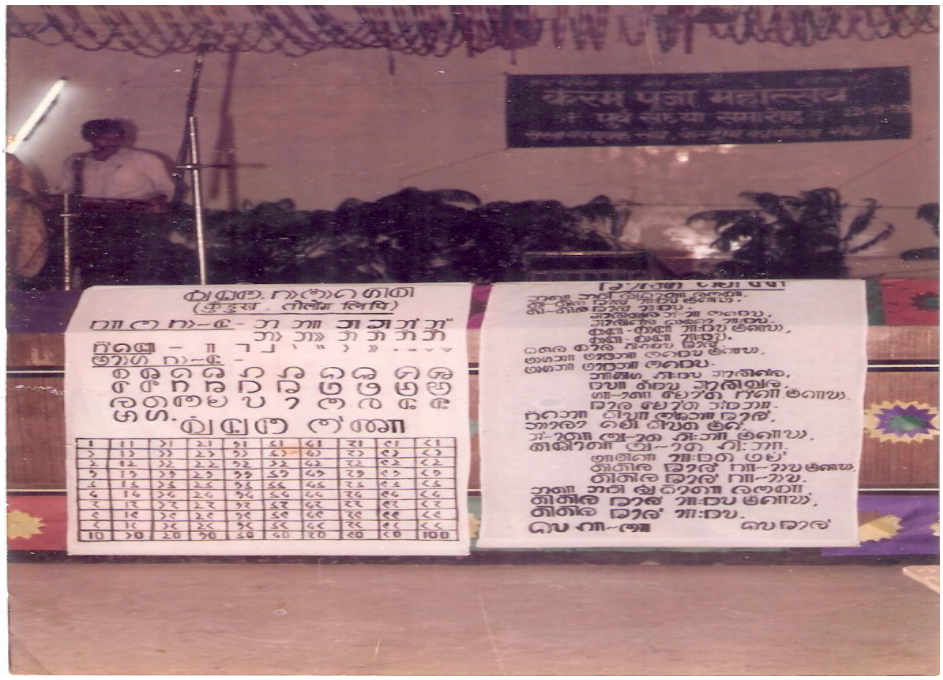

4. हिन्दी दैनिक – **'आज'**, दिनांक 07 अक्टुबर 1993 ई0 को *तोलोंग सिकि* के विषय में समाचार पत्र में पहली बार छपा।

उरांव जातिकी कुँड़ुख़ लिपिका अविष्कार

छः महीनेके अथक प्रयासका नतीजा

रांची। रांची स्थित 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिन कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नामक संस्थानने बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेशके पठारी क्षेत्रोंके लगभग बीस लाख उरांव जातिके लोगों द्वारा बोली जानेवाली 'कुँड़ुख़', भाषाकी लिपिका आविष्कार किया है।

लगभग छः महीनेके अथक प्रयासके बाद 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नाम संस्थानने उरांव जाति द्वारा बोली जानेवाली कुँड़ुख़ भाषाकी 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार किया है। तोलोंग लिपिका सार्वजनिक रूपसे पहली बार प्रदर्शन गत २५ सितम्बरको करम पर्वकी पूर्व संध्यापर रांची कालेजके सभागारमें आयोजित कार्यक्रमके अवसरपर किया गया।

संस्थानके निदेशक डाक्टर नारायण उरांवने एक भेंटवार्ताके दौरान 'तोलोंग' लिपिकी विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'तोलोंग' एक विशेष प्रकारकी पोशाक है जो उरांव जातिके लोगोंकी पहचान है। तोलोंग दो प्रकारका होता है। पहला सरंगाधारी तोलोंग-जिसमें आगेसे पीछे तक सीधा कपड़ा झुला हुआ रहता है। दूसरे प्रकारके तोलोंगमें बारह हाथके कपड़ेको लपेटकर पहना जाता है इसे बारहों तोलोंग कहा जाता है। इसी बारहों तोलोंगको आधार मानकर कुड़ुख भाषाकी लिपिकी रचना की गयी है। कुँड़ुख़ भाषामें लिपिको 'सिकि' कहा जाता है।

'कुँड़ुख़' भाषाके लिए अतगसे विकसित इस लिपिकी आवश्यकता बताते हुए डाक्टर नारायण उरांवने कहा कि वर्तमान समयमें लिपिके अभावमें कुँड़ुख़ भाषी लोग भी देवनागरीमें ही कुँड़ुख़ लिखते हैं। जिससे देवनागरीमें कुँड़ुख़ भाषा लिखनेमें कठिनाई होती है तथा भाषायी विसंगति होती है। क्योंकि देवनागरी लिपिमें 'कुँड़ुख़' भाषामें उच्चरित सभी ध्वनि चिन्ह नहीं हैं।

डाक्टर उरांवने बताया कि 'कुँड़ुख़' भाषा द्रविड़ भाषा परिवारका सदस्य है। इसलिए 'तोलोंग' लिपिकी रचनामें यह विशेष ध्यान दिया गया है कि यह द्रविड़ भाषाकी लिपियोंकी श्रेणीमें ही रह सके। इस लिपिमें ४४ वर्ण हैं तथा उनके अलग ध्वनि चिन्ह हैं।

डाक्टर नारायण उरांव जो पेशेसे एक चिकित्सक हैं, ने बताया कि वे तथा उनके सहयोगियोंने लगभग छः महीनेके अथक प्रयासके बाद इस लिपिका आविष्कार किया है। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषाके विकासके लिए साहित्यका विकास जरूरी है तथा साहित्यके विकासके लिए लिपिका होना आवश्यक है। इसलिए किसी भी भाषा साहित्यको अक्षुण बनाये रखनेके लिए लिपिका होना आवश्यक है।

उल्लेखनीय है कि बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेशके सामावर्ती पठारी क्षेत्रोंमें रहनेवाले लगभग बीस लाख उरांव जातिके आदिवासियोंकी भाषा 'कुँड़ुख़' है।

ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन नामक संस्थानके अध्यक्ष श्री ए. एम. खालखो हैं तथा तोलोंग लिपिके विकासमें विवेकानंद भगत, बहुरा उरांव, राजेश कुजूर, नारायण भगत, लौहर मैन उरांव तथा गंगा उरांव जैसे भाषा विशेषज्ञोंने अहम भूमिका निभायी है।

डाक्टर नारायण उरांवने बताया कि फिलहाल तोलोंग लिपिको कुँड़ुख़ भाषा भाषी लोगोंके बीच प्रचारित प्रसारित किया जायेगा तथा उसे अपनानेपर बल दिया जायेगा। बादमें इस लिपिको अधिकृत मान्यता दिलानेकी दर्खास्त की जायेगी।

आज (राँची) - 7 अक्टुबर 1993

5. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा डण्डा कट्टना नेग चिनहा के आधार पर 22 Segment Display System (Tolong Siki Display System) का निर्माण किया गया। इसे Multilindual Display System भी कहा जाता है। तोलोङ सिकि का लिपि चिह्न इसी सिस्टम के दायरे में है।

तोलोङ सिकि (लिपि) की उत्प्रेरक संस्था

1. **डॉ0 नारायण उराँव** द्वारा लिखित प्राथमिक पुस्तक **कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न,** उषा इन्डस्ट्रीज, भागलपुर (बिहार) से माह जनवरी 1994 में प्रकाषित हुआ। पूर्व में 1989 से जनवरी 1994 तक हस्त लिखित रूप का छः बार संशोधन हो चुका था। वर्णमाला तेयार करने में कई चुनौतियाँ आयी – 1. वर्णमाला के लिए कौन–कौन सी ध्वनियों के लिए चिह्न रखा जाय। 2. मूल ध्वनियों के लिए चिह्नों या आकृतियों का चुनाव कैसे किया जाय। इस उपापोह में देवनागरी की लेखन पद्धति के अनुसार वर्णों को सजाया गया, किन्तु ङ, ञ, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ऋ, ऐ, औ आदि संस्कृत–हिन्दी के ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न नहीं रखा गया, क्योंकि इन ध्वनियों का व्यवहार कुँड़ुख़ भाषा में नही होता है। ध्वनि चिह्न के लिए समाज के अन्दर दिनचर्या में किये जाने वाले किया कलापों को आधार मानकर रू निर्धारण किया गया।

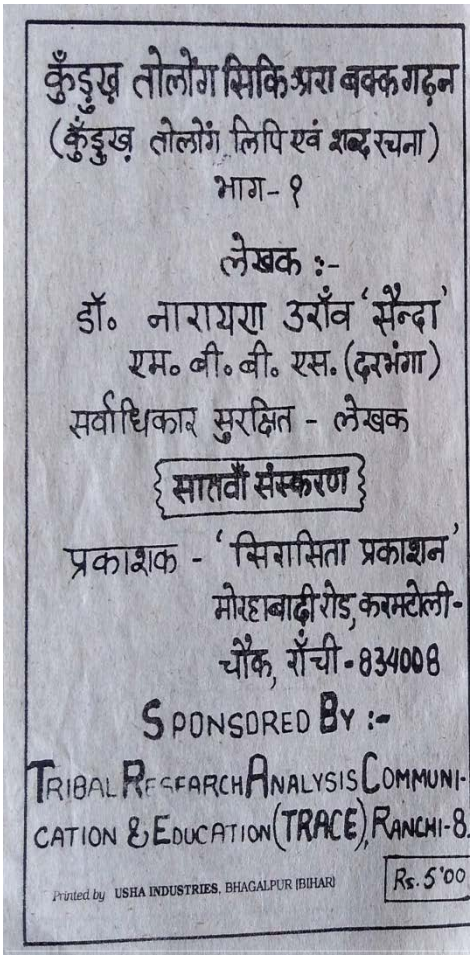

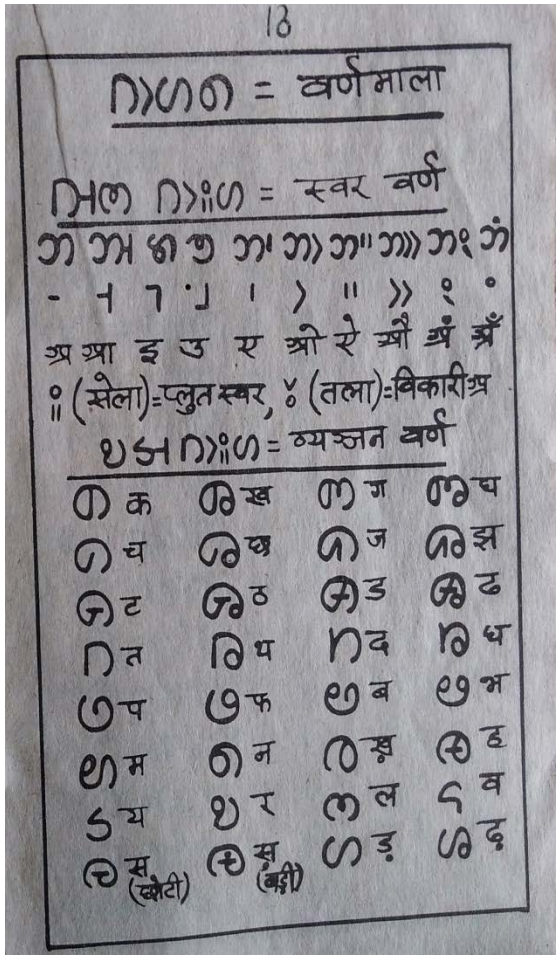

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न
(कुँड़ुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना)
भाग- १
लेखक :-
डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा'
एम॰ बी॰ बी॰ एस॰ (दरभंगा)
सर्वाधिकार सुरक्षित - लेखक
सातवाँ संस्करण
प्रकाशक - 'सिरासिता प्रकाशन'
मोरहाबादी रोड, करमटोली-
चौक, राँची - 834008
SPONSORED BY :-
TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION (TRACE), RANCHI-8.
Printed by USHA INDUSTRIES, BHAGALPUR (BIHAR)
Rs. 5'00

2. दिनांक 18 – 25 फरवरी 1994 तक आयोजित हिजला मेला, दुमका में 22 Segment Display System (Tolong Siki Display System) एवं **तोलोंग सिकि लिपि** को प्रदर्षित किया गया। जहाँ बहुत से शिक्षाविद, पदाधिकारी एवं पत्रकारों ने कई प्रश्न पूछे।

18–25 फरवरी 1994, हिजला मेला दुमका में तोलोङ सिकि को प्रदर्शित करते हुए अन्वेषक डॉ0 नारायण उरांव (बायें) एवम् तकनीकि सहायक श्री रमेश कुमार साह (दायें)

4. सरना नवयुवक संघ, राँची के सौजन्य से आयोजित, सरहूल पूर्व संध्या, 13 अप्रैल 1994 ई0 को **डॉ0 रामदयाल मुण्डा** द्वारा **कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न** को लोकार्पित किया गया। **डॉ0 मुण्डा जी** के साथ डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।

रांची एक्सप्रेस वृहस्पतिवार, 14 अप्रैल 1994

सरहुल पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

'सरहुल आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत'

(कार्यालय संवाददाता)

रांची, 13 अप्रैल : सरना नवयुवक संघ की केन्द्रीय समिति के तत्वावधान में आज सरहुल पूर्व संध्या पर रांची कालेज सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पूर्व रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय भाषा विभाग के अध्यक्ष डा. रामदयाल मुण्डा ने सरहुल पर्व के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष की महत्ता की चर्चा करते हुए कहा कि यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दौर है। ये पर्व- त्यौहार इसी परंपरा की छोटी इकाइयां हैं। डा. मुण्डा ने कहा कि आदिवासी समाज को यह सांस्कृतिक परंपरा विरासत में मिली है, जिसका निर्वाह पूर्ण उत्साह एवं उल्लास के साथ किया जाना है। उन्होंने सरहुल जुलूस में शामिल होने वाले लोगों का आह्वान किया कि वे इसकी शालीनता को बनाए रखने में मदद करें। डा. मुण्डा ने इस अवसर पर एक आकर्षक नागपुरी गीत का मुखड़ा सुनाया, 'तेतिइर पाइत हिलेला, तेतइर पाइत डोलेला मुसा झुमइर खेलयना, बिलई कर दांइत हिलेला।'

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य डा. करमा उरांव ने कहा है कि पर्व- त्यौहार प्रकृति की पूजा है, जो हमें पूर्वजों से विरासत में मिली है। डा. उरांव ने कहा इन पर्व- त्यौहारों के माध्यम से पूर्वजों की संस्कृति और संस्कार को हम याद करते हैं। उन्होंने कहा कि सरहुल पर्व आदिवासी समुदाय का सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पराकाष्ठा का स्वरुप है। पूर्वजों की दी हुई प्रकृतिक सम्पदा को पाकर आदिवासी समुदाय के लोग अपनी खुशी को व्यक्त करते हैं। डा. उरांव ने आदिवासी समाज से प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखने का आह्वान किया।

जनजातीय शोध संस्थान के निदेशक डा. प्रकाश उरांव ने आदिवासी समुदाय की धार्मिक परंपरा एवं सांस्कृतिक धरोहर की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज के आधुनिक युग में इसे बिसरने के बजाय संजोकर रखने की जरुरत है। उन्होंने कहा कि सरकार एक ओर आदिवासियों के कल्याण के लिए घोषणा करती है, दूसरी ओर उनकी प्रकृतिक सम्पदाओं के विनाश में भी लगी हुई है। आज के नवयुवकों को प्रकृति की इन्हीं सम्पदाओं, जंगल, पहाड़ की रक्षा करनी है।

कार्यक्रम में प्रो. बहुरा एक्का ने भी अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा का आदिवासी धर्म ऐसा है, जिसकी कोई सीमा नहीं है। उन्होंने सरहुल को प्रकृति की पूजा का पर्व बताते हुए इसे परंपरागत तरीके से मनाने का आह्वान किया। इनके अलावा कार्यक्रम में झारखंडी नेता विनोद कुमार भगत एवं प्रमोद भगत ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रारंभ में सरना नवयुवक संघ के अध्यक्ष प्रो हरि उरांव ने आगत अतिथियों का स्वागत किया। संघ के सचिव बिरसा बीरचंद लकड़ा ने संघ का संक्षिप्त परिचय दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुण्डारी एवं कुड़ुख भाषा में प्रार्थना से हुआ। इस अवसर पर डा. रामदयाल मुण्डा ने डा. नारायण उरांव सैन्दा द्वारा रचित कुड़ुख, तोलों लिपि एवं शब्द रचना की एक पुस्तक का लोकार्पण किया। डा. मुण्डा ने सिरासि प्रकाशन की एक पुस्तक 'ब्रास बुलेटिन' का विमोचन किया।

विभिन्न क्षेत्रों से आये आदिवासी युवक युवतियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसमें युवक- युवतियों ने उरांव नृत्य, मुण्डारी गीत एवं नृत्य, सरहुल गीत, जादुर गी

5. मासिक पत्रिका ***झारखण्ड ज्योति,*** *15* मई 1994 ई0 अंक में *तोलोंग सिकि* के विषय में डॉ0 नारायण उराँव का भेंट वार्ता छपी।

कुँडुख भाषा के तोलोंग लिपि के अविष्कारक
— डॉ. नारायण उराँव

झारखंड "जनसत्ता" एक लिपि कई प्रश्न 23मई1997 वासवी

झारखंड में इन दिनों आदिवासी भाषा समूह की लिपियों पर एक नई बहस शुरू हुई है। कुड़ुख, मुंडारी, खड़िया, संताली, हो और पहाड़िया जनजातीय समूह की भाषाओं के साहित्य के विकास के लिए 'तोलोंग सिकि' नामक नई लिपि का आविष्कार किए जाने से लिपियों का विवाद गहरा गया है। एक सवाल तोलोंग लिपि की वैज्ञानिकता और उसके अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुरूप होने या न होने का भी है। फिर इस जनजातीय समूह की पूर्व में ईजाद की गई लिपियों के सामने भी यही सवाल खड़ा हो चुका है।

लगभग एक करोड़ संताली भाषी अपनी ओलचिकी लिपि की सरकारी मान्यता के लिए करीब पच्चीस सालों से संघर्षरत हैं। लेकिन संताली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की तीन दशक पुरानी मांग अब तक बाट जोह रही है। पेशे से चिकित्सक डा. नारायण उरांव ने उरांव के कुड़ुख, मुंडारी, खड़िया, संताली, हो और पहाड़िया जनजातीय समूह के लिए एक ही लिपि तोलोंग सिकि का आविष्कार किया है। 'प्राथिमस आफ तोलोंग सिकि' नामक पुस्तक की रचना उन्होंने की है। पांच मई को इसके विमोचन समारोह में जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्राध्यापकों ने तोलोंग लिपि को लेकर कई सवाल उठाए।

रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय व क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्रोफेसर बीपी केशरी ने लिपि के सवाल पर स्पष्ट राजनैतिक नजरिया रखते हुए कहा कि पूर्व में जिन लिपियों का आविष्कार हुआ है उनकी परीक्षा किए बगैर आगे बात नहीं बढ़ाई जा सकती है। संताली भाषा की लिपि ओलचिकी, उरांव भाषा की बरंग चिटि की कमियों को सामने लाए और नई लिपि बनाने से समस्या पैदा होगी। उन्होंने देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि बताते हुए इसे ही अपनाने पर बल दिया। उन्होंने इस मसले को झारखंड में पुनरुत्थानवाद की हवा से भी जोड़ा और कहा कि जरूरत है आदिवासी कबीलाई दायरे से निकल कर राष्ट्रीयता से जुड़ें। संताल मुंडा, उरांव अपने-अपने बारे में सोच रहे हैं, जबकि एकता कायम करने की जरूरत है। पूंजीवाद का दबाव बढ़ा है और नई आर्थिक नीति से जो चौतरफा संकट बढ़ा है, उससे आदिवासी समाज के सामने चुनौतियां गहरा गई हैं। आदिवासी समाज के साहित्य को दूसरों तक पहुंचाने की आवश्यकता है। ऐसे में प्रचलित और सर्वग्राह्य लिपि में ही जनजातीय भाषा साहित्य के विकास और उसके अनुवाद की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जब हमारा साहित्य सामने आएगा तभी दुनिया समझेगी कि आदिवासियों की चिंतनधारा है, इनका साहित्य भी है, इनकी अलग दुनिया भी है।

मुख्य वक्ता के रूप में रांची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और झारखंडी पीपुल्स पार्टी के प्रमुख अध्यक्ष रामदयाल मुंडा ने बताया कि संताली भाषा की लिपि ओलचिकी के आविष्कार के समय ही राष्ट्रीय स्तर पर एक कमेटी बनाने की बात हुई थी, जो लिपि की वैज्ञानिकता को परख कर जनजातीय समूह की भाषाओं के लिए सुगम व सरल लिपि का निर्माण कर सके। इसके बाद सरकार से मान्यता के लिए दौड़ लगाए। लेकिन यह मामला इसलिए लटका पड़ा है कि झारखंडियों की अपनी राजसत्ता, अपनी सरकार नहीं है, राजसत्ता हमारे हाथ में हो तो अवैज्ञानिक-वैज्ञानिक लिपियों का बहुत विवाद नहीं रह जाएगा और सब स्वीकृत व मान्य होगा। सातं सालों से तो जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं में छपी किताबें गोदामखाने में पड़ी हैं। अपनी हुकूमत होती तो इन किताबों को गरिमा मिलती।

उन्होंने कहा कि पहचान की बात होती है तो भारत के अंदर हम कहां हैं? यह महत्वपूर्ण सवाल है। बहुभाषी, बहुराष्ट्रीय और बहुत से फूलों वाले बगीचे में हमारा गुलाबची, गेंदा और कोयनार कहां है? उन्होंने बताया कि कोल्हान के इलाके में तो हो भाषा के लिए नौ लिपियों का प्रस्ताव है, हर पंचायत में अपनी-अपनी लिपि लिए लोग बैठे हैं। इन परिस्थितिओं में विषय वस्तु बड़ी चीज है। साहित्य रचना वैकल्पिक ध्येय होना चाहिए। भाषा इस्तेमाल से ही आगे बढ़ती है। इटली से स्पेन और स्पेन से रूस तक एक ही लिपि है, इससे उनको कोई खतरा नहीं है, क्योंकि उनकी पहचान स्थापित हो चुकी है। नेपाली, सिंधी, कोंकणी, मणिपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा गया है। इन भाषाओं के लोगों की संख्या संताली भाषियों से कम है। लेकिन संताली भाषा को जगह नहीं मिल रही है। उन्होंने कहा कि असम में सत्तर लाख आदिवासी नागपुरी बोलते हैं। लेकिन इस भाषा को कोई सरकारी मान्यता नहीं मिली है। इनकी पहचान धांगर के रूप में है। पूरी बात आकर राजसत्ता में ही रुक जाती है। उर्दू बिहार की दूसरी राजभाषा है। हमें भी ऐसे हालात बनाने होंगे कि लिपि को मान्यता नहीं मिले तो वोट नहीं देंगे।

प्रभात खबर के संपादक हरिवंश ने इस मौके पर भाषाओं को बचाने की बात कही। उन्होंने कहा कि भाषाएं दुनिया से समाप्त हो रही हैं। एक भाषाशास्त्री पीटर ने कहा है कि सौ साल में नब्बे फीसदी भाषाएं समाप्त हो जाएंगी। दुनिया में सोलह हजार भाषाएं बोली जाती थीं, अब छह हजार भाषाएं ही बची रह गई हैं। उन्होंने कहा कि ग्लोबल संस्कृति ने भाषाओं को खत्म करने की बुनियाद डाली है। फ्रांस में भाषा बचाने के लिए सुपर हाईवे बनाने की तैयारी की जा रही है। ऐसा प्रयास हम सब को भी मिलकर करना चाहिए। ग्लोबल दुनिया में अंग्रेजी ताकतवर भाषा बनकर उभरी है। इसका मुकाबला करना है।

तोलोंग सिकि के आविष्कारक नारायण उरांव ने बताया कि तोलोंग आदिवासियों का एक पहनावा है। पुरुष धोती को कई बार लपेटते हैं। इससे जो आकृति बनती है उसे ही लिपि के रेखाचित्र के लिए लिया गया है। खेतों में उभरी आकृतियों को भी शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि अभियंता वासुदेव बेसरा, बहुराय एक्का और उन्होंने इसके लिए परिश्रम किया है। कुड़ुख, संताल, मुंडारी व पहाड़िया जनजातियों में खास बात यह है कि विलक ध्वनि और स्वर का रूप भी समान है। ३६ स्वरों को बारह चिन्हों में उभारा गया है। आदिवासी जीवन में प्रचलित मान्यताओं, परंपराओं और दिनचर्या के अनुष्ठानिक चिन्हों को भी तोलोंग लिपि का आधार माना गया है। जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग के संताली भाषा के प्रोफेसर केसी टुडू ने कहा कि तोलोंग लिपि में संताली भाषा को लिखे जाने में कठिनाई होगी उसका क्या होगा? क्योंकि संताली भाषा के लिए ओलचिकी लिपि है और इस लिपि में पांच सौ से ज्यादा पुस्तकों की रचना की जा चुकी है।

6. हिन्दी दैनिक – 'जनसत्ता', दिनांक 23 मई 1994 ई0 को *एक लिपि कई प्रश्न* विषयक समाचार लेख छपी।

7. हिन्दी दैनिक – 'आज', दिनांक 24 जून 1994 ई0 को **कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग लिपि को कम्प्यूटर पर उतारने की तैयारी** शीर्षक लेख छपी।

आज
24 जून
1994

'आज' (रांची) २४ जून १९९४ (३)

...किया सम्मेलनमें बिहारकी शिक्षा मंत्री उषा श्रीवास्तव सहित भारी संख्यामें चिकित्सक उपस्थित थे।

कुँडुख़ भाषाकी 'तोलोंग' लिपिको कंप्युटरपर उतारनेकी तैयारी

'तोलोंग' लिपिमें पत्राचार तथा पुस्तक रचना आरंभ

तोलोंग लिपिके लिए खोजी गयी '२२ सेगमेंट डिसप्ले सिस्टम'

रांची। उरांव जातिके बीस लाख लोगों द्वारा बोली जानेवाली 'कुँड़ुख़' भाषाके लिए जिस 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार किया गया है उसे 'कंप्यूटराइज्ड' करनेकी तैयारी पूरी हो चुकी है तथा इस 'लिपि' में ही उरांव कथा, कहानियों, साहित्य, परंपरागत गीत, प्रार्थना आदिको लिपि बद्ध करने तथा उसे प्रचारित प्रसारित करनेकी जोरदार तैयारी की जा रही है। इसके अलावा तोलोंग लिपि में ही अभी तक दो पुस्तोंका प्रकाशन भी किया जा चुका है।

उरांव जातिकी कुँड़ुख़ भाषाको लिपिबद्ध करनेकी तैयारीमें पिछले डेढ़ वर्षोंसे जुटे 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस [illegible] कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' (ट्रेस), तोलोंग लिपिके आविष्कारक डाक्टर नारायण उरांव ने बताया कि 'कुँड़ुख़' द्रविड़ समूहकी भाषा है। इसलिए इसके लिए आविष्कार की गयी 'तोलोंग' लिपि भी 'द्रविड़' लिपियोंसे ही मिलती जुलती है। डाक्टर उरांवने स्पष्ट किया कि स्वाभाविक मेल जोलके बावजूद तोलोंग लिपि बिल्कुल ही अलग प्रकृति की है तथा इसका उद्भव बिल्कुल ही उरांव जातिकी मौलिक पहचान से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि उरांव जातिके लोगों द्वारा पहने जानेवाली विशेष पोषाक तोलोंग से इस लिपिका उद्भव हुआ है। उरांव जातिके लोगोंकी मान्यता है कि भगवान महादेव भी तोलोंग ही पहना करते थे। इसी पोषाकको आधार मानकर तोलोंग लिपि का विकास किया गया है।

डाक्टर नारायण उरांवने बताया कि उक्त लिपिको कंप्यूटराइज्ड करनेकी भी सैद्धांतिक तैयारी पूरी कर ली गयी है। इसके लिए [illegible]लवा फारी (डंडा कट्टाना) नामक उरांव जातिके धार्मिक अनुष्ठान चिन्ह को आधार मानकर '२२ सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम' बनाया गया है। इस अनुष्ठान चिन्हमें रेखाओंकी संख्याके बराबर व्यंजन हैं। जबकि पूजा में लगनेवाली सामग्रीके बराबर ही स्वर हैं। उरांव जातिके लोगोंकी मान्यता है कि महादेव पार्वती ने ही 'उरांव' लोगोंको यह धार्मिक अनुष्ठान बताया था।

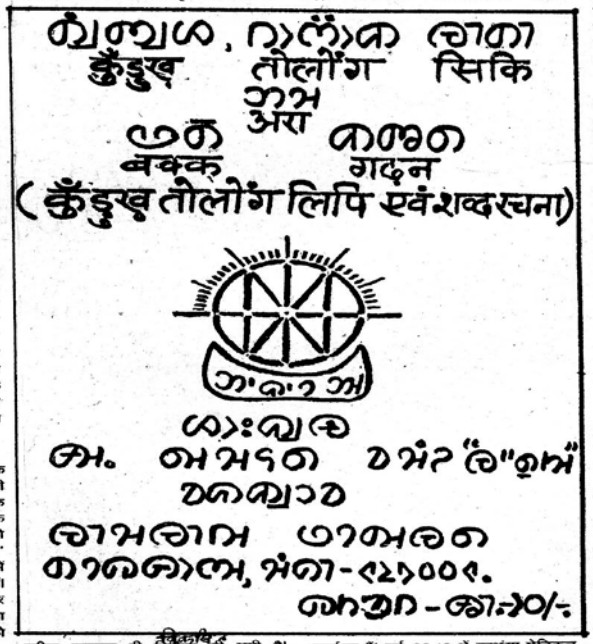

डाक्टर उरांवने बताया कि इस तोलोंग लिपिको बिल्कुल ही भाषा विज्ञानके आधारपर विकसित किया गया है। इसलिए इसे पढ़ने, समझने तथा समझानेमें पूरी सहुलियत होगी। भाषा विज्ञान पर आधारित होनेके बावजूद यह लिपि सीधे-सीधे उरांव जातिके धार्मिक तथा सांस्कृतिक चिन्होंको

प्रतीक मानकर ही विकसित की गयी है। जिससे इस लिपि से उरांव जातिकी मौलिकता परिलक्षित होती है।

गुमला जिलांतर्गत सिसई प्रखंड के साईन्दा गांवके मूल निवासी डाक्टर नारायण उरांव पेशेसे चिकित्सक हैं तथा वे फिलहाल रामगढ़ (दुमका) स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रमें चिकित्सा पदाधिकारीके पदपर कार्यरत हैं। वर्ष १९८९ में दरभंगा मेडिकल कालेजसे उन्होंने एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास की। १९८९ में डाक्टर नारायण उरांवने दरभंगा से ही 'सरना समाज और उसका अस्तित्व' नामक पुस्तक का प्रकाशन कराया।

पिछले डेढ़ वर्षोंसे रांची स्थित 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस [illegible] कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नामक संस्थाके तहत उरांव जाति द्वारा बोली जानेवाली 'कुँड़ुख़' भाषा के लिए 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार करनेमें जुटे हुए हैं।

'तोलोंग' लिपिका आविष्कार करनेके बाद डाक्टर उरांवने तोलोंग लिपिमें ही पुस्तक लिखना तथा पत्राचार आदि भी आरंभ कर दिया है। डाक्टर उरांव द्वारा तोलोंग लिपिमें लिखी गयी 'कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न' (कुँड़ुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना) नामक पुस्तक का गत १५ फरवरी १९९४ को विमोचन किया गया। इसी पुस्तकका द्वितीय संस्करण १२ मई ९४ को प्रकाशित किया गया। इसके अलावा २१ से २८ फरवरी ९४ तक चलनेवाले दुमकाके हिजला मेला में भी डाक्टर उरांव द्वारा रचित तोलोंग लिपि की पुस्तक तथा तोलोंग लिपिकी जानकारियोंकी प्रदर्शनी लगायी गयी।

इसी प्रकार डाक्टर उरांव द्वारा ही लिखी गयी तोलोंग लिपिकी पझरा (झरना) नामक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित हो रही है। यह एक चार पृष्ठकी पत्रिका है जो उरांव जातिकी धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान को उजागर करती है।

ज्ञात हो कि रांची, गुमला लोहरदगा, हजारीबाग, सिंहभूम, साहेबगंज, गोड्डा, पश्चिम चंपारण, पूर्णिया, रोहतास, सिलीगुड़ी, झाड़ग्राम, उड़ीसा, मध्य प्रदेशके सीमावती इलाकों आदिमें रहने वाले लगभग बीस लाख उरांव जाति के लोग 'कुँड़ुख़' भाषा-भाषी हैं। लेकिन इस 'कुँड़ुख़' लिपिके लिए अभी तक कोई विशेष 'लिपि' ज्ञात नहीं है। जिससे कि कुँड़ुख़ भाषा, साहित्यिक रूपसे सही ढंगसे बोली तथा लिखी जा सके। डाक्टर नारायण उरांव पिछले डेढ़ वर्षोंसे इसी प्रयासमें जुटे हुए हैं तथा अब उन्होंने सांस्कृति पहचान चिन्होंके आधारपर खोजी गयी उक्त तोलोंग लिपिको आधुनिकतम 'कंप्यूटर' तक पर खरा उतारनेकी सैद्धांतिक तैयारी पूरी कर ली है।

8. दिनांक 27 जून 1994, दिन सोमवार को अंगरेजी दैनिक Hindutan Times में एक बड़ी ख़बर छपी।

Mahatma Gandhi, Sarojini | 1949: The students of Bihar | Bihar and the

THE HINDUSTAN TIMES — PATNA, MONDAY, JUNE 27, 1994

Now they can write, too

WITH a view to standardising the roughly developed script, Dr Oraon tried to reproduce them on a computer screen. For this, he first drew through computer graphics, a circle, cut across by two diagonal lines to form a "+ (plus) sign within and another two diagonal lines, cutting it in the shape of "X" (multiplication) sign. He also joined the four points in the periphery of the circle where the two diagonals, drawn in the "X" (multiplication) shape, cut the circle.

Dr Narayan Oraon

Thus, in the language of computer software, a 22 segment display system was prepared, one segment having been constituted by the joining of any two points in the circle, or its diagonals, or the points on the periphery from the circle's centre. The glow of the different combinations of the segments of this diagram could clearly reproduce each of the 45 alphabets of the newly developed script. It was akin to the reproduction of the digits from 1 to 10 in a digital clock which has a rectangular diagram, crossed in the middle, with its different segments glowing to reproduce the digits. (Such a computer model is called seven segment display system since all digits are reproduced through the combination of seven segments of this model.

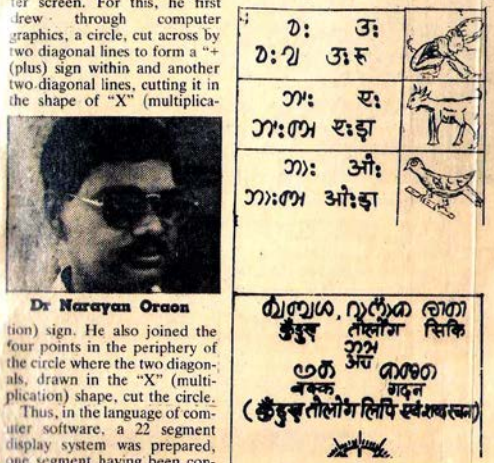

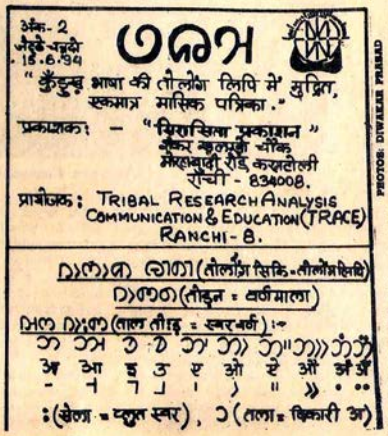

And it was certainly no easy task of developing a computer model for the alphabets of a complex structure, to develop. For it took Dr Oraon six months of continuous labour to develop the model. After having developed the computer model, he, however, feels sure that his newly developed script was truely scientific. It can not only be written and understood easily, but it would not pose problems later in getting displayed through the "neon lights", he says with a jest.

DR Oraon convinced the opinion leaders of the tribal society of the utility of his new find at a function held on the eve of Sarhul (May 13) at the Ranchi College auditorium. On this occasion, the first edition of the magazine brought out by him was released by the former Vice-Chancellor and JPP leader, Dr Ram Dayal Munda. Other experts on tribal matters like Dr Prakash Chan-

The newly-developed script for Kudukh and Paharia languages

वर्ष – 1995

1. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा गढ़न बक्क, पुस्तक के प्रस्तुति को **श्री विवेकानन्द भगत** (पूर्व बैंक पदाधिकारी), लोंडरा, सिसई–भरनो, गुमला द्वारा इस पुस्तिका में प्रस्तुत वर्णमाला को उचित न मानना और गाँव में गाये जाने वाले मौसमी गीतों के माध्यम से विशेष रूप में करम गीत के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारम्परिक तथ्यों को बरकरार रखने एवं आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु, इसे पारम्परिक अवधारणाओं के आधार पर आवश्यक संषोधन किये जाने के अपील के पश्चात, वर्णमाला में आवश्यक सुधार किया गया। जिसके तहत वर्णमाला क्रम – क ख ग घ/च छ ज झ/त थ द ध/ट ठ ड ढ/प फ ब भ/म न ख़ ह/य र ल व/स स़ ड़ ढ़ की तरह के वर्णमाला क्रम में सुधार करते हुए – क ख ग घ ङ/च छ ज झ ञ/ट ठ ड ढ ण/त थ द ध न/प फ ब भ म/य र ल व ञ/स ह ख़ ड़ ढ़ की तरह रखा गया।

2. मासिक पत्रिका, निष्कलंका, अप्रैल 1995 अंक में **तोलोंग सिकि** एवं **बराती लिपि** में तुलनात्मक अध्ययन एवं *बराती लिपि* को कुँड़ुख़ भाषा के लिपि के रूप में **अस्वीकार** किये जाने की अपील। बराती लिपि को अस्वीकार किये जाने का तथ्य है – यह लिपि, देवनागरी, गुजराती, तमिल एवं ब्राह्मी लिपि (इनमें से तीन आर्य भाषा परिवार की लिपि तथा एक दक्षिण द्रविड़ परिवार की लिपि है।) को आधार मानकर तैयार किया हुआ था।

कुँड़ुख भाषा की "तोलोंग लिपि" का अविष्कार

3. राजी पड़हा दीवान, श्री भिखराम भगत के नेतृत्व में राजी पड़हा के वार्षिक सम्मेलन बमनडिहा, लोहरदगा 1995 ई0 में **तोलोंग सिकि** को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में की गई प्रस्तुति को प्रोत्साहित किया गया तथा लिपि के साथ इसका व्याकरण तैयार कर समाज को सौंपने का सुझाव प्राप्त हुआ।

4. दिनांक 15 अक्टूबर 1995 को राजकीय कृत उच्च विद्यालय, रामगढ़, दुमका में *अधिवक्ता डॉ0 बासुदेव बेसरा* की अध्यक्षता में आदिवासी भाषा–संस्कृति की सुरक्षा के उपाय विषय पर एक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस बैठक में दुमका क्षेत्र के कई बुद्धिजीवी उपस्थित थे, जिन्होंने झारखण्ड क्षेत्र की आदिवासी भाषाओं को बचाने एवं विकसित करने के लिए एक सर्वमान्य लिपि की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में **डॉ0 नारायण उराँव** द्वारा प्रस्तुत **तोलोंग सिकि** को इस उदेश्य के लिए उत्तम कहा। *अधिवक्ता श्री बासुदेव बेसरा* ने कहा कि तोलोंग सिकि नाम बहुत सटीक है। संताली भाषा में तोल (तॉल) का अर्थ बांधना तथा ओंग का अर्थ ध्वनि समझा जाता है। अन्वेषण कर्ता, डॉ0 नारायण उराँव के अनुसार, **तोलोंग** नामकरण, उराँव एवं मुण्डा लोगों के बीच पहना जाने वाला एक परम्परागत मरदाना पोशाक से लिया गया है जिसकी आकृति के जैसा लिपि का अक्षर है। **सिकि** का अर्थ चिह्न है, जो सिका चिनहाँ से सिकि हुआ है।

वर्ष – 1996

1. गॉस्सनर कॉलेज, राँची में 18 फरवरी 1996 ई0 को डॉ0 दुखा भगत, डॉ0 एस0 बी0 महतो, डॉ0 ज्योति टोप्पो, डॉ0 ईवा हंसदा आदि की उपस्थिति में नई लिपि के विकास संबंधी कई प्रष्न *डॉ0 नारायण उराँव* से पूछे गए।

2. राजकीय कृत उच्च विद्यालय रामगढ़, दुमका में *अधिवक्ता डॉ0 बासुदेव बेसरा,* दुमका की अध्यक्षता में 15 अक्टूबर 1995 ई0 तथा गॉस्सनर कॉलेज, राँची में 18 फरवरी 1996 ई0 को डॉ0 दुखा भगत, डॉ0 एस0 बी0 महतो, डॉ0 ज्योति टोप्पो, डॉ0 ईवा हंसदा आदि की उपस्थिति में नई लिपि के विकास संबंधी कई प्रष्न *डॉ0 नारायण उराँव* से पूछे गए। उन अनुत्तरित प्रष्नों के उत्तर हेतु डॉ0 उराँव द्वारा डॉ0 बहुरा एक्का, विषप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 फा0 बेनी एक्का, फा0 प्रताप टोप्पो, फा0 जेम्स टोप्पो, श्री पी0सी0 बेक, प्रो0 इन्द्रजीत उराँव, ई0 अजित मनोहर खलखो, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 षान्ति खलखो आदि कई विषिष्ट षिक्षाविदों के साथ संपर्क स्थापित किया गया और कुँड़ुख़ भाषा की मूल ध्वनियों एवं लिपि चिन्हों के चुनाव में सतर्कता आदि पर विषेष ध्यान किया गया।

3. उपरोक्त षिक्षाविदों से परामर्ष के पष्चात् कई अनुत्तरित प्रष्नों के उत्तर हेतु डॉ0 नारायण उराँव द्वारा **भाषाविद डॉ0 फ्रांसिस एक्का** के साथ बिहार की राजधानी पटना (डॉ0 एक्का, ACTION AID नामक संस्था के सेमिनार में आये हुए थे) के होटल *'सम्राट' में 27 एवं 28 जुलाई 1996 ई0* को मुलाकात किया गया तथा उन प्रष्नों पर विस्तृत चर्चा हुई। **डॉ0 एक्का** द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों एवं भाषा वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर डॉ0 उराँव द्वारा **ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि** पुस्तक की रचना का कार्य आरंभ किया गया।

4. नई लिपि के प्रतिष्ठापन में **डॉ0 फ्रांसिस एक्का, डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 बहुरा एक्का, डॉ0 फा0 बेनी एक्का** आदि ने सुझाव दिया कि **सरल ध्वनि** एवं **लम्बी ध्वनि** के लिए अलग–अलग चिह्न न रखे जाएँ, जिससे इसे समझने तथा समझाने में देवनागरी की तरह मस्तिस्क में खींचाव होने से बचा जा सके। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान या International Phonetic Alphabet (IAP) के तरीके को अपनाया गया, जहाँ **उपविराम** का प्रयोग **लम्बी ध्वनि** के लिए होता है।

वर्ष – 1997

1. दिनांक 14 फरवरी से 6 मार्च 1997 तक सम्पन्न जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के रिफ्रेसर कॉर्स में तोलोंग सिकि की आवष्यकता एंव उपयोगिता विषय पर 30 से 35 प्राध्यापकों के बीच तत्कालीन निदेषक डॉ0 सी0 आर0 लाहा एवं कोर्स कॉ–ऑडिनेटर डॉ0 बासंती कुमारी के सुझाव पर डॉ0 नारायण उराँव द्वारा परिचर्चा किया गया।

2. **डॉ0 फ्रांसिस एक्का** के सुझाव में से आंशिक सुझाव के आधार पर **ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि** पुस्तक की रचना हुई, जिसे श्री सुखनाथ उराँव (तत्कालीन डी.एस.पी.) की मदद से छपवाया गया। इस पुस्तिका का लोकार्पण दिनांक 05.05.1997 को राँची विष्वविद्यालय, राँची के *जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग* में हुआ। लोकार्पण के दौरान **डॉ0 रामदयाल मुण्डा** द्वारा पुस्तक की प्रस्तुति के तरीके को **खारिज** करते हुए फिर से ***सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली*** तथा ***भाषा वैज्ञानिक तथ्यों वाली लिपि*** की प्रस्तुति का सुझाव दिया गया।

6 मई 1997, मंगलवार 2

'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक का विमोचन

तोलोंग लिपि इस क्षेत्र की अज्ञानता के अंधकार को दूर करेगी: अहलाद

संवाददाता

रांची, 5 मई : आदिवासी भाषाओं की तोलोंग लिपि में डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखी गयी 'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक का विमोचन पत्रकार हरिवंश ने किया और क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा के विद्वान अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर समारोह म का उद्‌घाटन किया.

रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित सादे समारोह का उद्‌घाटन करते हुए अहंलाद तिर्की ने कहा कि जिस प्रकार यह ज्योति जल रही है, उसी प्रकार तोलोंग लिपि इस क्षेत्र के अज्ञानता के अंधकार को दूर करेगा. कुडुख भाषा के प्राध्यापक इंद्रजीत उरांव ने समीक्षा करते हुए कहा कि आज ध्वनि के अनुसार भाषा का निर्माण हुआ है. इसमें लिपि के गुण-दोष को भी देखना होगा. उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं को समेट कर चलने की आवश्यकता है और इसके लिए क्षेत्रीय भाषाओं के वैज्ञानिकों को मंथन करना होगा.

सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो ने कहा कि प्रकृति में ईश्वर के सृष्टिनुसार सभी पक्षियों एवं कीड़े-मकोड़ों की अपनी-अपनी ध्वनि रूपी भाषा है. उसी प्रकार मनुष्य की भी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान भाषायी रूप में अलग है. फादर टोप्पो ने बताया कि ऐसी बहुत सी जातियां हैं, जिनको सामने नहीं आने दिया गया. तोलोंग लिपि के विकास के लिए एकजुट होने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि सुंदरता को पहचानने के लिए हर भाषा को सीखने और उसे आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देने की आवश्यकता है. आज विश्व में सभी जातियां अपनी-अपनी भाषाओं को आगे बढ़ाने में आगे आ रही हैं.

अवकाशप्राप्त परिवहन आयुक्त मनोरंजन लकड़ा ने बताया कि पत्र लिखने के क्रम में पर्व-त्योहारों में भी हमलोगों ने इसे माध्यम बनाया था और साथ ही इस भाषा में लेख भी लिखे गये. 'ट्रैस' संस्था की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि तोलोंग एक पोशाक है और जब यह हिलता-डोलता है, तो काफी सुंदर दिखाई पड़ता है.

डॉ कामिल बुल्के शोध संस्थान के निदेशक डॉ मतियस डुंगडुंग ने तोलोंग लिपि में अपनेपन की बात कही और बताया कि इसे सीखने में कोई कठिनाई नहीं होगी. डॉ डुंगडुंग ने खड़िया भाषा की वकालत करते हुए कहा कि खड़िया भाषा की लिपि भी तैयार हो चुकी है, लेकिन वर्तमान में इसे पढ़ने में कठिनाई होगी. उन्होंने डॉ नारायण उरांव के तोलोंग लिपि लिखने और उसे बढ़ाने के प्रयास को सराहा. उन्होंने कहा कि यह भाषा लिपि विकास में और सहायक होगी.

खड़िया भाषा विशेषज्ञ डॉ जुलियस बा कहा कि जब भी क्षेत्रीय भाषाओं को देवनागरी में लिखने का प्रयास किया गया, तब उसमें काफी गलतियां हुईं. क्षेत्रीय भाषाओं के लिए देवनागरी नहीं बन पड़ती है. उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषाई व्यक्ति जैसा बोलता है, वह वैसा लिख नहीं पाता है. फिर भी डॉ नारायण उरांव की तोलोंग सिकि इस क्षेत्र में भाषाई एकता को बढ़ावा देगी.

संथाली भाषा के विद्वान प्रो केसी टुडू ने समीक्षा करते हुए कहा कि पंडित रघुनाथ मुर्मू के प्रयास से ऑल चिकि लिपि का निर्माण पहले ही हो चुका है. आज लिपि बनाना तो आसान है, क्या इस तोलोंग सिकि का संथाली भाषा से सामंजस्य बन पायेगा. श्री टुडू ने कहा कि अगर यह लिपि लागू हो जाती है, तो आल चिकि को संथाली कैसे भूल पायेंगे, जबकि आल चिकी पर काफी पुस्तकें और साहित्य लिखे जा चुके हैं.

प्रो वीपी केसरी ने कहा कि झारखंड क्षेत्र में जितनी भी लिपियां बनायी गयीं, उनकी एक समीक्षा होनी चाहिए. श्री केसरी ने कहा कि जिस दिन हमारा साहित्य खुलकर सामने आयेगा, उस दिन दुनिया में हमारी झारखंडी प्रतिष्ठा को सम्मान मिल पायेगा. उन्होंने कहा कि झारखंडी भाषाओं को देवनागरी भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता है. साथ ही इस क्षेत्र के लोगों को कबिलाई भरी जिंदगी जीना छोड़ कर राष्ट्रीय मुख्यधारा से जुड़ना चाहिए. डॉ केसरी ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में भी तैयार करने की पहल करनी चाहिए. उन्होंने जोर देते हुए कहा कि जब तक झारखंडी साहित्य समृद्ध नहीं होगा, तब तक झारखंड को बचाना मुश्किल है. इस अवसर पर पत्रकार हरिवंश ने डॉ नारायण उरांव को बधाई देते हुए कहा कि डॉ उरांव ने सृजनात्मक कार्य किया है और वे इतिहास में प्रेरणा के स्रोत हैं. 'तोलोंग सिकि' के लेखक डॉ नारायण उरांव ने कहा कि तोलोंग सिकि का शाब्दिक अर्थ तोलोंग लिपि है और इसका विकास आदिवासी समूह की भाषा साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए किया गया है. उन्होंने बताया कि अब तक इन भाषाओं के साहित्य देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखे जाते रहे हैं. इन लिपियों में आदिवासी भाषा में उच्चरित ध्वनियों के ध्वनि चिह्नों का अभाव रहा है. साथ ही इन भाषाओं की प्रकृति हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषाओं की प्रकृति से भिन्न है. इसके चलते हिंदी अथवा अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी आदिवासी भाषाओं के साहित्य सृजन में कठिनाइयां हैं. इस अवसर पर डॉ कर्मा उरांव, डॉ बंदी पिंगुआ, हॉली क्रास स्कूल, लालपुर की प्राचार्या सिस्टर अनिता, संत जेवियर्स कॉलेज के उप प्राचार्य फादर कलेमेंट एक्का, डॉ रामदयाल मुंडा, डॉ बासंती कुजूर, डॉ गनेशा मुर्मू, प्रो शांति खलखो एवं जनजातीय भाषा विभाग के गणमान्य लोग उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन प्रो गिरिराज गौड़ ने किया.

प्रभात खबर

'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' पुस्तक के लोकार्पण समारोह में मंच पर बैठे अतिथिगण.

4. आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संशोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संशोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

23 जून 1997, सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

संवाददाता

रांची, 22 जून : पुरुलिया रोड स्थित सत्य भारती सभागार में कल 'आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप' विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान जूलियस बा: ने की. गोष्ठी का उद्देश्य रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखित 'ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना था.

ज्ञातव्य है कि पिछली सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि लिपि का संशोधित स्वरूप निम्न बातों के अनुरूप हो : एक ध्वनि- एक संकेत के सिद्धांत पर आधारित हो, वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनता की ओर हो, कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जा सके, अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाये और आदिवासी भाषा संस्कृति को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जाये. इसी परिप्रेक्ष्य में लिपि के संशोधित स्वरूप पर इस गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया. गोष्ठी से सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि (लिपि) वर्णमाला का नवीनतम संशोधित स्वरूप तैयार किया गया.

गोष्ठी में लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ नारायण उरांव, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामदयाल मुंडा, सेवानिवृत्त अवर स्वास्थ्य निदेशक डॉ विश्वनाथ भगत, होड़ो सेवा समिति के अध्यक्ष पीएनएस सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप, राजू उरांव, मीना टोप्पो, मंगरा उरांव, विवेकानंद भगत, प्रो नारायण भगत, प्रो राजेश कुजूर, प्रो रामकिशोर भगत, डॉ बुदु उरांव आदि ने अपने विचार रखे और कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. बिशप डॉ निर्मल मिंज ने इस स्वरूप को अंतिम स्वरूप की संज्ञा दी. गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि अब इस नवीनतम संशोधित लिपि से साहित्य सृजन किये जायें.

5. आदिवासी बुद्धिजीवियों द्वारा नई लिपि की आवष्यकता को बढ़ावा दिया जाने लगा और इसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए **डॉ0 फ्रांसिस एक्का** एवं **डॉ0 रामदयाल मुण्डा** को अधिकृत करने की अपील के साथ TRACE के बैनर से डॉ0 एक्का को पत्र लिखा गया, जिसके उत्तर में उन्होंने कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

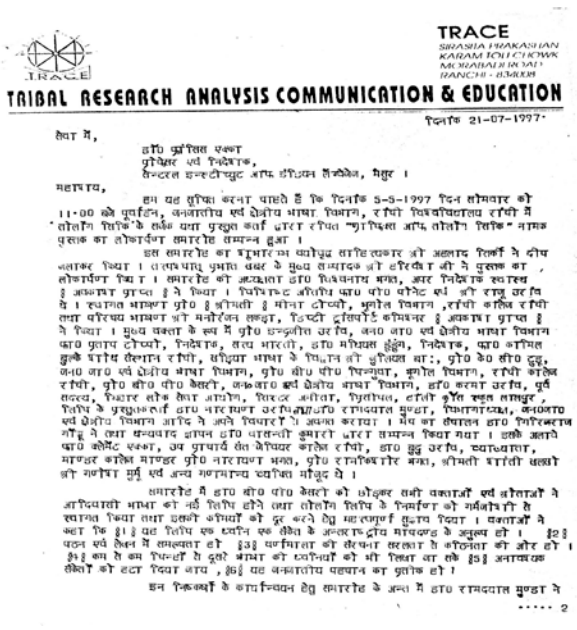

TRACE
SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

दिनांक 21-07-1997

सेवा में,
डॉ० फ्रांसिस एक्का
प्रोफेसर एवं निदेशक,
सेन्ट्रल इन्स्टीच्यूट आफ इंडियन लैंग्वेज, मैसूर।

महाशय,

हम यह सूचित करना चाहते हैं कि दिनांक 5-5-1997 दिन सोमवार को 11.00 बजे पूर्वाह्न, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची में तोलोंग सिकि के सर्जक तथा प्रस्तुतकर्ता द्वारा रचित "ग्राफिक्स आफ तोलोंग सिकि" नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस समारोह का शुभारम्भ वयोवृद्ध साहित्यकार श्री अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर किया। तत्पश्चात् प्रभात खबर के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश जी ने पुस्तक का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० विश्वनाथ भगत, अपर निदेशक स्वास्थ्य (अवकाश प्राप्त) ने किया। विशिष्ट अतिथि फा० पी० पोनेट एवं श्री राजू उरांव थे। स्वागत भाषण प्रो० (श्रीमती) मीना टोप्पो, भूगोल विभाग, राँची कालेज राँची तथा परिचय भाषण श्री मनोरंजन लकड़ा, डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (अवकाश प्राप्त) ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० इन्द्रजीत उरांव, जन० जा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, फा० प्रताप टोप्पो, निदेशक, सत्य भारती, डॉ० मथियस डुंगडुंग, निदेशक, फा० कामिल बुल्के शोध संस्थान राँची, खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा:, प्रो० के० सी० टुडू, जन० जा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, प्रो० बी० पी० पिन्गुवा, भूगोल विभाग, राँची कालेज राँची, प्रो० बी० पी० केसरी, जन० जा० एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ० करमा उरांव, पूर्व सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, सिस्टर अनीता, प्रिंसिपल, होली क्रॉस स्कूल लालपुर, लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ० नारायण उरांव, डॉ० रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, जन० जा० एवं क्षेत्रीय विभाग आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया। मंच का संचालन डॉ० गिरिधारी राम गौंझू ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ० वासन्ती कुमारी द्वारा सम्पन्न किया गया। इसके अलावे फा० क्लेमेंट एक्का, उप प्राचार्य संत जेवियर कालेज राँची, डॉ० बुदु उरांव, व्याख्याता, माण्डर कालेज माण्डर, प्रो० नारायण भगत, प्रो० रामकिशोर भगत, श्रीमती शांति खलखो, श्री गणेश मुर्मू एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

समारोह में डॉ० बी० पी० केसरी को छोड़कर सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं ने आदिवासी भाषा को नई लिपि होने तथा तोलोंग लिपि के निर्माण को गर्मजोशी से स्वागत किया तथा इसकी कमियों को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया। वक्ताओं ने कहा कि (1) यह लिपि एक ध्वनि एक संकेत के अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुरूप हो। (2) पठन एवं लेखन में सरलता हो (3) वर्णमाला की संरचना सरलता से कठिनता की ओर हो। (4) कम से कम चिन्हों से दूसरे भाषा की ध्वनियों को भी लिखा जा सके (5) अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाय, (6) यह जनजातीय पहचान का प्रतीक हो।

इन निष्कर्षों के कार्यान्वयन हेतु समारोह के अन्त में डॉ० रामदयाल मुण्डा ने

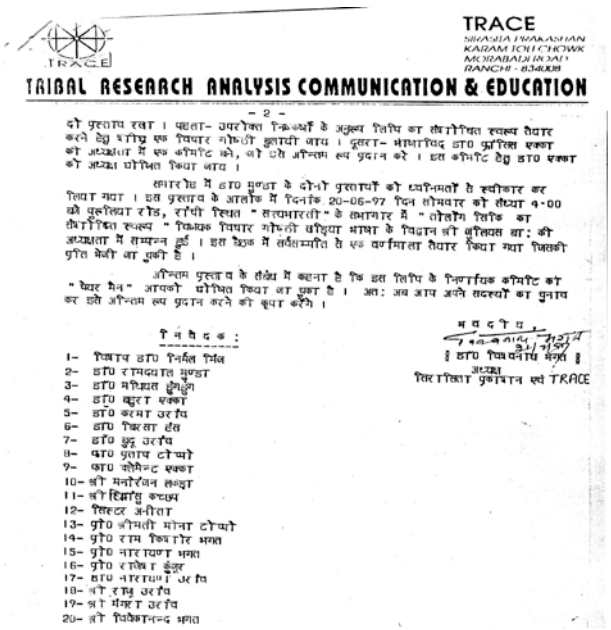

..... 2

TRACE
SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

- 2 -

दो प्रस्ताव रखा। पहला- उपरोक्त निष्कर्षों के अनुरूप लिपि का संशोधित स्वरूप तैयार करने हेतु शीघ्र एक विचार गोष्ठी बुलायी जाय। दूसरा- भाषाविद डॉ० फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में एक कमिटि बने, जो इसे अन्तिम रूप प्रदान करे। इस कमिटि हेतु डॉ० एक्का को अध्यक्ष घोषित किया जाय।

समारोह में डॉ० मुण्डा के दोनों प्रस्तावों को ध्वनिमतों से स्वीकार कर लिया गया। इस प्रस्ताव के आलोक में दिनांक 20-06-97 दिन सोमवार को संध्या 4.00 बजे पुरुलिया रोड, राँची स्थित "सत्यभारती" के सभागार में "तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप" विषयक विचार गोष्ठी खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा: की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सर्वसम्मति से एक वर्णमाला तैयार किया गया जिसकी प्रति भेजी जा चुकी है।

अन्तिम प्रस्ताव के संबंध में कहना है कि इस लिपि के निर्णायक कमिटि का "चेयर मैन" आपको घोषित किया जा चुका है। अतः अब आप अपने सदस्यों का चुनाव कर इसे अन्तिम रूप प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निवेदक :

1- बिशप डॉ० निर्मल मिंज
2- डॉ० रामदयाल मुण्डा
3- डॉ० मथियस डुंगडुंग
4- डॉ० बुरा एक्का
5- डॉ० करमा उरांव
6- डॉ० बिरसा हंस
7- डॉ० बुदु उरांव
8- फा० प्रताप टोप्पो
9- फा० क्लेमेन्ट एक्का
10- श्री मनोरंजन लकड़ा
11- श्री हिमांशु कच्छप
12- सिस्टर अनीता
13- प्रो० श्रीमती मीना टोप्पो
14- प्रो० राम किशोर भगत
15- प्रो० नारायण भगत
16- प्रो० राजेश कुजूर
17- डॉ० नारायण उरांव
18- श्री राजू उरांव
19- श्री मंगरा उरांव
20- श्री विवेकानन्द भगत

भवदीय,
(डॉ० विश्वनाथ भगत)
अध्यक्ष
सिरासिता प्रकाशन एवं TRACE

Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore 570 006, India
Tel:(0821) 515820(office); 544120 (home);Fax:515032 :Email:ciil@giasbg01.vsnl.net.in

Francis Ekka November 27, 1997

Dear Dr.Bhagat,

I have received your letter dated 27--7-1997 on the subject of the formation of a *nirnaayak* committee (but Dr.Oraon's printed handbill dated 13-09-1997 sent to me subsequently explicitly states his modified script has been sent to Central Institute of Indian Languages for approval/*maanyata*) to finalize and grant of approval /recognition to Tolong script. I have been frequently out of Mysore during last several months on consultancy assignements to other agencies/States, and I sincerely apologize for this inordinate delay in replying to you on this important subject.

While I appreciate Dr.Oraon for his efforts in creating Tolong script, and the interest it has generated among the Jharkhandi leaders and academicians, I regret to inform you that this Institute is not empowered to grant official recognition for any scripts on its own behalf, or on behalf of the Government of India. I think it is the Department of Official Languages in the Home Ministry, Government of India, which deals with such matters; and that too in respect to the languages listed in the VIII Schedule of the Constitution of India. There is a very lengthy procedure; there is first, a literary criterion for recognition of a language and its script by the Sahitya Akademi; and next, there is a political criterion for its inclusion in the VIII Schedule. Both these criteria are more political than academic, or even scientific. Besides, this invention is intellectual property of Dr.Narayan Oraon, and I am not sure at this moment whether it would be proper to discuss this as a public issue. Under this circumstances I am unable to render useful advice on the subject.

With regards,

Yours sincerely,
(Francis Ekka)

To
Dr.Vishwanath Bhagat
Sirasita Prakashan
Morhabadi Road, Karamtoli Chowk
Ranchi 834 008

Copies to:Dr.Narayan Oraon; Dr.Ram Dayal Munda; Dr.Nirmal Minj; Fr.Mathias Dundung, S.J; Fr.Pratap Toppo,S.J; Dr.Narayan Bhagat; Sr.Anita; Dr.(Mrs.)Meena Toppo; Dr.Bindu Oraon; (I do not possess mailing addresses of the remaining 10 dignitories listed in your letter under reference).

6. दिनांक 18 एवं 19 अक्टूबर 1997 को (दो दिवसीय) अन्तर्राजकीय परम्परागत कुँड़ुख़ सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्मेलन, जमषेदपुर में **डॉ0 करमा उराँव** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस सम्मेलन में **डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'** द्वारा प्रस्तुत लिपि, **तोलोंग सिकि** पर विस्तृत चर्चा हुई तथा **श्री बासुदेव राम खलखो** द्वारा प्रस्तुत लिपि, **कुड़ुख़ बन्ना** पहली बार इस सामाजिक सम्मेलन में सम्मिलित हुई।

वर्ष – 1998

1. डॉ0 फ्रांसिस एक्का, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ0 रामदयाल मुण्डा, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ0 निर्मल मिंज, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), फा0 प्रताप टोप्पो (यू.एस.ए. से पत्रकारिता) के अतिरिक्त डॉ0 नारायण उराँव, श्री मनोरंजन लकड़ा, डॉ0 नारायण भगत, श्री विवेकानन्द भगत, श्री मंगरा उराँव आदि कई षिक्षाविदों एवं समाज सेवियों की उपस्थिति में होटल महाराजा, राँची में दिनांक 22 एवं 24 जनवरी 1998 ई0 को *तोलोंग सिकि* के विकास के संबंध में स्पष्ट दिषा निर्देष तय, जिसमें कहा गया कि नई लिपि, *सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली हो तथा तकनीकि मानदण्डो पर खरा उतरे। अधिकतर अक्षर*

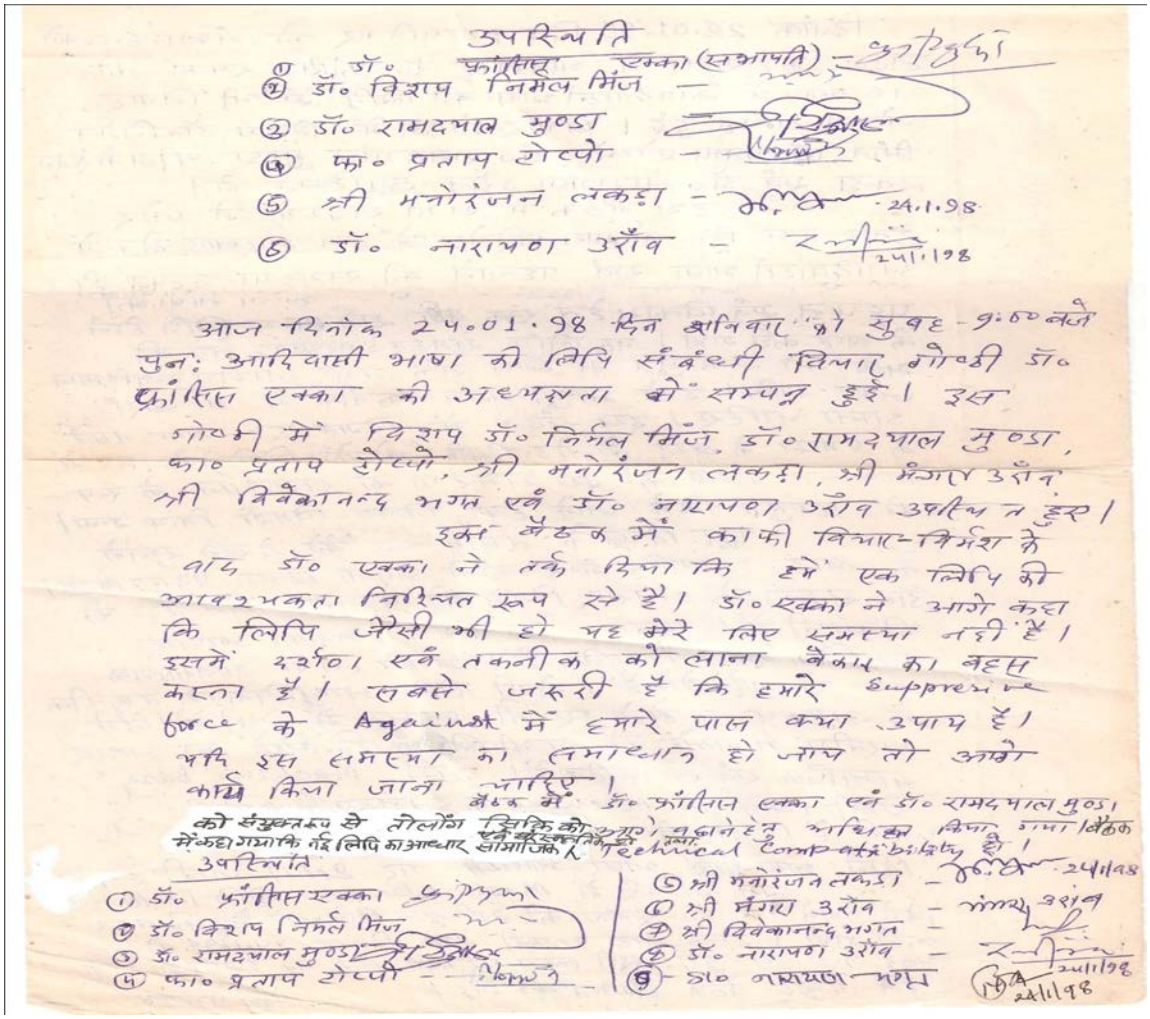

उपस्थिति

1. डॉ० फ्रांसिस एक्का (सभापति) –
2. डॉ० विशप निर्मल मिंज –
3. डॉ० रामदयाल मुण्डा –
4. फा० प्रताप टोप्पो –
5. श्री मनोरंजन लकड़ा – 24.1.98
6. डॉ० नारायण उराँव – 24.1.98

आज दिनांक 24.01.98 दिन शनिवार को सुबह 9:00 बजे पुनः आदिवासी भाषा की लिपि संबंधी विचार गोष्ठी डॉ० फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में विशप डॉ० निर्मल मिंज, डॉ० रामदयाल मुण्डा, फा० प्रताप टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं डॉ० नारायण उराँव उपस्थित हुए।

इस बैठक में काफी विचार-विमर्श के बाद डॉ० एक्का ने तर्क दिया कि हमें एक लिपि की आवश्यकता निश्चित रूप से है। डॉ० एक्का ने आगे कहा कि लिपि जैसी भी हो यह मेरे लिए समस्या नहीं है। इसमें दर्शन एवं तकनीक को लाना बेकार का बहस करना है। सबसे जरूरी है कि हमारे suppressive force के Against में हमारे पास क्या उपाय है। यदि इस समस्या का समाधान हो जाय तो आगे कार्य किया जाना चाहिए।

बैठक में डॉ० फ्रांसिस एक्का एवं डॉ० रामदयाल मुण्डा को संयुक्तरूप से तोलोंग सिकि को आगे बढ़ाने हेतु अधिकृत किया गया। बैठक में कहा गया कि नई लिपि का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक हो तथा Technical Compatibility हो।

उपस्थिति

1. डॉ० फ्रांसिस एक्का
2. डॉ० विशप निर्मल मिंज
3. डॉ० रामदयाल मुण्डा
4. फा० प्रताप टोप्पो
5. श्री मनोरंजन लकड़ा – 24.1.98
6. श्री मंगरा उराँव – मंगरा उराँव
7. श्री विवेकानन्द भगत –
8. डॉ० नारायण उराँव – 24.1.98
9. डॉ० नारायण भगत 24.1.98

2. दिनांक 12 मई 1998 को डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', द्वारा प्रस्तुत प्राथमिक पुस्तक *कइलगा* का द्वितीय संस्करण को श्री अब्राहम मिंज, श्री अगस्तुस तिग्गा, डॉ0 तारक बखला एवं ई0 एतवा उराँव की अगुवाई में गया (बिहार) में पदस्थापित नौकरी पेषा वालों के संयुक्त प्रयास छपाई करवाकर, प्रकाषित किया गया तथा समाज में वितरित किया गया।

वर्ष – 1999

1. अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों में से डॉ0 लक्ष्मण उराँव के नेतृत्व में आदिवासी बाल विकास विद्यालय, रातू, राँची में तथा श्री मंगरा मुण्डा के नेतृत्व में कार्तिक उराँव बाल विकास विद्यालय, सिसई गुमला में एवं डॉ0 एतवा उराँव के नेतृत्व में कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूर एड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला में *तोलोंग सिकि* के माध्यम से कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई जनवरी 1999 ई0 से आरंभ हुई।

2. *डॉ0 रामदयाल मुण्डा, पूर्व कुलपति,* राँची विश्वविद्यालय, राँची एवं *डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, पूर्व कुलपति,* मगध विश्वविद्यालय, बोधगया एवं सिद्हु–कान्हु मुरमु वि0, दुमका द्वारा संवादाता सम्मेलन कर दिनांक 15 मई 1999 ई0 को *तोलोंग सिकि (लिपि) को जनमानस के प्रयोग के लिए जारी* किया गया। संवादाता सम्मेलन में डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव, प्रो0 मीना टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री हिमांशु कच्छप, श्री मनोहर लकड़ा, श्री महेश भगत एवं श्री साधु उराँव उपस्थित थे।

जमानत लेकर बाहर आएं तथा अपना उपयुक्त इलाज कराएं। दरअसल परिस्थितियों ने एप्रूवर बनने के लिए मजबूर कर दिया है।

यह जानकारी ... मंत्री विश्वनाथ शाहदे...

(5) रांची एक्सप्रेस, रविवार, 16 मई 1999

में ये पार्टियां यदि एम.सी.सी. के. राय को समर्थन कर देती है तो सिरदर्द पैदा कर सकती है। परन्तु और इन नेताओं को अब भी सुध नहीं आयी तो फिर इन पार्टियों का पुन: एक भी सांसद लोकसभा नहीं पहुंच पाएगी।

तोलोंग सिकि (लिपि) जनमानस के प्रयोग के लिए जारी

रांची, 15 मई (रा.ए.सं.) : झारखण्ड क्षेत्र की भाषा के लिए तेलोंग सिकि नामक नयी लिपि का विकास कर लिया गया है। तेलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, सिरासिता प्रकाशन एवं ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एडुकेशन (ट्रेस) की ओर से संयुक्त रूप से इस लिपि (तेलोंग सिकी) को जन-मानस के बीच व्यवहार के लिए आज जारी किया गया।

ट्रेस एवं तेलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आज एक संवाददाता इस लिपि को अंगीकार कर लिया है। इसी प्रकार दूसरे भाषा-भाषी भी अपनी आवश्यकता एवं इच्छानुसार इसे व्यवहार में ला सकते है।

संवाददाता सम्मेलन में बताया गया कि राज्य सरकार से लिपि को मान्यता दिलाने का प्रयास किया जाएगा। परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की जांच की व्यवस्था जनजातीय भाषा विभाग करेगा। इस लिपि की खोज के इतिहास के संबंध में चर्चा करते हुए बताया गया कि भाषा एवं साहित्य के बचाव तथा विकास की दिशा में यह एक अनुठा कार्य है।

पेशे से चिकित्सक डा. नारायण उरांव 'सैन्दा' एवं उनके साथियों द्वारा गत 7-8 वर्षों के अनवरत सम्मेलन में यह जानकारी दी गयी। इस लिपि के विकास के लिए उपर्युक्त दोनों संगठनों की ओर से छह सेमिनार एवं कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया था। इन सम्मेलनों में कई भाषाविद्, शिक्षाविद्, समाजसेवी एवं जनप्रतिनिधियों ने भाग लेकर इसकी आवश्यकता एवं औचित्य पर विचार विमर्श किया। वक्ताओं ने कहा कि यहां के जनमानस द्वारा वर्षों से जिस चीज की कमी महसूस की जा रही थी, उस कमी को तेलोंग सिकि ने पूरा किया। 19 सितम्बर 1998 को बिहार जनजातीय शोध एवं समाज कल्याण संस्थान, मोरहाबादी रांची द्वारा आयोजित एक सेमिनार में कुड़ुख भाषा-भाषियों ने प्रयास के बाद 'तोलोंग सिकि' नामक लिपि का शोध-संकलन किया गया। अब तक इस क्षेत्र के सिर्फ कुड़ुख (उरांव) भाषी ही लोग इसे अपनी भाषा की लिपि कह पाए हैं।

डा. उरांव का कहना है कि यह लिपि झारखण्ड वनांचल की आदिवासी भाषाओं की लिपि बन सकती है। यह लिपि उनके समाज के लिए नया नहीं है। उन्होंने समाज में प्रचलित अनुष्ठान चिन्हों एवं दिनचर्या के खेल-खेल में खींचे जाने वाले चिन्हों को संकलित कर उन्हें भाषा विज्ञान एवं यंत्र विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुरूप संवारा है। लिपि के नामकरण के संबंध में डा. नारायण का कहना है कि तेलोंग एक प्रकार का आदिवासी पोशाक है। यह 24 हाथ लम्बा तथा 1-1/2 हाथ चौड़ा कपड़ा होता है। इसे कमर में लपेट कर पहना जाता है। इसकी खासियत यह है कि यदि इसके पिछले भाग को खींचा जाय तो लगभग 20 हाथ लंबा खींचा जाता है। कमर में लपेटने से बने इसके विभिन्न स्वरूपों को ध्वनि चिन्हों के रूप में प्रयोग किया गया है। दूसरी बात यह है कि तॉल+आंग का अर्थ संताली भाषा में बंधी हुई ध्वनि तथा सिकि का अर्थ चिह्न होता है अर्थात् 'तोलोंग सिकि' का अर्थ बंधी हुई ध्वनि चिन्ह हुआ।

इस लिपि के चिन्हों को आधुनिकतम तकनीक यानि कम्प्यूर सिद्धान्त के अनुरूप स्थापित किया गया है। डा. उरांव ने जानकारी दी कि कम्प्यूटर पद्धति के डिस्प्ले को उन्होंने आदिवासियों द्वारा किया जानेवाला डंडा कट्टना पूजा अनुष्ठान में खींचे जाने वाले वेदि चिन्ह के आधार पर तैयार किया है। इस वेदि चिह्न में जितनी रेखाएं है, उतने ही व्यंजन वर्ण रखें गए हैं।

इस लिपि को निर्णायक स्वरूप प्रदान करने से पूर्व लगभग छह सेमिनारों एवं कई सम्मेलनों में आदिवासी विद्वानों, भाषाविदों, साहित्यकारों, समाज सेवियों, जन प्रतिनिधियों एवं शिक्षाविदों से सलाह मशविरा कर, आवश्यक संशोधन किया गया है। इस कार्य में रांची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. रामदयाल मुण्डा, बिहार लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य डा. करमा उरांव, बिशप डा. निर्मल मिंज, बिहार स्वास्थ्य सेवा के पूर्व अपर निदेशक डा. विश्वनाथ भगत, कार्तिक उरांव कालेज गुमला के प्राचार्य डा. बहुरा एक्का, करमचंद भगत कालेज बेड़ो, के पूर्व प्राचार्य डा. ज्योतिलाल उरांव, सत्यभारती रांची के निदेशक प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप तथा मनोरंजन लकड़ा, अधिवक्ता बासुदेव बेसरा, रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्रो. इन्द्रजीत उरांव, अधीक्षण अभियन्ता अजित मनोहर खलखो, महिला पोलिटेकनिक के वेद प्रकाश श्रीवास्तव, गोस्सनर कालेज की व्याख्याता श्रीमती ज्योति टोप्पो, पूर्व. छात्र नेता प्रभाकर तिर्की एवं विनोद कुमार भगत ने अपना महत्वूर्ण योगदान दिया है।

संवाददाता सम्मेलन में डा. राम दयाल मुण्डा, डा. नारायण भगत, डा. नारायण उरांव, महेश भगत, साधु उरांव, मनोहर लकड़ा, मनोरंजन लकड़ा, हिमांशु कच्छप, प्रो. मीना टोप्पो एवं डा. इन्दु धान उपस्थित थे।

3. *ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि* का संषोधित द्वितीय संस्करण श्री प्रभाकर तिर्की द्वारा *'पतरा'* संस्था से प्रकाषित किया गया।

4. दिनांक 01 जुलाई 1999 को प्राथमिक पुस्तिका *कइलगा* का संषोधित द्वितीय संस्करण सत्यभारती, राँची द्वारा प्रकाषित।

5. सिस्टर अनिता एवं श्रीमती मर्सिलिना ख़ेस के नेतृत्व में हॉली क्रॉस गर्ल्स हाई स्कूल, पीस रोड, लालपुर, राँची में प्रथम कक्षा से तीसरी कक्षा तक कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई आरंभ हुई।

6. डॉ0 रामदयाल मुण्डा के साथ, उनके आवास पर डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं श्री विवेकानन्द भगत के साथ एक भेंटवार्ता हुई। इस भेंटवार्ता में डॉ0 उराँव ने झारखण्ड की भाषा–साहित्य के विकास के लिए मार्ग दर्शन के संबंध में डॉ0 मुण्डा जी से प्रश्न किया – जब उराँव, मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल मनकर बीच, बेटी अउर रोटी कर संबंध बइन जा थे, तब भाषा कर लाइन में एल0ओ0सी0 का ले बनाल जा थे। राउरे कर आशीर्वाद से जब तोलोंग सिकि लक्ष्य कर करीब पोंहचे जा थे, तब हमरे सबक ले (उराँव, मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल भाषा मन ले हुँ) तोलोंग सिकि के अपन भाषा कर लिपि माइन लेवेक चाही ? इस प्रश्न पर डॉ0 मुण्डा का सुझाव था – झारखण्ड क्षेत्र (पूर्ववर्ती बिहार) में भाषा अउर संस्कृति कर संरक्षण अउर संवर्द्धन ले उ मनकर भाषा समूह केर अनुरूप काम होवेक चाही। भाषा समूह केर अनुसार – 1. आष्ट्रिक भाषा परिवार (मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल आदि), 2. द्रविड़

भाषा परिवार (उराँव/कुँडुख़, मालतो) अउर 3. आर्य भाषा परिवार, तीनों समूह केर विकास ले तीन लिपि कर परिकल्पना होले बढ़िया होवी। द्रविड़ भाषा परिवार वाला मन तोलोंग सिकि के अपनाय चुकल हैं, इकर ले उ मन बधाई केर पात्र हैं अउर उ मन इकर साथ आगे बढ़ँय। संगे–संगे दोसर भाषा समूह ले भी नया लिपि विकसित होवेक चाही।

डॉ0 उराँव का डॉ0 मुण्डा जी के समक्ष दूसरा प्रश्न था – राउरे, मिनिसोटा यूनिवर्सिटी, अमेरिका में प्रोफेसर कर नौकरी छोइड़ के का ले आली ? इस प्रश्न पर, उन्होंने कहा – राउरे मन ई बात के नी बुझब ! जे खन हमर जगन प्रस्ताव आलक, जनजातीय भाषा विभाग कर अध्यक्ष/निदेशक कर रूप में विभाग चलायक ले, से खन हमर दिमाग में एके गो बात आलक कि एखने आपन देश अउर आदिवासी समाज कर श्रृण चुकाएक कर मोका हय। ई बेरा, झारखण्ड आन्दोलन के जगाएक कर बेरा हय। अउर इकर ले नवजवान मनकर ग्रेजुएट फौज तेयार करेक होवी। जोन खन हमर आदमी ग्रेजुएट होय जाबँय से खन उ मन आपन बात बोलेक सीखबँय, तब अलग राईज कर आन्दोलन मजबूत होवी अउर नया राईज मिलले, उ मन राईज चलाय ले अगुवा बनबँय। एसन सोईच के हम अमेरिका कर नौकरी के छोईड़ के चईल आली। हियाँ आवल कर बाद झारखण्ड क्षेत्र कर दौरा कईर के 5 गो आदिवासी भाषा और 4 गो क्षेत्रीय भाषा के मिलाय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग कर गठन करल गेलक। अइसन में, झारखण्ड क्षेत्र कर लगभग सबकर भाषायी प्रतिनिधित्व होवत रहे अउर हमरे एहे लाइन में काम करेक लागली। डॉ0 उराँव के कहा – राउर ई त्याग के हमरे बुईझ गेली। देश अउर आदिवासी समाज राउरे के हमेशा इयाइद करी।

वर्ष – 2000

1. 26 अगस्त 2000 ई0 को *कुँडुख़ भाषा मानकीकरण विषयक कार्यषाला, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,* राँची वि0 राँची के प्रांगन में संपन्न हुई, जहां *भाषा एवं लिपि* के मुद्दे पर षिक्षाविदों के साथ विचार–विमर्ष एवं दिषा निर्देष निधारित किया गया।

कुमार राय व गंदूरा पत्रकारिता के लिए किया गया. अखबा

27 अगस्त, 2000, रविवार 3

। करकेट्टा, आदिवा... मोद राय को सम्मानित किया.

कुडुख भाषा के मानकीकरण पर भाषाविदों ने कहा

कुडुख भाषा में एक ध्वनि के लिए अधिक चिह्नों का प्रयोग असंगत

गोष्ठी का दीप जला कर उद्घाटन करते विजय उरांव व अन्य.

रांची, 26 अगस्त : कुडुख भाषा की वर्तनी और अंकों के देवनागरी लिपि में मानकीकरण को लेकर आज रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय व क्षेत्रीय भाषा-साहित्य विभाग में गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी का उद्घाटन कुडुख भाषा का शब्दकोश तैयार कर रहे व सेवानिवृत्त एडीएम विजय उरांव ने दीप जलाकर किया. इस अवसर पर उरांव जनजाति की धार्मिक रीति के अनुसार उपस्थित लोगों ने प्रार्थना की. गोष्ठी में कुडुख भाषा के विकास के लिए इकट्ठे भाषाविदों ने ध्वनि पर आधारित चिह्नों के प्रयोग आदि पर विस्तृत विचार-विमर्श किया व कुडुख के पठन-पाठन में आनेवाली अड़चनों को व्याकरणीय सुधार कर दूर करने की बात-कही. इस भाषा के शोधकर्ता डॉ नारायण उरांव ने कहा कि कुडुख भाषा की वर्तनी संस्कृत की ही तरह ध्वनि प्रयोग पर आधारित है, जिसे देवनागरी लिपि माध्यम के प्रयोग से सहज और ग्राह्य बनाया जा सकता है. उन्होंने कहा कि अभी कई विद्वानों द्वारा एक ही ध्वनि के लिए अधिक चिह्नों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे भाषा की जटिलता बढ़ गयी है.डुमरी में कुडुख भाषा माध्यम से स्कूल चला रहे शिवशंकर उरांव ने बताया कि स्कूल में पांच सौ विद्यार्थी कुडुख भाषा में अध्ययन कर रहे हैं. मालूम हो कि कुडुख भाषा झारखंड के अलावा छत्तीसगढ़ व ओड़िशा के इलाकों में भी बोली जाती है, जहां कुडुख भाषा की स्थापित व्याकरण के अभाव में क्षेत्र के साथ ही भाषा के प्रयोग में बदलाव आ जाते हैं. गोष्ठी में मुख्य रूप से फादर प्रताप टोप्पो, बिशप मिंज, मंगरा कुजूर ने भी विचार व्यक्त किये. इससे पूर्व जनजातीय भाषा पर शोध कर रहीं शांति खलखो ने लोगों का स्वागत किया. गोष्ठी में पीसी बेक, प्रभाकर तिर्की, बासंती कुजूर, प्रो महामणि कुमारी, बिनकस एक्का, चौठी उरांव, शरण उरांव, अगस्तुस तिग्गा, बंधन उरांव, फादर अगापित तिर्की, मंजुला उरांव, प्रो पूर्णिमा उरांव सहित कई लोग उपस्थित थे.

2. दिनांक 15 नवम्बर 2000 को प्राथमिक पुस्तिका **कइलगा** का संषोधित तृतीय संस्करण का बिरसा मुण्डा जयन्ती के अवसर पर *सत्यभारती, राँची* द्वारा प्रकाषित।

3. दिनांक 15 नवम्बर 2000 को मध्य रात्रि, झारखण्ड राज्य का उदय।

वर्ष – 2001

1. कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु रूपरेखा तैयार करने में जुटे बायें से दायें फा0 प्रताप टोप्पो, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं वरीय पत्रकार श्री किसलय जी। *श्री किसलय जी* द्वारा तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर वर्जन केलितोलोंग फॉण्ट तैयार कर आदिवासी समाज के लिये निःषुल्क उपलब्ध कराने की कटिवद्धता।

2. **ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि** का संषोधित तृतीय संस्करण को फा0 जेम्स टोप्पो, *ग्रामगुरू* द्वारा प्रकाषित किया गया।

तोलोङ सिकि एवं भाषा विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर विचार-विमर्श करते डॉ0 नारायण उराँव और फादर जेम्स टोप्पो, एस. जे.।

3. श्री मनोरंजन लकड़ा, सेवानिवृत उपसमाहर्ता द्वारा तोलोंग सिकि में हस्तलिखित पुस्तक **द माईल स्टोन,** जनवरी 2001 में प्रकाषित किया गया।

4. सिस्टर नोएल्ला, सेवानिवृत प्राधानाध्यापिका की अगुवाई में उर्सलाईन कॉन्वेन्ट के षिक्षिकाओं के साथ उर्सलाईन कॉन्वेन्ट कोनबीर नवाटोली, बसिया, गुमला में *कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि* विषयक दो दिवसीय कार्यषाला में डॉ0 नारायण उराँव द्वारा प्रस्तुति।

वर्ष – 2002

1. माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी, श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की आदि द्वारा दिनांक 20 नवम्बर 2002 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन Kellytolong फॉन्ट के प्रथम संस्करण का लोकार्पण। यह कम्प्यूटर फॉन्ट newswing.com पर मुफ्त उपलब्ध किया गया है।

हिन्दुस्तान — रांची, गुरुवार, 21 नवम्बर, 2002 — 16

सत्यभारती सभागार में आदिवासी लिपियों पर आधारित तोलोंग सिकि लिपि का लोकार्पण

कंप्यूटर पर तोलोंग सिकि लिपि एक ऐतिहासिक उपलब्धि : आर्च बिशप

मुख्य संवाददाता

रांची, 20 नवंबर। आज की उपलब्धि अलग झारखंड राज्य के गठन से कहीं कम नहीं है। अब यह झारखंडी जनता के समक्ष चुनौती है कि वे भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आगे की रणनीति बनायें। ये विचार आर्चबिशप तेलेस्फर टोप्पो ने आज सत्यभारती सभागार में व्यक्त किये। वह प्रमुख आदिवासी लिपियों पर आधारित तोलोंग सिकि लिपि का आज लोकार्पण कर रहे थे। आर्चबिशप तेलेस्फर टोप्पो ने कंप्यूटर पर इस लिपि का प्रयोग भी किया। आर्चबिशप ने कहा कि वास्तविक अर्थों में आज की उपलब्धि झारखंड के इतिहास में मील का एक पत्थर है। अब इस लिपि के माध्यम से राज्य को अलग पहचान देना हमारी जिम्मेदारी है।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक हरिवंश सिंह ने लिपि की सीडी, आर्चबिशप सहित अन्य

लोकार्पण समारोह में उपस्थित आर्च बिशप तेलेस्फोर पी टोप्पो व अन्य।

है। वैश्वीकरण के इस दौर में इस दिशा में आदिवासी लिपि का कंप्यूटर विकास निश्चित तौर पर एक महत्वपूर्ण बात है। डॉ करमा

कहा कि पूर्व में झारखंड की विशिष्ट पहचान के लिए लड़ाई के जारी रहने के दौरान ही इस मुद्दे पर अनेकों बार चर्चा हुई थी और तब किसी के पास कोई सुझाव नहीं था कि इस

विकास निश्चित तौर पर पूरे झारखंड के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रभाकर तिर्की ने कहा कि वर्तमान दौर में यह एक ऐतिहासिक बात है, जिस पर आगे भी शोध और विकास की आवश्यकता है। करीब दो दशक से लिपि के विकास से जुड़े डॉ नारायण उरांव ने इसके विकास के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए प्रकृति के तौर-तरीकों पर आधारित इसके कारणों की व्याख्या की। कंप्यूटर पर इस लिपि का विकास करने वाले किसलय ने बताया कि टू-टाइप की लिपि के विकास में उन सभी तथ्यों पर ध्यान दिया गया है, जो किसी भी कंप्यूटर के इस्तेमाल करने वाले की प्राथमिक जरूरतें हैं। उन्होंने इस लिपि के कंप्यूटर विकास से जुड़े चार लोगों सुश्री अनिता, सुश्री किरण के अलावा सुशील और क्रिस्टो से भी अतिथियों का परिचय कराया। श्री किसलय ने बताया कि इस लिपि को निःशुल्क ही उपलब्ध कराया जा रहा है। फादर प्रताप टोप्पो ने समारोह का संचालन किया, जबकि मनोरंजन लकड़ा ने भी इस लिपि के विकास

प्रभात खबर, रांची — 21 नवंबर 2002, गुरुवार 7 — राजधानी

आदिवासी भाषाओं की लिपि के सॉफ्टवेयर की सीडी का लोकार्पण

संवाददाता

रांची, 20 नवंबर : आदिवासी भाषाओं की लिपि तोलोंग सिकि के कंप्यूटर वर्जन *केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर* का आज लोकार्पण किया गया. सत्यभारती सभागार में आयोजित एक समारोह में पत्रकार हरिवंश ने इस सॉफ्टवेयर की सीडी को जारी किया. समारोह में विशिष्ट अतिथि आर्चबिशप तेलेस्फोर पी टोप्पो ने कंप्यूटर में इसे लांच किया. आर्चबिशप ने इस तरह के प्रयास को आज के युग की मांग बताते हुए पूरी टीम को बधाई दी. उन्होंने कहा कि राज्य को एक लिपि मिल जाने से उसकी पहचान बढ़ जायेगी. उन्होंने पंजाब का उदाहरण पेश करते हुए कहा कि लिपि को सर्वमान्य बनाने के लिए इसे एक चुनौती के रूप में लेना होगा. कोई भी काम शुरू करना तो सरल होता है, मगर उसे जारी रखना कठिन होता है. आर्च बिशप ने आह्वान किया कि इस लिपि को अलग पहचान दिलायी जाये, ताकि राज्य उन्नति के शिखर पर पहुंच सके. उन्होंने स्थापना दिवस समारोह की ओर इशारा करते हुए कहा कि राज्य के विकास के लिए इस तरह के आयोजन पर्याप्त नहीं हैं. श्री टोप्पो ने इस लिपि को बढ़ावा देने में हर संभव मदद देने का वादा भी दिया. समारोह में डॉ करमा उरांव ने इसे अनूठा और ऐतिहासिक अवसर करार दिया. उन्होंने कहा कि इस प्रयास से हम वैज्ञानिक युग में प्रवेश कर गये हैं. डॉ उरांव ने कहा कि विकास के लिए अपनी भाषा को बढ़ावा देना जरूरी है और संविधान में भी इस तरह की व्यवस्था प्रदान की गयी है. डॉ उरांव ने झारखंड की जनजातीय भाषाओं की विशेषता का जिक्र करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में 30 भाषाएं हैं, मगर सभी स्वायत्त हैं. उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस लिपि से उन्हें एक सूत्र में पिरोने में मदद मिलेगी. भाजपा नेता विनोद भगत ने अलग राज्य आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि उस वक्त उन्होंने महसूस किया कि बिना लिपि के झारखंड का अस्तित्व व पहचान खतरे में पड़ जायेगी. उसी समय उनलोगों ने इस क्षेत्र में काम करने की ठानी. लिपि विकसित करने के संबंध में श्री भगत ने पेशे से चिकित्सक डॉ नारायण उरांव के योगदान की सराहना की. साथ ही उन्होंने सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए किसलय को धन्यवाद दिया. श्री भगत ने इस लिपि को सर्वमान्य बनाने में मीडिया से सहयोग देने कि अपील की. झारखंड विकास दल के नेता प्रभाकर तिर्की ने इसे 21वीं सदी में आदिवासी आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया. उन्होंने कहा कि इस प्रयास को आगे बढ़ने के लिए टीम स्पिरिट की आवश्यकता है. श्री तिर्की ने सुझाव दिया कि इस लिपि का प्रयोग शिक्षा व कार्यालयों के कामों में किया जाना चाहिए. समारोह में स्वागत भाषण देते हुए मनोरंजन लकड़ा ने कहा कि जनजातीय भाषा के लिए एक लिपि की आवश्यकता थी, जिसे तोलोंग सिकि लिपि से पूरा कर लिया गया. उन्होंने ट्रेस पत्रिका के योगदान का भी जिक्र किया.

लिपि के आविष्कारक डॉ नारायण उरांव ने लिपि के बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताया कि तोलोंग एक जनजातीय पोशाक है जो 24 हाथ लंबे कपड़े की होती है. लिपि के स्ट्रोक्स की जानकारी देते हुए श्री उरांव ने प्रकृति व आदिवासी संस्कृति में समानता के बारे में बतलाते हुए कहा कि दोनों ही घड़ी के विपरीत दिशा में मुख्य कार्य करते हैं. इस लिपि के स्ट्रोक्स भी इसी दिशा में विकसित किये गये हैं. उन्होंने लिपि को दो रूप सेटिंग व सस्पेंडिंग में बांटा. उन्होंने कहा कि सस्पेंडिंग लिपि में हिंदी, बांग्ला, गुरुमुखी लिपि शामिल है. वहीं सेटिंग में तमिल, कन्नड़ आदि लिपि शामिल हैं. श्री उरांव ने सेटिंग लिपि को बेहतर बतलाते हुए कहा कि तोलोंग सिकि लिपि भी इसी रूप में विकसित की गयी है. सॉफ्टवेयर के निर्माता किसलय ने बतलाया कि इसे *प्रभात खबर* के सौजन्य से मुफ्त प्राप्त किया जा सकता है. इसे किसलय डॉट कॉम वेबसाइट से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है. श्री किसलय ने बताया कि इस लिपि को विकसित करने में सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेज मैसूर के निदेशक डॉ फ्रांसिस एक्का का योगदान काफी महत्वपूर्ण है. इसके अलावा डॉ निर्मल मिंज व डॉ करमा उरांव ने भी सराहनीय योगदान दिया. समारोह का संचालन फादर प्रताप टोप्पो ने तथा धन्यवाद ज्ञापन ज्योति टोप्पो ने दिया.

केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर की सीडी जारी करते अतिथि.

KellyTolong Keyboard Map (Phonetic)

तोलोंग सिकि (लिपि) मे अंको (1, 2, 3,... 9) के लिये Alt + 0161 से Alt + 0169 तक प्रयोग करें जैसे:- Alt + 0162 → 2 Alt + 0166 → 6

KellyTolong Software is the Computer Version of Tolong Siki Script, Invented by Dr. Narayan Oraon (TRACE) ©KITS (Kislaya IT Services)

सन 2001 में लिपि बन कर तैयार हुई

■रांची : तोलोंग सिकि लिपि के निर्माता डॉ नारायण उरांव पेशे से चिकित्सक हैं. वे वर्तमान में बिहार के गया में पदस्थापित हैं. उन्होंने 1989 में इस लिपि पर काम करना शुरू किया और काफी प्रयासों के बाद सन 2001 में यह लिपि बन कर तैयार हुई. श्री उरांव ने बताया कि वर्तमान में इस लिपि से दो हाइस्कूलों व 10 प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाई की जा रही है. इसके अलावा जल्द ही मिशनरी स्कूलों में इसकी पढ़ाई शुरू की जायेगी. इसके अलावा मोरहाबादी स्थित कुड़ख भाषा लिपि शिक्षण केंद्र में प्रत्येक रविवार इसी लिपि की जानकारी लोगों को दी जाती है. इस लिपि में *केलगा* व *ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि* पुस्तक बाजार में है.

बेटी के नाम पर तोलोंग सिकि लिपि

■रांची : लिपि को सॉफ्टवेयर के रूप में विकसित करनेवाले किसलय ने सूचना प्राबैधिकी में माइक्रो सर्टिफाइड सोल्यूशन डेवलपर कोर्स किया है. यह कोर्स बिल गेट्स के माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा कराया जाता है. श्री किसलय ने 1983 से पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा. वे धर्मयुग, दिनमान, नवभारत टाइम्स जैसी पत्रिका से जुड़े. इसके अलावा इंडिया टुडे, टाइम्स ऑफ इंडिया, आनंद बाजार ग्रुप जैसे प्रकाशनों से भी जुड़े रहे. श्री किसलय ने वेब इंजीनियरिंग में डायनामिक फॉंट टेक्नोलॉजी को परिष्कृत किया. उन्होंने तोलोंग सिकि लिपि का नाम अपनी बेटी केली के नाम पर *केली तोलोंग सिकि लिपि* रखा.

2. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लिखित **चींचो डण्डी अरा ख़ीःरी** पुस्तक को फा0 जेम्स टोप्पो, *ग्रामगुरू* द्वारा प्रकाषित किया गया।

3. दिनांक 24 दिसम्बर 2002 को अंगरेजी दैनिक The Indian Express में Tolong, a new script, takes tribal dialect to pen, paper,and computer शीर्षक लेख छपा।

The Indian EXPRESS
NEW DELHI ▮ TUESDAY ▮ DECEMBER 24, 2002

PAGE 1 ANCHOR Tolong, a new script, takes tribal dialects to pen, paper, and computer

Now Jharkhand can give it in writing, literally

MANOJ PRASAD
RATU, DECEMBER 23

FOR hundred years, Jharkhand tribals have not had a script. In the past five, courtesy the efforts of one man called Francis Ekka, they have taken a straight leap from there to the 21st century. Now they not only have a script but they also have a book written in Tolong and a software based on it.

Till 1997, Khasi and Santhal were the only tribal languages that could boast of a script, but even these virtually disappeared a century ago. Since then, Jharkhand tribals have had to use Devanagri or English. That year, Ekka, director of the Mysore-based Central Institute of Indian Languages, along with Narayan Oraon, revealed a script called Tolong they had been developing for 10 years. It was a universal script, structured in such a way that it could be used with all the tribal dialects spoken in Jharkhand. A Church-owned publishing house, Satya Bharati, took the onus of making it popular.

The rest is part of tribal history. A Satya Bharati publication, *Kaliga*, (1988) authored by Ekka and Oraon, is now in its third edition, while a software based on Tolong is doing the rounds. Today, in Jharkhand, Tolong is a compulsory subject in at least two schools — Adivasi Vidyalaya in Gumla and Adivasi Bal Vikas Vidyalaya (ABVV), Ratu, 10 km from Ranchi. Since 1999, students from Classes III to VIII have been learning it.

CONTINUED ON PAGE 2

ABVV students reading Tolong

1. **झारखण्ड सरकार** द्वारा विभागीय **पत्रांक 129 दिनांक 18.9.2003** द्वारा कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में **तोलोंग सिकि** को स्वीकृत किया गया तथा इसे *संविधान की आठवीं अनुसूची* में षामिल किये जाने हेतु गृह मंत्रालय, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को अनुषंसा पत्र प्रेषित किया गया है।

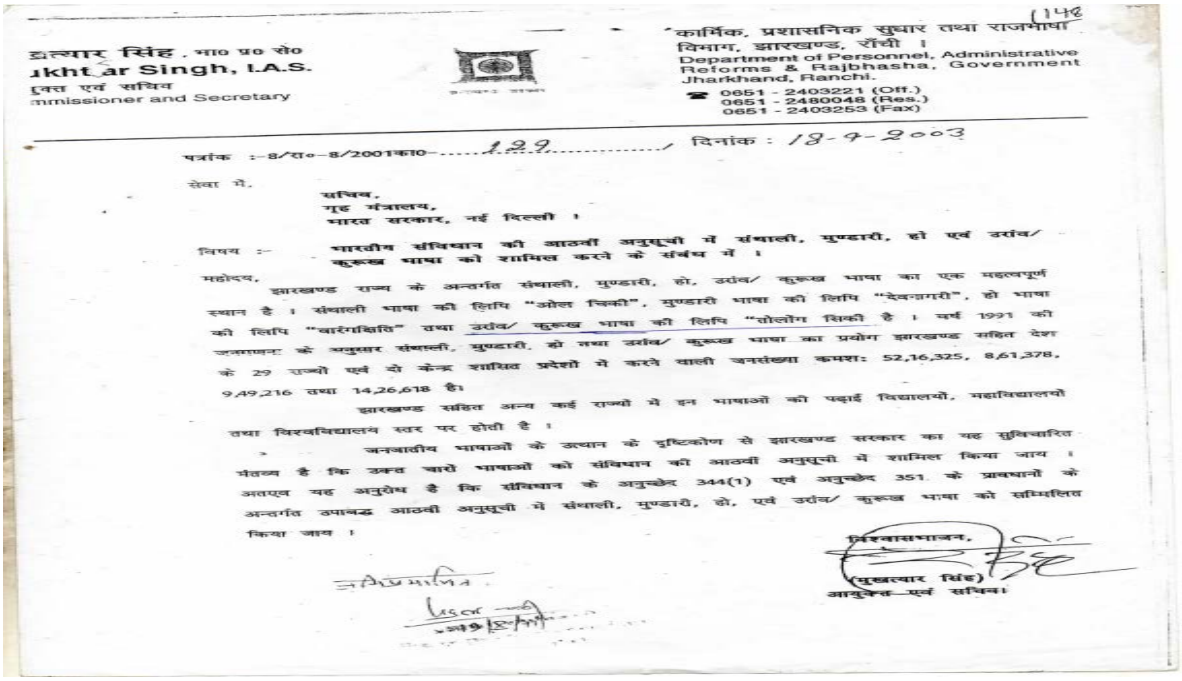

148

ख़्त्यार सिंह, भा० प्र० से०
ukhtiar Singh, I.A.S.
युक्त एवं सचिव
ommissioner and Secretary

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची ।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

पत्रांक :–8/रा०–8/2001का0–......129......., दिनांक : 18-9-2003

सेवा में,
सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :– भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उरांव/ कुरूख भाषा को शामिल करने के संबंध में ।

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उरांव/ कुरूख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है । संथाली भाषा की लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उरांव/ कुरूख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी है । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उरांव/ कुरूख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में करने वाली जनसंख्या क्रमशः 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों में इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है ।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय । अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत उपाबद्ध आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उरांव/ कुरूख भाषा को सम्मिलित किया जाय ।

विश्वासभाजन,
(मुख़्त्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

2. **डॉ0 नारायण उराँव** द्वारा लिखित पुस्तक *तोलोंग सिकि का उद्भव और विकास,* **फादर जेम्स टोप्पो** द्वारा प्रकाषित किया गया तथा डॉ0 बहुरा एक्का, डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 बासंती कुमारी आदि द्वारा दिनांक 06 दिसम्बर 2003 को लोकार्पण किया गया।

रांची, 7 दिसंबर, रविवार, 2003, 4 राजधानी प्रभात खबर

आदिवासियों ने अपनी भाषा खो दी है : डॉ एक्का

संवाददाता

रांची, 6 दिसंबर : आदिवासी भाषाओं में उरांव भाषा की स्थिति अच्छी नहीं है. विनोबा भावे विवि के कुलपति डॉ बहुरा एक्का ने उक्त बातें कही. वे मुख्य अतिथि के रूप में आज स्थानीय संत जॉन्स स्कूल, पुरुलिया रोड के सभागार में 'तोलोङ. सिकि का उदभव एवं विकास' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे.

डॉ एक्का ने कहा कि कुड़ुख भाषा में हर लय है. इस भाषा के हर अवस्था में लय है. बावजूद इसके भाषा की स्थिति दयनीय है. उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि आदिवासी समुदाय के शिक्षित लोग पीछे मुड़कर अपने पूर्वजों को नहीं देखते हैं. यही वजह है कि वे अपनी भाषा व संस्कृति खो रहे हैं. यह अच्छा संकेत नहीं देता है. इससे पूर्व उन्होंने डॉ नारायण उरांव सैंद्रा द्वारा रचित 'तोलोङ. सिकि का उदभव एवं विकास' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया. इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ करमा उरांव, डॉ अगापित तिर्की, किसलय, फादर रंजीत टोप्पो आदि उपस्थित थे. डॉ करमा उरांव ने उरांव ने भाषा की स्थिति के आलोक में तोलोङ. सिकि का उदभव एव विकास पुस्तक को अपनाने की जरूरत पर बल दिया. उन्होंने समाज के विकास के लिए भाषा व संस्कृति को जरूरी बताया. आदिवासियों से अपनी भाषा के संरक्षण का आह्वान किया. अधिवक्ता अलबिनुस मिंज ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि यहां के आदिवासी अपनी भाषा भी नहीं जानते हैं. आपसी संवाद भी दूसरी भाषा में करते हैं. किसलय ने तकनीकी चीजों में भाषा की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला. फादर रंजीत टोप्पो ने संस्कृति को बचाये रखने की बात कही. प्रो बासंती कुमारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की. फादर जेम्स टोप्पो ने कार्यक्रम का संचालन किया. गिरधारी राम गौंझू ने पुस्तक की समीक्षा की. कार्यक्रम में उपस्थित अन्य लोगों में डॉ नारायण भगत, प्रो हरि उरांव, डॉ केके लकड़ा, फादर क्लेमेंट लकड़ा, शिव शंकर उरांव, महावीर उरांव, सीसी बेक, शरण उरांव, निरंजन लकड़ा आदि शामिल थे. इससे पूर्व कार्यक्रम के आरंभ में संत जॉन्स के बच्चों ने स्वागत गान गाये.

पुस्तक का लोकार्पण करते डॉ बहुरा एक्का व अन्य.

हिन्दुस्तान
रांची, रविवार, 7 दिसम्बर, 2003 6

एक झलक

डॉ नारायण उरांव लिखित पुस्तक का विमोचन

पुस्तक का लोकार्पण करते डॉ बहुरा एक्का व अन्य।

रांची । डॉ नारायण उरांव की लिखित पुस्तक, तोलोंड. सिकि लिपि का उद्भव एवं विकास का विमोचन बिनोवाभावे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ बहुरा एक्का ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पुरानी कुड़ुख संस्कृति काफी समृद्धशाली थी। अन्य आदिवासी जाति से अधिक ग्रहणशील रहे। यही गुण हमारा दुर्भाय बन गया और हमारे लिए अभिशाप हो गया। अपनी संस्कृति एवं लिपि को सुरक्षित रखने के लिए सामूहिक तौर पर काम करने की आवश्यकता है। इसकी शुरुआत घर एवं परिवार से होनी चाहिये। डॉ उरांव पेशे से शिशु रोग विशेष हैं। उन्होंने सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंवेज, मैसूर के पूर्व निदेशक स्व. डॉ फ्रांसिस एक्का के निर्देशन में लिपि का विकास करना आरंभ किया था। दस वर्षों की मेहनत के बाद उन्हें इसमें कामयाबी मिली। उनके मुताबिक आने वाले दिनों में यह झारखंड की आम लिपि होगी। अन्य भाषाओं की तुलना में इसमें लिखने में काफी सुविधा होती है। कार्यक्रम का संचालन जेम्स टोप्पो, अध्यक्षता डॉ कुमारी बासंती ने किया। इस अवसर पर डॉ करमा उरांव, डॉ अगापित तिर्की, किसलय, अगस्तुक तिग्गा, फादर रंजीत टोप्पो, डॉ नारायण भगत, डॉ गिरधर राम गंझू भी उपस्थित थे।

वर्ष – 2004

1. डॉ0 नारायण उराँव ने डॉ0 निर्मल मिंज, फा0 जेम्स टोप्पो, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 एतवा उराँव, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, श्री बिरसा बिरचन्द लकड़ा आदि के साथ कई लघु कार्यषाला आयोजित कर एवं *तोलोंग सिकि* के उत्तरोतर विकास को जारी रखते हुए लगातार कार्य किया गया।

2. उत्तरोत्तर विकास के क्रम में *वर्णमाला* के कई चिन्हों को समाज द्वारा सुधार किये जाने का प्रस्ताव आया एवं उसपर भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुधार किया गया।

3. दिनांक 04 नवम्बर 2004 को मोरहाबादी मैदान, राँची में आयोजित, आदिवासी चेतावनी महारैली में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करनवाले 15 लोगों को सम्मानित किया गया। भाषा–लिपि आविष्कार में योगदान के लिए पं0 रघुनाथ मुर्मू , डॉ0 नारायण उराँव, श्रद्धेय लाको बोदरा के परिजन और मदुराय मुडा को सम्मानित किया गया।

हिन्दुस्तान

रांची, शुक्रवार, 05 नवम्बर, 2004

आदिवासी चेतावनी महारैली में मंच पर देवकुमार धान व अन्य ।

महारैली में जिन्हें सम्मानित किया गया

रांची। आदिवासी चेतावनी महारैली में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करनेवाले 15 लोगों को सम्मानित किया गया। भाषा अविष्कार में योगदान देने के लिए रघुनाथ मुर्मू, डॉ नारायण उरांव, स्व लाको बोदरा के परिजन और मदुराय मुंडा को सम्मानित किया गया। स्वशासन व्यवस्था के लिए हरेंद्रनाथ मुर्मू, दीनु उरांव, अंतु हेम्ब्रम, पौलुस तिड़ू, धर्म के लिए स्व रामदास किस्कू के परिजन, शिवप्रकाश भगत, भन्ना पाठ पिंगुआ और जमीन बचाने के लिए योगदान देने वालों में बस्ता सोरेन, तेजबहादुर उरांव, शहीद गंगाराम कालुंडिया और शहीद लड़ाऊ कच्छप के परिजनों को सम्मानित किया गया।

हेसल में की गयी प्रार्थना सभा : हेसल सत्यारी सरना स्थल पिस्कामोड़ द्वारा प्रार्थना सभा एवं शुद्धिकरण का आयोजन किया गया। शिवा कच्छप की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्ण विधि–विधान के साथ पाहन राजाओं ने पूजा–अर्चना की। चमरा लिंडा ने पाहन राजा का माला पहनाकर स्वागत किया। वहां मां सरना का झंडा लगाकर लोगों ने आदिवासी एकता बनाये रखने का संकल्प लिया। पूजा के बाद लोग महारैली में भाग लेने के लिए कूच कर गये। रैली में कांग्रेस विधायक देवकुमार धान भी पैदल चल रहे थे।

झलकियां

- *रैली में भाग लेने के लिए पड़हा राजा काठ के घोड़े पर सवार होकर पहुंचे।*
- *कुछ लोग बेंजो की धुन पर तो कुछ ढोल–मांदर की थाप पर नाचते गाते चल रहे थे।*
- *भाषण के दौरान बीच–बीच में ढोल–नगाड़ा और घंटा बजाकर नेताओं का उत्साहवर्द्धन किया जा रहा था।*
- *अपराह्न तीन बजे एक दर्जन से अधिक विशालकाय सरना झंडा लेकर लोग जुलूस के रुप में मोरहाबादी मैदान पहुंचे।*
- *एसोएस के सचिव सतीश भगत दोपहर 12 बजे से ही माइक थामे हुए लोगों को संबोधित कर रहे थे।*
- *मंच के बीचो–बीच आगे की ओर भगवान बिरसा मुंडा की विशाल प्रतिमा लगायी गयी थी।*
- *महारैली में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुयीं, जो नाच–गा रही थीं।*
- *बीच–बीच में आदिवासी जमीन लेकर रहेंगे, शोषण अब बर्दाश्त नहीं करेंगे का नारा लगाया जा रहा था।*

वर्ष – 2005

1. डॉ0 निर्मल मिंज द्वारा केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर का भ्रमण कर, भाषाविद् **श्री आर. इलांगियन** को राँची में कार्यषाला आयेजित करने हेतु अनुरोध किया गया। इस कार्यषाला के लिए डॉ0 मिंज द्वारा रेभ. एफ. हॉन का कुँड़ुख़ ग्रामर का कुँड़ुख़ अनुवाद एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा तैयार किया हुआ पारिभाषिक षब्दावली की सूची, श्री आर. इलांगियन को सौंपा गया, जो दिसम्बर 2005 के कार्यषाला का आधार बना।

CENTRAL INSTITUTE OF INDIAN LANGUAGES
(Ministry of Human Resources Development, Govt. of India) Manasagangotri, Mysore- 570 006

AND

JHARKHAND TRIBAL WELFARE RESEARCH INSTITUTE
(Govt. of Jharkhand) Morabadi, Ranchi – 834 008

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. NARAYAN ORAON has attended productively the Workshop on 'Terminology Planning in Kurukh' from 9th December 2005 to 18th December 2005 and he participated in all the discussions for determining the terminology to be used in writing Kurukh grammar and material production for teaching Kurukh as a mother tongue. His contribution to the workshop has resulted in the compiling of the booklet 'Technical Terminology in Kurukh – 1'.

Dr. PRAKASH CHANDRA ORAON
COORDINATOR, JTWRI, RANCHI

R. ELANGAIYAN
COORDINATOR, CIIL, MYSORE

2. *कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक षब्दावली नामकरण यो जना,* केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के भाषाविद् **श्री आर. इलांगियन** एवं झारखण्ड जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के निदेषक, **डॉ0 प्रकाष चन्द्र उराँव** के संयुक्त निर्देषन में दिनांक 09 से 18 दिसम्बर 2005 तक लगभग 30 प्रतिभागियों के साथ सेमिनार सम्पन्न हुआ, जहाँ डॉ0 नारायण उराँव भी एक प्रतिभागी बने।

वर्ष – 2006

1. **श्री आर. इलांगियन** से भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार नई उर्जा प्राप्त कर **डॉ0 नारायण उराँव** द्वारा *तोलोंग सिकि* के आधार पर कुँड़ुख़ व्याकरण एवं पारिभाषिक षब्दावली विषय पर पुस्तक तैयार किये जाने सुझाव प्राप्त हुआ।
2. *तोलोंग सिकि* में साहित्य सृजन एवं प्रचार–प्रसार हेतु *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा* का गठन किया गया तथा *इसके* माध्यम से कुँड़ुख़ भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की दिषा में जनजागरण अभियान आरंभ हुआ।
3. *कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया* का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 14–15 अक्टूबर 2006 को राँची, झारखण्ड में सम्पन्न हुआ तथा *तोलोंग* ***सिकि*** पर परिचर्चा हुई।

वर्ष – 2007

1. *कुँड़ुख़ (उराँव) प्रगतिषील समाज, छत्तीसगढ़* द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन, दिनांक 12.02.2007 ई0 को मुख्य अतिथि राज्यपाल ई0 एस0एल0 नरसिम्हन ही उपस्थिति में सम्पन्न। सम्मेलन से पूर्व दिनांक 12.02.2007 ई0 को *तोलोंग सिकि* पर विस्तृत कार्यषाला सह परिचर्चा तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये की जाने की योजना पर विचार–विमर्ष हुई।

जनसत्ता | राजधानी | जनसत्ता, रायपुर, १२ फरवरी २००७ ११

आदिवासी समाज शिक्षा को बनाए हथियार : नरसिम्हन

कुडुख (उरांव) प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ़ का वार्षिक सम्मेलन

रायपुर, ११ फरवरी (जनसत्ता)। राज्यपाल ई.एस.एल. नरसिम्हन ने आज कुडुख (उरांव) प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ़ के वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए कहा कि आधुनिक शिक्षा ने हमारे आदिवासी भाई-बहनों को राज्य व राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराया है।

शिक्षा ही वह हथियार है जिससे गरीबी, बेरोजगारी दूर करने के साथ-साथ आर्थिक हालात मजबूत किए जा सकते हैं। ग्रामीण व वन अंचलों में रहने वाले लोगों को शिक्षा के क्रांतिकारी व परिवर्तनकारी रूपों से लाभान्वित करने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वनों में रहने वाले हमारे ये आदिवासी भाई-बहनों में प्रतिभा की कमी नहीं है। ये छुपे रूस्तम हैं जिनकी प्रतिभा को और अधिक आगे लाने की जरूरत है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अंबिकापुर महापौर प्रबोध मिंज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पर्यटन व संस्कृति मंत्री बृजमोहन अग्रवाल उपस्थित थे।

नरसिम्हन ने आगे कहा कि दुर्गम आदिवासी अंचलों में लोगों को शिक्षा सुलभ कराने के उद्देश्य से शासन द्वारा प्रयास किए गए हैं। इनसे व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है किंतु अभी भी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। इसके लिए स्वयंसेवी संस्थाओं और सामाजिक संगठनों को आगे आकर शासन के साथ तालमेल बनाकर कार्य करने की जरूरत है।

उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि शासन-प्रशासन में अनेक पदों पर आसीन होना इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा के जरिये जीवन स्तर में काफी परिवर्तन आया है। नरसिम्हन ने कहा कि इस सामाजिक संगठन के साथ 'प्रगतिशील' जुड़ा हुआ है और अब यह सिद्ध करने की जरूरत है कि इसके माध्यम से हम आने वाले सालों में अपने और कितने भाई-बहनों को प्रगति की राह में आगे लाते हैं।

संस्कृति व पर्यटन मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि किसी भी समाज में आगे बढ़ने के लिए एकता की आवश्यकता होती है। खुशी की बात है कि पूरे छत्तीसगढ़ व देश में कुँड़ुख समाज ने सबसे ज्यादा तरक्की की है। उन्होंने कहा कि समाज में आगे बढ़ चुके लोगों की विशेष जिम्मेदारी है कि वे समाज के १० अन्य लोगों को भी आगे बढ़ायें और पूरा देश ही हमारा समाज है। उन्होंने कहा जंगल व वनों से घिरे क्षेत्रों में विकास की रोशनी पहुंचे, इसके लिए सभी को विशेष प्रयास करना होगा तथा नीति तय करनी होगी कि वन उनकी प्रगति में सहायक बने या कि अवरोधक। उन्होंने कहा कि वनवासी समाज को विकास की धारा में लाना होगा और इसके लिए उन्हें नौकरियों के अलावा स्वरोजगार के अन्य क्षेत्रों में भी आना चाहिए।

राज्यपाल ईएस नरसिम्हन ने रविवार को कुडुख उरांव प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ़ के वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ किया।

2. **षिक्षा मंत्री, झारखण्ड सरकार श्री बंधु तिर्की,** माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी आदि द्वारा दिनांक 03 अप्रैल 2007 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन **केलितोलोंग** फॉन्ट के **द्वितीय संस्करण** का लोकार्पण किया गया।

जनजातीय भाषा एकेडमी का गठन इसी माह : बंधु

भाषा किसी समुदाय की पहचान होती है : कार्डिनल

केंद्रीय पुस्तकालय में कुड़ुख भाषा की लिपि का लोकार्पण

रांची। शिक्षा मंत्री बंधु तिर्की ने कहा है कि जनजातीय भाषा एकेडमी का गठन अप्रैल माह के अंत तक कर लिया जाएगा। साथ ही इसका पूरा ढांचा भी तैयार कर लिया जाएगा। श्री तिर्की तीन अप्रैल को रांची वि.वि. केंद्रीय पुस्तकालय में कुड़ुख भाषा लिपी का लोकार्पण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि कुड़ुख भाषा की किताबे इस सत्र से पहली से आठवीं का क्लास के बच्चों को मुफ्त में मिल सके इसकी तैयारी लगभग पूरी कर ली गयी है। उन्होंने कहा कि सभी कालेजों में इस भाषा की पढ़ाई हो इसकी व्यवस्था राज्य सरकार जल्द करेगी। इस मौके पर शिक्षा मंत्री ने विभाग की ओर से एक लाख रूपये देने की घोषणा की। लिपी का शोध संकलन करने वाले नारायण उरांव को 1 लाख 50 हजार रूपये देने की घोषणा की। इस अवसर पर विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्डिनल पी. तेलेस्फर टोप्पों ने कहा कि भाषा किसी समुदाय की पहचान होती है। उन्होंने कहा कि कुड़ुख भाषा की लिपि बन गयी है और इसे समृद्धशाली बनाने की को. शिश सभी को मिलकर करनी चाहिए। श्री टोप्पो ने कहा कि एकजुट होकर यह कार्य करना होगा। श्री टोप्पो ने इस मौके पर कहा कि भाषा के साथ हीं हमारी अस्मिता जुड़ी हुयी है। भाषा हीं हृदय की कुंजी है। कांग्रेस के विधायक निर्मल तिर्की ने कहा कि जिस तरह से संथाली भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है इसी तरह से कुड़ुख भाषा को भी आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए। उन्होंने कहा कि इस भाषा को इतना विकसित किया जाए कि पूरा विश्व इस भाषा के बारे में जान सके। पूर्व विधायक दुखा भगत ने कहा कि भाषा के बिना समाज गूंगा है। श्री भगत ने कहा कि भाषा तो हमलोग विकसित कर लिये हैं लेकिन इस भाषा को सिखाने के लिए विशेषज्ञों की टीम को रखा जाए। उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति को एक साथ लेकर चलने से ही इस भाषा को और उरांव समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। इस अवसर पर जॉन लकड़ा, डा. निर्मल मिंज, डा. करमा उरांव, फादर अगस्टीन तिर्की, नारायण उरांव एवं किसलय ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभी वक्ताओं ने इस भाषा के विकास और कुड़ुख (उरांव) समाज को समृद्धशाली बनाने पर जोर दिया। इसी संदर्भ में 15 अप्रैल को बैठक का आयोजन किया गया है।

कुड़ुख लिपि का लोकार्पण करते बंधु तिर्की एवं कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो। छाया : आज

3. *कुँड़ुख़ (उराँव) उन्नति समाज, झारखण्ड* द्वारा आयोजित कुँड़ुख़ महासम्मेलन – 2007, **डॉ0 करमा उराँव** की अध्यक्षता में दिनांक 02 एवं 03 मई 2007 ई0 को समाज सेवा केन्द्र, पुरूलिया रोड राँची में सम्पन्न। इस दो दिवसीय सम्मेलन में *तोलोंग सिकि* की विस्तृत परिचर्चा तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये की जाने की योजना पर विचार–विमर्ष हुआ।

www.hindustandainik.com

रांची

हिन्दुस्तान रांची, गुरुवार, 03 मई, 2007

कुड़ुख उरांव उन्नति समाज का महासम्मेलन -2007 में

कुड़ुख परिष्कृत भाषा: बिशप बरवा

एसडीसी सभागार में बुधवार को आयोजित महासम्मेलन में मंच पर बैठे वक्ता व उपस्थित लोग।

रांची (सं)। कुड़ुख (उरांव) एक परिष्कृत भाषा है, जो लोक कल्याण व संस्कृति की एकजुटता में सहायक है। आने वाले दिनों में यह भाषा वृहत रूप लेगी। उक्त बातें कुड़ुख महासम्मेलन 2007 में मुख्य अतिथि बिशप विंसेंट बरवा ने कही। महासम्मेलन का आयोजन दो मई को एसडीसी सभागार में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सदस्यों से कहा कि इसे सीखकर इसकी क्षमता बढ़ायें। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और डॉ एक्का ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर सम्मेलन का उद्घाटन किया। साथ ही कुड़ुख उरांव उन्नति समाज के अध्यक्ष डॉ करमा उरांव ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति डॉ बहुराय एक्का ने भी कुड़ुख भाषा के महत्व की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह तभी संभव होगा, जब हम एकताबद्ध होकर आगे बढ़ें। बिशप पीडीएस तिर्की और रेव निरंजन एक्का ने भी संयुक्त रूप से कुड़ुख गीत गाकर भाषा संस्कृति की एकता प्रदर्शित की।

कार्यक्रम के बाद के सत्र में कुड़ुख उरांव समुदाय के इतिहास और अरा सीरी (पौराणिक कथाओं) पर विचार–विमर्श हुआ। तीसरे सत्र में तोलोंग सिकी (कुड़ुख लिपि) पुस्तिका का विमोचन किया गया, कुड़ुख समुदाय की दशा और दिशा पर फादर लिनुस कुजूर व फादर पीटर महेन्द्र तिग्गा ने विचार व्यक्त किये। अंत में खुला अधिवेशन हुआ। कार्यक्रम में वक्ताओं के अलावा डॉ रामेश्वर उरांव, देवकुमार धान, जुगेश उरांव, उषा रानी मिंज, आरडवी कुजूर, राणा प्रताप उरांव, पवन एक्का, फादर अगस्टीन केरकेट्टा,डॉ शांति खलखो, डॉ हरि उरांव, डॉ हरिनारायण भगत, डॉ नारायण भगत, प्रो. रामकिशोर भगत, प्रो. महामणि कुमार, प्रो कैलाश उरांव, फादर अलबिनुस मिंज, समीजीरा टोप्पो, प्रमोद कुजूर, हेमंत टोप्पो ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के आयोजन में प्रदीप एक्का, विजय आशीष कुजूर, अरविंद कच्छप, अनमोल मिंज व अन्य ने उल्लेखनीय सहयोग किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ निर्मल मिंज ने किया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, अंडमान निकोबार, बंगाल, नेपाल व झारखंड से तीन सौ से ज्यादा लोग शामिल हुए।

4. *कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया* का दूसरा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 23–24 नवम्बर 2007 को नई दिल्ली में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

वर्ष – 2008

1. प्राथमिक पुस्तिका **कइलगा** का संषोधित चतुर्थ संस्करण सत्यभारती, राँची से प्रकाषित।

   आदिवासी उराँव साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सोसायटी, बालूरघाट, प0 बंगाल द्वारा आयोजित, श्री बन्धन उराँव की अध्यक्षता में दिनांक 28.12.2008 ई0 को *वार्षिक सम्मेलन – 2008* सम्पन्न। इस सम्मेलन में *बालूरघाट, प0 बंगाल* के प्रतिभागियों ने *तोलोंग सिकि* को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए, संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने का निर्णय लिया गया।

2. श्री बिनोद भगत, लोहरदगा के संयोजन में ग्राम – ख़ाख़े, जिला – लोहरदगा के कुँड़ुख़ भाषियों द्वारा 02 फरवरी 2008 को ''कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि'' विषय पर परिचर्चा, जहाँ गाँव वालों द्वारा विषेष कर **श्री दिउड़ु भगत** द्वारा तीन प्रष्न उठाये गये –

   (क) अखड़ा, एन्देर गे सुना मंज्जा (क्यों सुना हुआ) ?
   (ख) धुमकुड़िया, एन्देर गे नट्ठरा (क्यों समाप्त हुआ) ?
   (ग) पड़हा, एन्देर गे मल उक्की (क्यों नहीं बैठता है) ? .....

   यह तीन प्रष्न, समाज को नई दिषा में सोचने के लिए विवष किया। ये प्रष्न, डॉ0 नारायण उराँव के मन–मस्तिस्क में नई जनचेतना एवं ओज जगाई।

3. श्री बिनोद भगत, लोहरदगा की संयोजन में फिर से 04 मई 2008 को बी0 एस0 कॉलेज, लोहरदगा के प्रांगन में कुँड़ुख़ नवयुवक–नवयुवतियों के साथ **तोलोंग सिकि : क्यों और क्या ?** विषयक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई, जहाँ डॉ0 उराँव ने लगभग 200 छात्र–छात्रों एवं भाषा प्रेमियों के बीच अपनी कार्य योजना के संबंध में बतलाया।

4. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का तीसरा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 11–14 अक्टूबर 2008 को सिलिगुड़ी, प0 बंगाल में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

5. **डॉ0 बिन्दु पहान,** ए0 बी0 एम0 कॉलेज, गोलमुरी, जमषेदपुर की संयोजन में सोनारी, टाटा में **तोलोंग सिकि : क्यों और क्या ?** विषयक विचार गोष्ठी डॉ0 नारायण उराँव द्वारा प्रस्तुत करवाया गया।

6. श्री थदि्दयुस लकड़ा एवं श्री महेष लकड़ा के नेतृत्व में कोलकता में कार्यरत नौकरी पेषा वाले कुँड़ुख़ भाषा प्रेमी बन्धुओं द्वारा आयोजित *''कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि''* विषयक एक दिवसीय कार्यषाला में डॉ0 नारायण उराँव का *तोलोंग सिकि* पर विस्तृत प्रस्तुति।

7. कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरडिप्पा, भगीटोली,, डुमरी स्कूल के संचालकों में से श्री अगस्तिन बखला एवं श्री बिनोद भगत सहित *लूरएड़पा* के षिक्षकों के कड़ी मेहनत का प्रतिफल था कि कुल 39 छात्र कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि में लिखने के लिए तैयार हुए और उन 39 छात्रों को झारखण्ड सरकार द्वारा अपनी लिपि में परीक्षा लिखने की अनुमति मिलने के लिए तोलोंग सिकि में पाठ्य पुस्तक दिखलाने की मांग हुई। जिसके पूरा होने पर अनुमति मिलने का आश्वासन मिला। कम समय में, भगीरथ प्रयास के फलस्वरूप दिसम्बर 2008 में लिपि में लिप्यन्तरण सम्पन्न हुआ।

वर्ष – 2009

1. **चींचो डण्डी अरा ख़ी:री** एवं **ख़द्दी चन्दो** पुस्तक का *तोलोंग सिकि* में लिप्यन्तरण तथा सत्यभारती राँची, द्वारा प्रकाषन, जो डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं लूरडिप्पा स्कूल के संचालकों यथा श्री अगस्तिन बखला एवं श्री बिनोद भगत सहित *कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा भगीटोली, डुमरी* के षिक्षकों के कड़ी मेहनत का प्रतिफल है।

डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'(दायें) एवं फा0 अगस्तिन केरकेट्टा (बाएँ)
जिनकी कड़ी मेहनत से **चींचो डण्डी अरा ख़ीःरी** एवं **ख़द्दी चन्दो**
पुस्तक का *तोलोंग सिकि* में लिप्यन्तरण संभव हुआ।

2. झारखण्ड अधिविद्य परिषद द्वारा **वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009** के **कुँड़ुख़ भाषा पत्र** को अपनी लिपि *तोलोंग सिकि* में परीक्षा लिखने हेतु **प्रेस विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009** द्वारा अनुमति प्रदान किया गया।

1 फरवरी, 2009

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुड़ुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि–1–12/2002–565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुड़ुख कथा खोड़हा लुर एड़पा मागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुड़ुख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार
ह./-
(पोलिकार्प तिर्की)
सचिव,
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09
D.O.P : 20.02.09

3. अंगरेजी माध्यम स्कूल **कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोला, डुमरी (गुमला)** के 39 छात्रों द्वारा मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा *तोलोंग सिकि* में लिखा गया तथा वे हिन्दी एवं अन्य विषयों भी अच्छे अंकों से प्राप्त किये।

4. *कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया* का चौथा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 11–14 अक्टूबर 2009 को रायपुर, छत्तीसगढ़ में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

वर्ष – 2010

1. **तोलोंग सिकि दिवस,** 20 फरवरी 2010 को सत्य भारती, राँची में ऑग्जीलरी विषप श्री विनय कण्डुलना, डॉ0 लक्ष्मण उराँव, डॉ0 नारायण भगत, ई0 अजित मनोहर खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा डॉ0 नारायण उराँव आदि तथा रिम्स राँची के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति में मनाया जाना। इस अवसर पर ***तोलोंग सिकि डॉट कॉम*** नामक वेवसाइट का षुभारंभ हुआ। यह वेबसाइट में श्री किसलय के सहयोग से तैयार हुआ है।

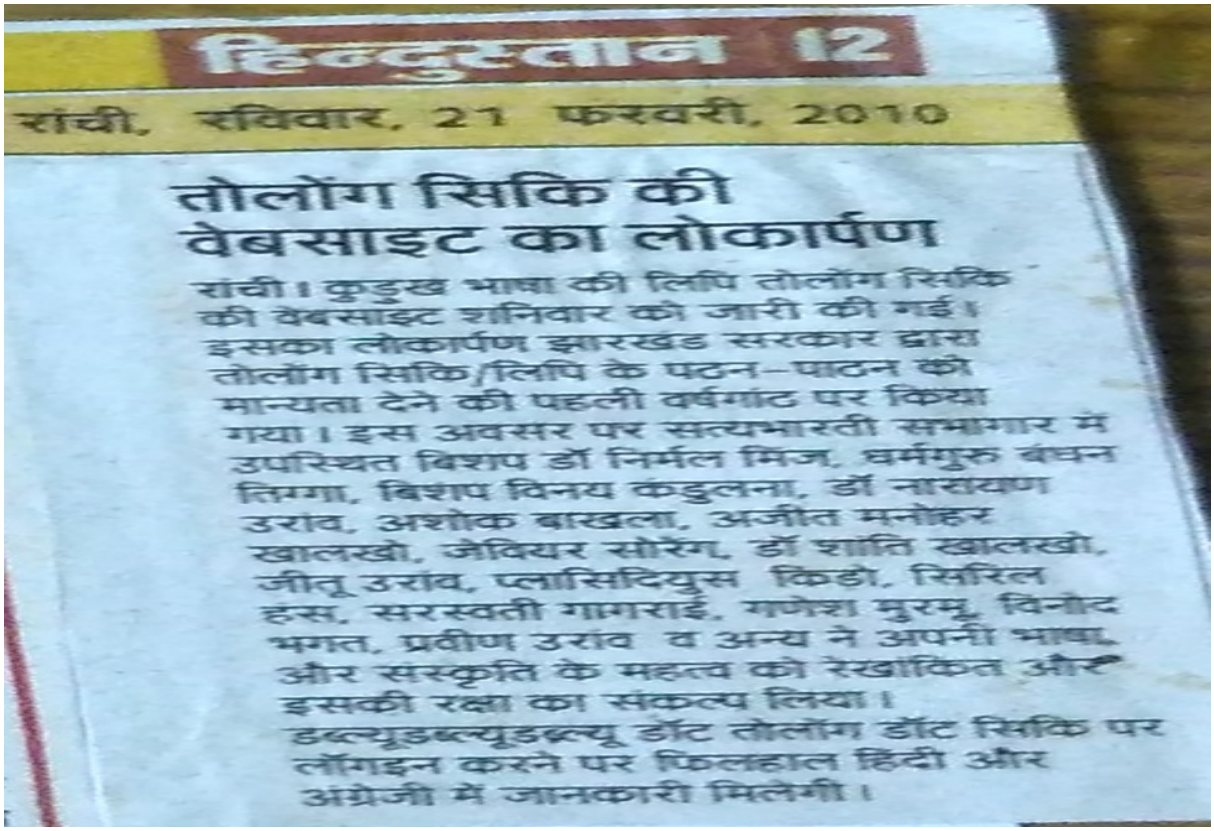

हिन्दुस्तान 12

रांची, रविवार, 21 फरवरी, 2010

तोलोंग सिकि की वेबसाइट का लोकार्पण

रांची। कुड़ुख भाषा की लिपि तोलोंग सिकि की वेबसाइट शनिवार को जारी की गई। इसका लोकार्पण झारखंड सरकार द्वारा तोलोंग सिकि/लिपि के पठन–पाठन को मान्यता देने की पहली वर्षगांठ पर किया गया। इस अवसर पर सत्यभारती सभागार में उपस्थित बिशप डॉ निर्मल मिंज, धर्मगुरु बंधन तिग्गा, बिशप विनय कंडुलना, डॉ नारायण उरांव, अशोक बाखला, अर्जीत मनोहर खालखो, जेवियर सोरेंग, डॉ शांति खालखो, जीतू उरांव, प्लासिदियुस किंडो, सिरिल हंस, सरस्वती गागराई, गणेश मुरमू, विनोद भगत, प्रवीण उरांव व अन्य ने अपनी भाषा और संस्कृति के महत्व को रेखांकित और इसकी रक्षा का संकल्प लिया। डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट तोलोंग डॉट सिकि पर लॉगइन करने पर फिलहाल हिंदी और अंग्रेजी में जानकारी मिलेगी।

2. **कुँड़ुख़ भाषा की पारिभाषिक षब्दावली एवं व्याकरण** विषय पर XISS राँची में 11 दिसम्बर 2010 को सेमिनार सम्पन्न हुआ तथा सेमिनार में लिए गये निर्णय के आधार पर व्याकरण तैयार करने की दिषा में कार्य आरंभ हुआ।

3. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का पांचवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22–44 अक्टूबर 2010 को **बोंगईगाँव, असम** में तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

4. **नवीन डोमन थियोलॉजिकल कॉलेज, मलार,** ईटकी मोड़, राँची में वर्ष 2010 से *विषप डॉ0 निर्मल मिंज* के नेतृत्व में कुँड़ुख भाषा एवं लिपि, *तोलोंग सिकि* की पढ़ाई आरंभ।

5. दिनांक 25 एवं 26 नवम्बर 2010 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में साहित्य अकादमी एवं राँची विष्वविद्यालय, राँची के संयुक्त तत्वधान में समकालीन बदलते समाज में मातृभाषाओं की भूमिका विषयक संगोष्ठी संपन्न हुई। इस संगोस्ठी में तोलोंग सिकि बींड़ना बिड़हा की ओर अध्यक्ष फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ0 नारायण उराँव, साहित्य अकादमी के प्रतिनिधियों से मिलकर कुंडुख़ भाषा एवं लिपि के संबंध में बांते रखी।

6. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा साहित्य अकादमी के प्रतिनिधियों से जनजातीय भाषा–साहित्य एवं लिपि के विकास हेतु साहित्य लेखन एवं प्रकाषन में मदद करने की अपील की गई। इस अपील पर साहित्य अकादमी के प्रतिनिधियों ने कहा कि साहित्य अकादमी के द्वारा उसी भाषा पर कार्य किया जाता है जो संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल है। गैर अनुसूचित भाषा के लिए काम करने में काफी कठिनाई है।

वर्ष – 2011

1. दिनांक 06 जनवरी 2011 को अखिल भारतीय तोलोंग सिकि बींड़ना बिड़हा का नाम बदलकर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा रखा गया।

2. दिनांक 10 जनवरी 2011 को **पड़हा गुरू स्व0 भिखराम भगत** की **74 वीं जयन्ती** के अवसर पर बलीजोड़ी, राउरकेला, ओड़िसा में श्री मंगला खलखो की अगुवाई में *तोलोंग सिकि* को *कुँड़ुख़ भाषा की लिपि* के रूप में समर्थन तथा *डॉ0 नारायण उराँव* द्वारा पड़हा प्रेमियों के बीच अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत किया गया।

3. **तोलोंग सिकि दिवस,** 20 फरवरी 2011 को झारखण्ड जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के सभागार में, विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग के ***कुलपति डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत,*** पूर्व कुलपति **डॉ0 विक्टर तिग्गा** एवं महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड के सलाहकार **डॉ0 प्रकाष चन्द्र उराँव** की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

झारखंड न्यूजलाइन 5
रांची, शुक्रवार, 18 फरवरी, 2011

तोलोंग सिकि: दिवस 20 को

कुड़ुख भाषा की लिपि है तोलोंग सिकि :, जनक हैं डॉ नारायण उरांव सैंदा, अब तक उपेक्षा का शिकार, नहीं होती प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाई, झारखंड सरकार ने 2009 में मान्यता दी, हाईस्कूलों में पिछले साल कुछ शिक्षकों की हुई बहाली.

कोरनेलियुस मिंज

रांची : जनजातीय भाषा के विकास को लेकर सरकार भले ही चिंतित न हो, लेकिन बुद्धिजीवी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. उनका मानना है कि जिस समुदाय की भाषा विलुप्त हो जाती है, तो समुदाय का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है. भाषा से संस्कृति भी बची रहती है. झारखंड के जनजातियों की भाषा आज भी उपेक्षा का शिकार है. भाषाओं को बचाने के लिए लिपि का भी आविष्कार किया जाने लगा है. जनजातीय भाषा में संताली व हो भाषा की अपनी लिपि बनायी गयी है. वहीं कुड़ुख भाषा की लिपि को भी मान्यता दी गयी है, लेकिन अब तक लिपि तैयार होने के बावजूद पढ़ाई शुरू नहीं हो पायी है. संताली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भी किया गया है. तोलोंग सिकि: के जनक डॉ नारायण उरांव सैंदा पेशे से डॉक्टर होते हुए भी लिपि बनाने का जो बीड़ा उठाया, वह काबिले तारीफ है. यह समाज की पीड़ा को दर्शाता है. पेश है उनसे बातचीत के अंश :

सवाल : लिपि से क्या फायदा होगा.

जवाब : तोलोंग सिकि: आदिवासी भाषाओं के विकास के लिए बनायी गयी है. भाषा के बिना समुदाय का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है. वर्तमान में कुड़ुख भाषा समूह इसे अपनी लिपि के रूप में स्वीकार कर चुका है.

सवाल : आप पेशे से डॉक्टर हैं, फिर लिपि बनाने का मन कैसे बनाया.

जवाब : समाज को बचाने के लिए मैंने यह काम करने का साहस जुटा पाया. जब मैं शहर में पढ़ने आया, तब एहसास हुआ कि समुदाय की कोई पहचान नहीं है. भाषा से लोग घृणा करते हैं. वहीं भाषा को बनाये रखने के लिए लिपि की जरूरत थी.

सवाल : आज भी जनजातीय परिवार के बच्चों को अपनी भाषा से प्यार नहीं है.

जवाब : अब काफी बदलाव आया है. पहले तो लोग बताने में भी शर्माते थे कि वे उरांव हैं, लेकिन अब कुछ युवा इस ओर ध्यान दे रहे हैं. परिवार से ही अपनी भाषा को प्रोत्साहन दिया जा सकता है. अभिभावक अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा को जरूर सिखायें. बोलने के लिए प्रेरित करें. अंग्रेजी व हिंदी के साथ–साथ अपनी मातृ भाषा को बोलना व सीखना जरूरी है.

सवाल : भाषा अगर नहीं रहेगी, तो क्या होगा.

जवाब : अगर अपनी मातृभाषा नहीं रही, तो फिर समुदाय का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा. क्योंकि भाषा से ही संस्कृति व परंपरा बनी रहती है. बच्चों का झुकाव पढ़ाई में होगा. ड्रॉप आउट बच्चों की संख्या में कमी आयेगी.

सवाल : आपका प्रयास क्या है.

जवाब : संविधान की आठवीं सूची में कुड़ुख भाषा को शामिल कराना मेरा प्रयास होगा. इस दिशा में प्रयास जारी है.

सवाल : इससे तो आदिवासियों में फूट हो सकती है.

जवाब : तोलोंग सिकि: आदिवासियों की लिपि है. इसे अन्य जनजातीय समुदाय भी अपनायेंगे ऐसी उम्मीद है. रही बात संविधान के आठवीं सूची में शामिल करने, इससे आदिवासियों को फायदा होगा.

सवाल : प्राइमरी स्कूल में आज तक पढ़ाई शुरू नहीं हो पायी है.

जवाब : सरकार में इच्छा शक्ति का अभाव है. सरकार नहीं चाहती है कि आदिवासी आगे बढ़ें, उनका विकास हो. अगर उनकी भाषा में पढ़ाई शुरू होगी, तो उनकी पकड़ मजबूत होगी. विषय वस्तु को आसानी से समझ सकते हैं. अंग्रेजी में भी मजबूती आयेगी. जागरुकता आयेगी व स्वाभिमान बढ़ेगा. कांग्रेस के एक नेता कामराज अध्यक्ष भी बने थे, जिन्हें सिर्फ तमिल भाषा आती थी. सो हम नहीं कह सकते हैं जनजातीय भाषा की पढ़ाई से विकास नहीं हो सकता. वास्तव में नेता व सरकार एक साजिश के तहत जनजातियों को आगे बढ़ने से रोकना चाहते हैं.

तोलोंग सिकि : एक परिचय

कुड़ुख समुदाय ने इस लिपि को अपनी भाषा की लिपि मान लिया है. इसके जनक हैं डॉ नारायण उरांव सैंदा.उन्होंने 1989 में लिपि बनाने की शुरुआत की थी. 1995 में लिपि बनकर तैयार हुई. समाज के सामने रख दिया. तोलोंग सिकि: को 2001 में कंप्यूटरीकृत किया गया. कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो ने लॉन्च किया था. 2009 में तोलोंग सिकि: को झारखंड सरकार ने मान्यता दी. 2003 में राजनीतिक रूप से मान्यता मिली थी. छत्तीसगढ़ में भी तोलोंग सिकि: को कुड़ुख भाषा लिपि के रूप में मान्यता दिलाने की कोशिश हो रही है. फरवरी 2010 में इसका बेबसाइट का लॉन्च हुआ. झारखंड का एकमात्र स्कूल है लूरडिपा, जहां के बचे तोलोंग सिकि: लिपि में परीक्षा देते हैं. इस भाषा की पढ़ाई के लिए पिछले साल कुछ शिक्षकों की हुई बहाली. झारखंड माध्यमिक शिक्षा परिषद, रांची ने विज्ञप्ति संख्या 23, 2001 दिनांक 20 जून 2001 को अधिसूचना जारी कर क्षेत्रीय भाषा को शामिल किया. तोलोंग सिकि: बनाने में रांची विश्वविद्यालय रांची, टीआरआई, सत्य भारती के विद्वानों का योगदान रहा. ट्रेस संस्था के बैनर तले लिपि बनी. 20 फरवरी को लिपि को मान्यता मिली थी. इसीलिए तोलोंग सिकि: दिवस 20 फरवरी को मनाया जाता है.

लिपि निर्माता का परिचय

डॉ नारायण उरांव गांव सैंदा, पो. करकरी, ब्लॉक सिसई थाना गुमला के निवासी हैं. संत तुलसीदास उच्च विद्यालय सिसई से मैट्रिक की परीक्षा दी. आरसी मिशन स्कूल सैंदा से प्रारंभिक शिक्षा पूरी की. रांची कॉलेज से आईएससी, दरभंगा मेडिकल कॉलेज से मेडिकल की पढ़ाई पूरी की. पेशे से डॉक्टर, लेकिन समाज के लोगों की पीड़ा ने इस काम को करने के लिए प्रेरित किया. फिलहाल रिम्स के शिशु रोग विभाग में कार्यरत हैं.

4. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का छठवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22–24 अक्टूबर 2011 को रोहतासगढ़, बिहार में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

5. *तोलोंग सिकि* में लिखते समय अधिक जगह लेने संबंधी प्रष्न पर *पूर्व में डॉ0 बहुरा एक्का* ने सुझाव दिया था कि मूल वर्ण के उपर या नीचे dia critical mark देकर इस समस्या का समाधान निकाला जाना चाहिए। इस सुझाव के आलोक में मास्टर इन डिजाईन सह ईन्डस्ट्रीयल फॉन्ट डिजाईनर, *श्री खाखा अमन रूपेष* ने स्पष्ट किया कि समान वर्णो के संयुक्ताक्षर के लिए मूल वर्ण के नीचे या उपर dia critical mark देकर लिखे जाने से स्थान बचेगा।

6. **डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो** ने सुझाव दिया कि *तोलोंग सिकि* एवं *रोमन लिपि* के बीच लिप्यन्तरण करने में **आ** के लिए *रोमन लिपि* का मूल वर्ण यानि ā की तरह वर्ण के उपर dia critical mark दिया जाए। *रोमन लिपि* के मूल स्वर वर्णों के उपर curved mark देकर nasal vowel तथा bar mark देकर आ लिखने की परंपरा है।

7. **हिन्दी के साहित्यकार डॉ0 दिनेष्वर प्रसाद** ने सुझाव दिया कि *देवनागरी लिपि* से कुँड़ुख़ भाषा के दिगहा सरह ध्वनियों को लिखते समय *देवनागरी लिपि* के मूल स्वर वर्णों के दाहिनी ओर dia critical mark उप विराम (:) चिह्न देकर लिखे जाने में साहित्य की प्रवाह बढ़ेगी।

8. **युवा, संस्कृति एवं खेल मंत्रालय, झारखण्ड सरकार** द्वारा दिनांक 28 अक्टूबर 2011 को डॉ0 नारायण उराँव को कुँड़ुख़ भाषा के लिए तोलोंग सिकि (लिपि) का आविष्कार के लिए *सांस्कृतिक सम्मान 2011–12* से सम्मानित किया गया।

राजधानी

हिन्दुस्तान

रांची • शनिवार • 29 अक्तूबर 2011

विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी हस्तियां, जिन्हें सरकार ने सम्मानित किया। • हिन्दुस्तान

डॉ केसरी को भी मिला लाइफ टाइम अवार्ड

रांची। राज्य सरकार ने शुक्रवार को कला केंद्र होटवार में कला संगीत और साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सम्मानित किया। इसके तहत कला , संस्कृति, भाषा, संगीत और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित होने वालों में डॉ. रामदयाल मुंडा के साथ-साथ डॉ. बीपी केसरी को राज्य सरकार की ओर से लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

इससे पहले डा केसरी को भी 50 हजार का चेक और सम्मान पत्र के साथ दोशाला दिया गया। इनके अलावा 20 अन्य विशिष्ट लोगों को राजकीय सम्मान दिया गया । राजकीय सम्मान पाने वाले लोगों को 10 -10 हजार रुपये, सम्मान पत्र के साथ दोशाला भेंट किया गया। उप मुख्यमंत्री महतो, विधायक कमल किशोर भगत , डा. देवशरण भगत, डा. बहादुर सिंह ने सबको सम्मानित किया। लोगों ने कहा कि डॉ मुंडा इसके हकदार थे।

नाम	क्षेत्र
डा. भुवनेश्वर अनुज	साहित्य, इतिहास, शिक्षा एवं पत्रकारिता
डा. श्रवण गोस्वामी	साहित्य, मंचन, लेखन और ग्रंथ
रोजलीन लकड़ा	नाट्य, रेडियो में सुगिया बहन के चरित्र से प्रसिद्धि
बीजू टोप्पो	झारखंडी एवं कुड़ुख फिल्म निर्माण
मेघनाथ	झारखंड पर विशेष फिल्म निर्माण (अनुपस्थिति के कारण पत्नी कांता तिर्की ने सम्मान ग्रहण किया)
सविता मिश्रा	ओडिसी नृत्य
सइनी उपेंद्र पाल नाहन	नागपुरी साहित्य, विविध विधाओं में लेखन एवं कवि
डा. गिरधारी राम गौंझु	साहित्य, इतिहास, संस्कृति, एवं सामाजिक पत्रकारिता, शिक्षा(अनुपस्थिति के कारण भाई शंकरलाल ने सम्मान लिया)
डा. रामकुमार तिवारी	खोरठा, नृत्य , संगीत, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, भूगोल एवं पर्यावरण
डा. कमल कुमार बोस	हिन्दी साहित्य एवं रंगकर्म
कुमकुम गौड़	टीवी एवं रेडियो में अभिनय
चंद्र मोहन खन्ना	अभिनय एवं नाट्यकला
डा. केसी टुडू	भाषाविद्, संथाली साहित्य और शिक्षा
डा. हरि उरांव	भाषाविद् , उरांव साहित्य, शिक्षा
डा. भुवनेश्वर सवैया	हो भाषा साहित्य, संस्कृति एवं पत्रकारिता (अनुपस्थित रहे)
प्रो. गणेश मुर्मू	लेखन विशेषकर संथाली भाषा एवं साहित्य एवं शब्द कोष
दीनबंधु ठाकुर	लोक नर्तक, गायक एवं नृत्य प्रशिक्षक
डा नारायण उरांव सौंदा	चिकित्सा, कुड़ुख लिपि अनुसंधान
चूना राम हेब्रम	प्रसिद्ध चित्रकार
पांडेया मुंडा	सिंगुआ छउ गुरु देश विदेश में प्रस्तुति(अनुपस्थित)

पांडेय और सवैया का सम्मान पत्र ईस्टजोन कल्चरल सोसाइटी के कमल कुमार बोस ने लिया।

9. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा कुँड़ुख़ समाज के चिन्तकों एवं बुद्धिजीवियों से सलाह–मषविरा कर अपने पैतृक गाँव में 29 अक्टूबर 2011 को धुमकुड़िया का आधुनिक स्वरूप में स्थापित किये जाने की रूपरेखा तैयार। डॉ0 विजय उराँव (वर्तमान में गुजरात राज्य स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत) ने इस कार्य में महती योगदान दिया।

Dr. Narayan Oraon along with promoter of Tolongsiki.com, Dr. Vijay Oraon, Sisai, Gumla.

वर्ष – 2012

1. 14 जनवरी, 2012 को प्रथम **धुमकुड़िया दिवस** सैन्दा, सिसई, गुमला में **डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'** के नेतृत्व में तथा मुख्य अतिथि, सेवानिवृत मुख्य अभियन्ता **श्री अजित मनोहर**

ख़लख़ो की उपस्थिति में मनाया गया तथा **धुमकुड़िया** की नई परिकल्पना के साथ धुमकुड़िया में पढ़ाई–लिखाई का कार्य आरंभ किया गया।

2. **तोलोंग सिकि दिवस,** 20 फरवरी 2012 को **कार्तिक उराँव बाल विकास विद्यालय, सिसई,** गुमला एवं *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में झारखण्ड राज्य समन्वय समिति के सदस्य डॉ0 देवषरण भगत, डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 करमा उराँव, प्रो0 बेनार्ड मिंज, फा0 अगस्तन केरकेट्टा, पा0 सिरिल हंस, डॉ0 नारायण भगत, प्रो0 सोमनाथ उराँव, डॉ0 नारायण उराँव, श्री मंगरा मुण्डा, श्री लोयो उराँव आदि के उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि के विकास का संकल्प लिया गया।

3. **सारा भारत उराँव कल्याण समिति,** बीरभूम, प0 बंगाल द्वारा आयोजित, **श्री निमाई चन्द्र सरदार** की अध्यक्षता में दिनांक 07.04.2012 ई0 को *वार्षिक सम्मेलन – 2012* सम्पन्न। इस सम्मेलन में *बीरभूम, प0 बंगाल* के प्रतिभागियों ने *तोलोंग सिकि* को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए, संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की वकालत की गई।

4. **अखिल भारतीय सरना धर्म समन्वय समिति** के नेतृत्व में दिनांक 20 मई 2012 ई0 को माननीय गृह मंत्री, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली से मुलाकात कर *कुँड़ुख़ भाषा* को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की मांग की गई।

5. **राजी पड़हा, भारत** ने **श्री बागी लकड़ा, राजी बेल** के नेतृत्व में तथा डॉ0 करमा उराँव एवं डॉ0 हरि उराँव की उपस्थिति में 27 मई 2012 ई0 को राजी पड़हा के स्वर्ण जयन्ती समारोह, मोरहाबादी, राँची में ओड़िसा, छतीसगढ़, झारखण्ड, असम, पश्चिम बंगाल से आये पड़हा प्रमियों ने **तोलोंग सिकि** को **कुँड़ुख़ भाषा की लिपि** की मान्यता दी।

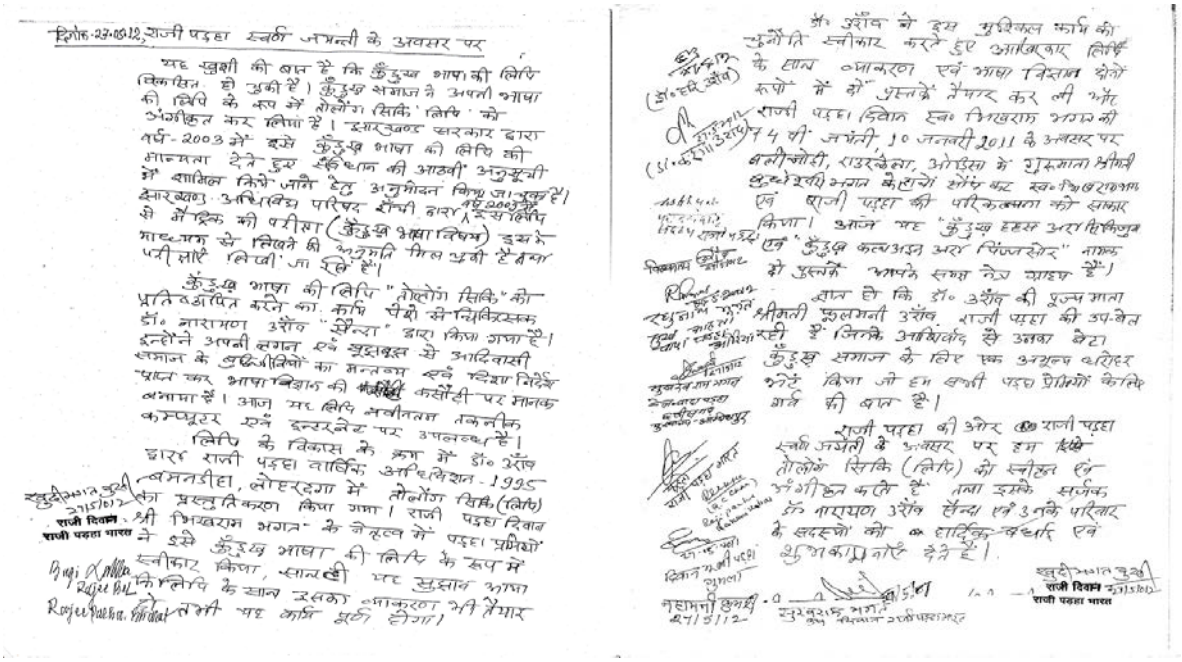

6. सीताराम डेरा, जमषेदपुर में **टिस्को कम्पनी** द्वारा प्रायोजित एवं **उराँव समाज जिला समिति** की देख–रेख में 2 जून 2012 से कुँड़ुख़ भाषा एवं *तोलोंग सिकि* की अनौपचारिक षिक्षा आरंभ।

7. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लिखित **कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा** एवं **कुँड़ुख़ कत्थ अइन अरा पिंजसोर** पुस्तक को कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा अपने साहित्य समीक्षा बैठक में लोकार्पण किया गया।

8. **महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड** के आमंत्रण पर दिनांक 20 जून 2012 को सम्मेलन में भाग लेते हुए पांचवी अनुसूची अन्तर्गत झारखण्ड राज्य में, निवासरत जनजातीय समाज की ''परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर (कला, संस्कृति, भाषा तथा बौद्धिक सम्पदा) एवं उनकी सुरक्षा'' विषय पर जनजातीय सम्मेलन की स्मारिका में *तोलोंग सिकि* विषय पर डॉ0 नारायण उराँव का विस्तृत लेख छपा।

9. **जून 2012 में,** वर्ष 2008 में ग्राम – ख़ाख़े, जिला – लोहरदगा के कुँड़ुख़ प्रेमी भाइयों द्वारा उठाये गये तीन प्रष्न – (क) अखड़ा, एन्देर गे सुना मंज्जा ? (ख) धुमकुड़िया, एन्देर गे मुंज्जरा ? (ग) पड़हा, एन्देर गे मला उक्की ? के उत्तर में डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लोहरदगा जिला के अरकोसा गांव में गांव वालों के निवेदन पर धुमकुड़िया विषय पर एक दिवसीय धुमकुड़िया सम्मेलन का आयोजन किया गया, जहाँ उक्त प्रश्नों का उत्तर दिया गया। *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के अध्यक्ष श्री ए0एम0 खलखो एवं सचिव श्री जिता उराँव इस अवसर पर धुमकुड़िया विषयक परिचर्चा में शामिल हुए।*

10. 15 नवम्बर 2012 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सहयोग से* **सोहराई टहड़ी उल्ला (सोहरई बाःसी)** श्री गजेन्दर *उराँव* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, सिसई, गुमला में मनाया जाना, जहां **धुमकुड़िया** के बच्चों को भविष्य ही कठिनाईयों से अवगत कराया गया।

11. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का सातवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22–24 अक्टूबर 2012 को **कलुंगा, ओड़िसा** में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* विषय पर आमंत्रित प्रतिभागियों द्वारा आपस में परिचर्चा। इस अधिवेषन के दौरान सम्मेलन हॉल के बाहर श्री बासुदेव राम खलखो द्वारा प्रस्तुत ***कुँड़ुख़ बन्ना*** नामक लिपि को प्रदर्षित किया गया था।

12. दिनांक 15–16 दिसम्बर 2012 को **प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन,** आर्यभट्ट हॉल, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि **महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, डॉ0 सैयद अहमद** थे तथा अमेरिका, स्वीडेन एवं नेपाल देष के कुँड़ुख़ प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए।

रांची विवि के आर्यभट्ट सभागार में प्रथम अंतरराष्ट्रीय कुड़ुख सम्मेलन शुरू, राज्यपाल ने कहा

नहीं बोलेंगे, तो लुप्त हो जायेंगी भाषाएं

संवाददाता ■ रांची

राज्यपाल सह कुलाधिपति डॉ सैयद अहमद ने शनिवार को रांची विवि के आर्यभट्ट सभागार में प्रथम अंतरराष्ट्रीय कुड़ुख सम्मेलन का उदघाटन किया. उन्होंने कहा कि हमारी मातृभाषाएं हमारी पहचान हैं. यदि इन्हें प्रयोग में नहीं लायेंगे, तो धीरे धीरे लुप्त हो जायेंगी. कुडुख भाषा देश के कई राज्य व देशों में बोली जाती है. इसका लोक साहित्य भी समृद्ध है. उरांव समाज के लोग शिक्षा, भाषा, संस्कृति और प्रगति के क्षेत्र में ऊंचाइयां छूने का प्रयास करें. यह सम्मेलन इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है. कुड़खर समाज समस्याएं लेकर उनके पास आये, वे समाधान का रास्ता निकालेंगे. उन्होंने कहा कि भारत में कई धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति एक साथ पनपते हैं. यही यहां की खूबसूरती है. जनजातीय परंपराएं व संस्कृति समझने का प्रयास करते हैं. उन्होंने बताया कि वे दुमका में परंपरागत स्वशासन पर आयोजित सम्मेलन में शामिल हुए, चाईबासा में मानकी मुंडा के सम्मेलन में शिरकत की. रांची विवि में स्व कार्तिक उरांव चेयर की स्थापना के लिए निर्देश दिया है. राजभवन ने जनजातीय भाषा के तीन श्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया है. तीसरे सत्र में तितरु उरांव ने कुडुख लोक साहित्य, प्रेमचंद उरांव ने कुडुख व मुंडारी की तुलना, संजय टोप्पो ने कुडुख व नागपुरी लोक गीतों के अध्ययन पर शोधपत्र पेश किये.

कुलाधिपति ने कहा

- उरांव समाज के लोग शिक्षा, भाषा, संस्कृति और प्रगति के क्षेत्र में ऊंचाइयां छूने का प्रयास करें
- कुड़खर समाज समस्याएं लेकर आयें, समाधान का रास्ता निकालेंगे

आर्यभट्ट सभागार में सम्मेलन का उदघाटन करते राज्यपाल. फोटो। प्रभात खबर

उरांव जनजाति की पहचान है कुडुख : मेयर

मेयर रमा खलखो ने कहा कि कुडुख भाषा उरांव जनजाति की पहचान है. यहां की सभी जनजातीय भाषाएं समृद्ध हैं. अलग अलग क्षेत्र में अलग अलग जनजातीय व क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षकों की नियुक्ति जरूरी है. शुरू में जनजातीय व क्षेत्रीय भाषाओं के लिए 182 पद सृजन की बात थी, इसे घटा दिया गया है.

जगी हैं जनआशाएं : डॉ भगत

विनोबा भावे विवि के कुलपति डॉ रविंद्र नाथ भगत ने कहा कि राज्यपाल इस पांचवी अनुसूची क्षेत्र में अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन ईमानदारी से कर रहे हैं. इससे यहां के लोगों में आशाएं जगी हैं. विनोबा भावे विवि ने राज्यपाल को इसकी पढ़ाई अनुमति देने के लिए प्रस्ताव दिया है. इस अवसर पर प्रो हरि उरांव, डॉ करमा उरांव, डॉ उषा रानी मिंज, अंबिकापुर के मेयर प्रबोध मिंज, डॉ प्रकाश चंद उरांव, प्रो महेश भगत व अन्य मौजूद थे.

कुडुख में हो डॉक्टरी, इंजीनियरिंग की पढ़ाई

रांची विवि के कुलपति डॉ एलएन भगत ने कहा कि राज्य में कुडुख भाषा को द्वितीय राजभाषा का दर्जा मिला है और जेपीएससी में इस भाषा में परीक्षा लिखने की अनुमति है. जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में 54 पद रिक्त हैं. इसका रोस्टर राज्य सरकार के पास लंबित है. विद्वान स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर की पुस्तकें लिख रहे हैं. डॉक्टरी इंजीनियरिंग की पढ़ायी भी स्थानीय भाषाओं में होनी चाहिए. अमेरिका, चीन और जापान ऐसा कर रहे हैं.

कुडुख के संरक्षण व संवर्द्धन में चर्च की भूमिका

बिशप डॉ निर्मल मिंज को किसी कॉलेज में सबसे पहले कुडुख भाषा की पढ़ाई शुरू कराने का श्रेय है. उनकी पहल पर वर्ष 1971 में गोस्सनर कॉलेज व 1980 में रांची विवि में इसकी पढ़ाई शुरू हुई. उन्होंने बताया कि वर्ष 1900 तक कुडुख भाषा में बाइबल के अंश प्रकाशित हो चुके थे. 1880 से कई गिरजाघरों की आराधना विधि कुडुख भाषा में होने लगी. एक्सआइएसएस के निदेशक फादर एलेक्स एक्का ने बताया कि चर्च के सदस्यों ने एक मसीही के रूप में नहीं, बल्कि एक कुड़खर के रूप में अपनी भाषा के लिए काम किया है. कई मिशनरी स्कूलों में इसकी पढ़ाई हो रही है. पुस्तकें अब तक देवनागरी लिपि में प्रकाशित होती हैं, पर अब तोलोंग सिकी में प्रकाशन के प्रयास हो रहे हैं. प्रो महेश भगत ने बताया कि जर्मन मिशनरी फ्रेडिक बाल्ड की 'ए ब्रीफ ग्रामर एंड वोकाब्यूलरी ऑफ उरांव लैंग्वेज' वर्ष 1868 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के रिसर्च जरनल के 35वें अंक में प्रकाशित हुई थी. फादर डॉ जैफ्रीन बखला ने वर्ष 2000 में लूरडीपा, गुमला में एक कुडुख-अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोला है. अब तक चार बैच ने मैट्रिक की परीक्षा दी है.

विभिन्न देशों से आये कुडुख भाषियों ने कहा

अमेरिका में झारखंड के 40 से अधिक लोग हैं. छह-सात लोग अपनी भाषा में बात करते हैं. भाषा, साहित्य, संस्कृति पर चर्चा करते हैं. उन्होंने छोटानागपुर इन यूएस फोरम बनाया है. **धनसिद्ध लकड़ा, अमेरिका**

स्वीडन में सिर्फ दो परिवार कुडुख भाषी हैं, जो हिंदी, कुडुख व स्वीडिश में बात करते हैं. इस भाषा की सुरक्षा हमारे प्रयासों पर निर्भर है. कुडुख लोक गीतों में उरांव का जीवन दर्शन झलकता है. **इमानुएल टोप्पो, स्वीडन**

नेपाल में डेढ़- दो लाख कुडुख भाषी हैं. सरकार कुडुख भाषा में भी अखबार निकालती है. वहां 2006 से प्रज्ञा प्रतिष्ठान चल रहा है. वहां की सरकार ने कक्षा एक से आठ तक इसकी पढ़ाई के लिए पहल की है. **बेचन उरांव, नेपाल**

नेपाल में उरांव आदिवासी जंगल काट कर बसे हैं. पीढ़ियों से वहां हैं. 99 फीसदी कुडुखरों ने अपनी भाषा संस्कृति को जीवित रखा है. स्कूलों में इस भाषा में पढ़ाई के लिए अपनी आवाज उठा रखे हैं. **शिवनारायण उरांव, नेपाल के संसद सदस्य**

सरकार को चाहिए कि लेखकों-साहित्यकारों को सम्मानित करे. स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पर खेल व संस्कृति केंद्रों की स्थापना होनी चाहिए. **लिनुस कुजूर, रोम (संदेश फादर अकरिया ने सुनाया)**

यह सम्मेलन भारत-नेपाल संबंधों में मील का पत्थर साबित होगा. अपनी संस्कृति की रक्षा करने में यह सहायक होगा. **रामसुंदर उरांव नेपाल**

कुडुख में बोले जापान के कोबायसी

टोकियो विवि, जापान में असिस्टेंट प्रोफेसर मटाटो कुबेसी की अनुपस्थिति में उनके भाषण की रिकॉर्डिंग सुनायी गयी. वे कुडुख में बोले. उन्होंने कहा कि इस भाषा के संरक्षण व संवर्द्धन की जरूरत है. टोकियो विवि के भाषा विभाग में इसे पाठ्यक्रम में शामिल कराने का प्रयास किया जा रहा है.

''बच्चा जब जन्म लेता है तब उसकी कोई जुबान (भाषा) नहीं होती है। धीरे–धीरे वह अपनी माँ की जुबान सीखता है। उसके लिए वह अपना सबसे ताकतवर अंग ओठ का इस्तेमाल करता है और सर्वप्रथम ओठ के सटने से निकलने वाली ध्वनि माँ, मॉम, ममा, माता, मदर, मातेर आदि का उच्चारण करता है। बच्चा अपनी माँ से जिस जुबान को सीखता है, वही उसके लिए माँ की भाषा अर्थात mother tongue होती है।'' (महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, दिनांक 15.12.2012 को *प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन* के मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित संभाषण की उक्ति।)

वर्ष – 2013

1. 14 जनवरी, 2013 को द्वितीय **धुमकुड़िया दिवस** ग्राम–सैन्दा, थाना–सिसई, जिला–गुमला में *श्री गजेन्द्र उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा डॉ0 नारायण उराँव एवं मुख्य अतिथि श्री प्रकाष पन्ना 'पंकज' सेवानिवृत बैंक मैनेजर की उपस्थिति में मनाया गया तथा **धुमकुड़िया** की नई परिकल्पना के साथ धुमकुड़िया में *तोलोंग सिकि* की पढ़ाई–लिखाई आरंभ हुई।
2. **तोलोंग सिकि दिवस,** 20 फरवरी 2013 को झखरा कुम्मबा, लोहरदगा में श्री विनोद भगत के नेतृत्व में तथा पूर्व विधायक श्री सुकदेव भगत, विधायक श्री बन्धु तिर्की, डॉ0 नारायण उराँव, डॉ0 एतवा उराँव, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा तथा *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड्हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के गनमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया गया।
3. दिनांक 23 एवं 24 फरवरी 2013 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय राँची के सभागार में 'कुँड़ुख़ भाषा पर तमिल भाषा का प्रभाव' विषयक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न हुआ।

4. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का आठवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 24–26 अक्टूबर 2013 को भोपाल, मध्यप्रदेष में सम्पन्न हुआ। यहाँ डॉ0 नारायण उराँव की अनुपस्थिति में भी *तोलोंग सिकि* के बारे में उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा विषेष परिचर्चा की गई।

5. 05 नवम्बर 2013 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से **सोहराई टहड़ी उल्ला (सोहरई बाःसी)** श्री गजेन्दर *उराँव* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, सिसई, गुमला में मनाया जाना, जहां **धुमकुड़िया** के बच्चों को भविष्य ही कठिनाईयों से अवगत कराया गया।

6. दिनांक 24.11.2015 राःजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, केन्द्रीय समिति, भारत की दो दिवसीय वार्षिक बैठक दिनांक 23 एवं 24 नवम्बर 2013 का मुड़मा पड़हा भवन में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्श एवं छानबीन के पश्चात् सभा की ओर से तोलोंग सिकि लिपि को अंगीकार कर, घोषणा पत्र जारी किया गया। बैठक में केन्द्रीय समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष, धर्मगुरू बंधन तिग्गा, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, धर्मगुरू डी. डी. तिर्की, राष्ट्रीय

महासचिव, धर्मअगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव, राष्ट्रीय सचिव, सोमे उराँव, गजेन्द्र कुजूर, भूलन उराँव, सोमे उराँव, संजय उराँव, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राजेश खलखो (रंथु), राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष, पार्वती उराँव, राष्ट्रीय प्रवक्ता विरेन्द्र भगत एवं मनीलाल उराँव उपस्थित थे।

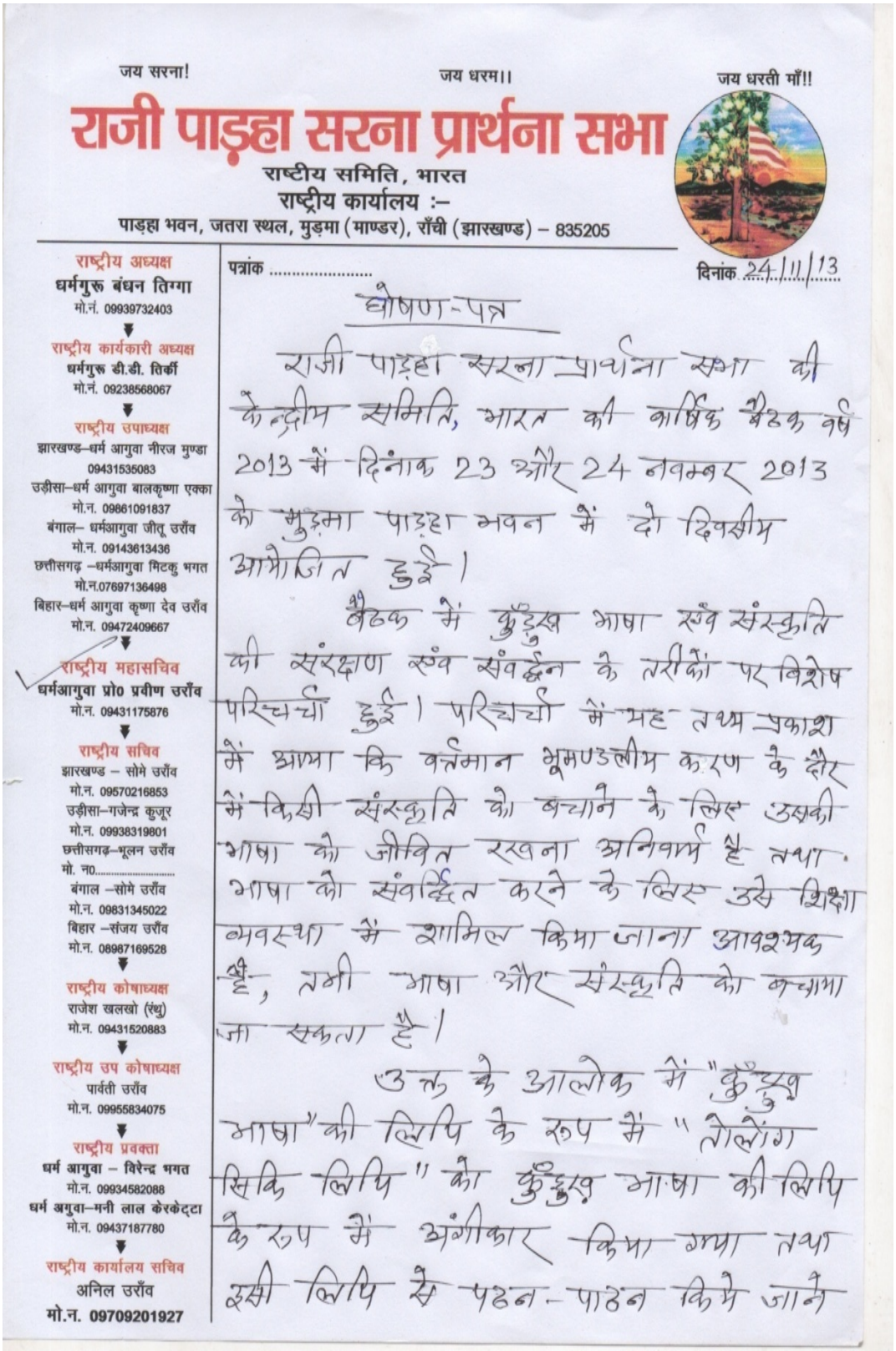

जय सरना! जय धरम!! जय धरती माँ!!

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा

राष्टीय समिति, भारत
राष्ट्रीय कार्यालय :-
पाड़हा भवन, जतरा स्थल, मुड़मा (माण्डर), राँची (झारखण्ड) – 835205

राष्ट्रीय अध्यक्ष
धर्मगुरू बंधन तिग्गा
मो.नं. 09939732403

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
धर्मगुरू डी.डी. तिर्की
मो.नं. 09238568067

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
झारखण्ड–धर्म आगुवा नीरज मुण्डा
09431535083
उड़ीसा–धर्म आगुवा बालकृष्णा एक्का
मो.न. 09861091837
बंगाल– धर्मआगुवा जीतू उराँव
मो.न. 09143613436
छत्तीसगढ़ –धर्मआगुवा मिटकु भगत
मो.न.07697136498
बिहार–धर्म आगुवा कृष्णा देव उराँव
मो.न. 09472409667

राष्ट्रीय महासचिव
धर्मआगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव
मो.न. 09431175876

राष्ट्रीय सचिव
झारखण्ड – सोमे उराँव
मो.न. 09570216853
उड़ीसा–गजेन्द्र कुजूर
मो.न. 09938319801
छत्तीसगढ़–भूलन उराँव
मो. न0.....
बंगाल –सोमे उराँव
मो.न. 09831345022
बिहार –संजय उराँव
मो.न. 08987169528

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजेश खलखो (रंथु)
मो.न. 09431520883

राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष
पार्वती उराँव
मो.न. 09955834075

राष्ट्रीय प्रवक्ता
धर्म आगुवा – विरेन्द्र भगत
मो.न. 09934582088
धर्म अगुवा–मनी लाल केरकेट्टा
मो.न. 09437187780

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव
अनिल उराँव
मो.न. 09709201927

पत्रांक .....

दिनांक 24/11/13

घोषणा-पत्र

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा की केन्द्रीय समिति, भारत की वार्षिक बैठक वर्ष 2013 में दिनांक 23 और 24 नवम्बर 2013 को मुड़मा पाड़हा भवन में दो दिवसीय आयोजित हुई।

बैठक में कुँड़ुख भाषा एवं संस्कृति की संरक्षण एवं संवर्द्धन के तरीकों पर विशेष परिचर्चा हुई। परिचर्चा में यह तथ्य प्रकाश में आया कि वर्तमान भूमण्डलीय करण के दौर में किसी संस्कृति को बचाने के लिए उसकी भाषा को जीवित रखना अनिवार्य है तथा भाषा को संवर्द्धित करने के लिए उसे शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाना आवश्यक है, तभी भाषा और संस्कृति को बचाया जा सकता है।

उक्त के आलोक में "कुँड़ुख भाषा" की लिपि के रूप में "तोलोंग सिकि लिपि" को कुँड़ुख भाषा की लिपि के रूप में अंगीकार किया गया तथा इसी लिपि से पढ़न-पाठन किये जाने

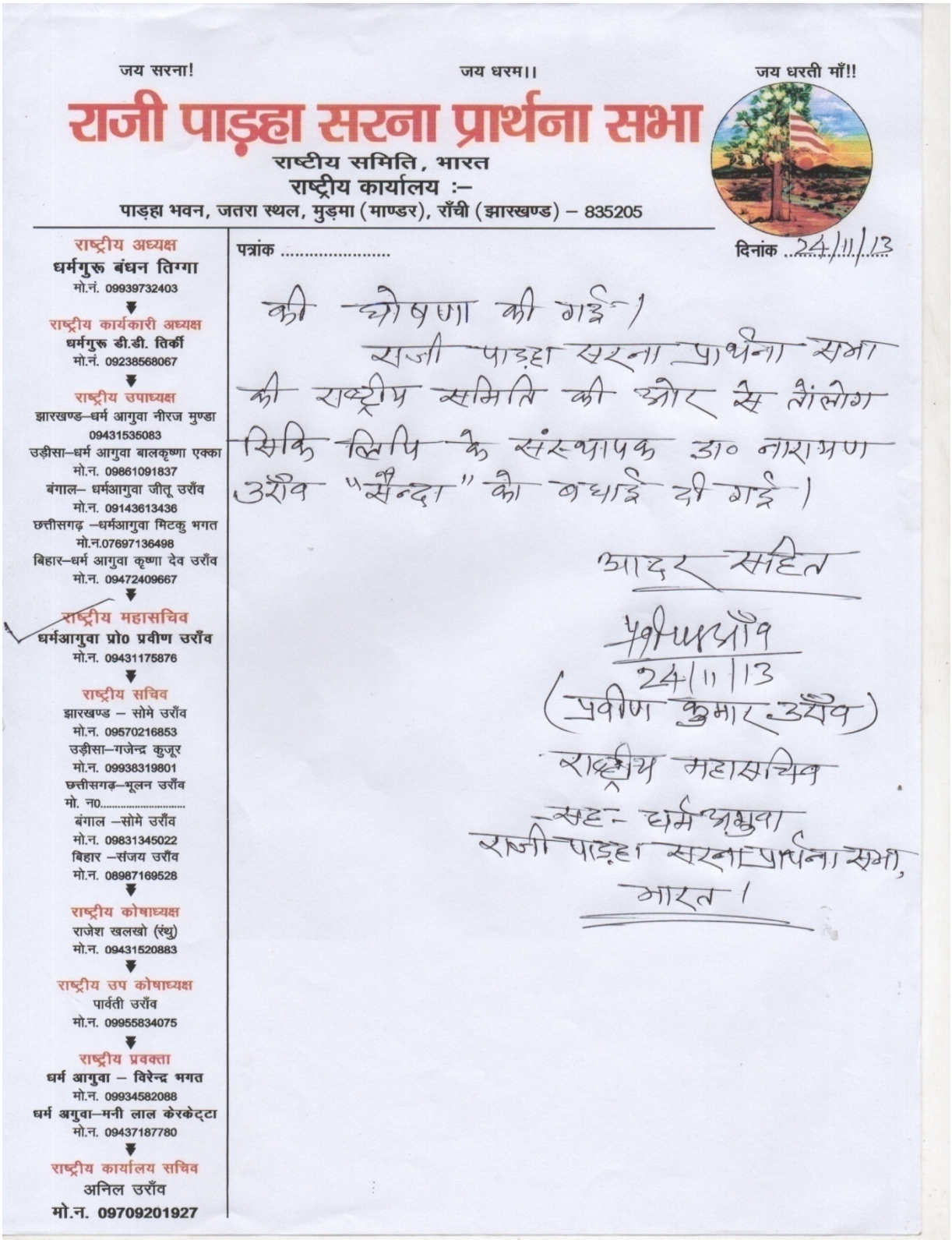

जय सरना! जय धरम।। जय धरती माँ!!

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा

राष्टीय समिति, भारत

राष्ट्रीय कार्यालय :–

पाड़हा भवन, जतरा स्थल, मुड़मा (माण्डर), राँची (झारखण्ड) – 835205

पत्रांक .... दिनांक 24/11/13

राष्ट्रीय अध्यक्ष
धर्मगुरू बंधन तिग्गा
मो.नं. 09939732403

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
धर्मगुरू डी.डी. तिर्की
मो.नं. 09238568067

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
झारखण्ड–धर्म आगुवा नीरज मुण्डा
09431535083
उड़ीसा–धर्म आगुवा बालकृष्णा एक्का
मो.न. 09861091837
बंगाल– धर्मआगुवा जीतू उराँव
मो.न. 09143613436
छत्तीसगढ़ –धर्मआगुवा मिटकु भगत
मो.न.07697136498
बिहार–धर्म आगुवा कृष्णा देव उराँव
मो.न. 09472409667

राष्ट्रीय महासचिव
धर्मआगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव
मो.न. 09431175876

राष्ट्रीय सचिव
झारखण्ड – सोमे उराँव
मो.न. 09570216853
उड़ीसा–गजेन्द्र कुजूर
मो.न. 09938319801
छत्तीसगढ़–भूलन उराँव
मो. न0.............................
बंगाल –सोमे उराँव
मो.न. 09831345022
बिहार –संजय उराँव
मो.न. 08987169528

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजेश खलखो (रंथु)
मो.न. 09431520883

राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष
पार्वती उराँव
मो.न. 09955834075

राष्ट्रीय प्रवक्ता
धर्म आगुवा – विरेन्द्र भगत
मो.न. 09934582088
धर्म अगुवा–मनी लाल केरकेट्टा
मो.न. 09437187780

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव
अनिल उराँव
मो.न. 09709201927

की घोषणा की गई।
राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा की राष्ट्रीय समिति की ओर से तोलोंग सिकि लिपि के संस्थापक डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" को बधाई दी गई।

आदर सहित

(हस्ताक्षर)
24/11/13
(प्रवीण कुमार उराँव)
राष्ट्रीय महासचिव
सह- धर्म अगुवा
राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा,
भारत।

वर्ष – 2014

1. 04 एवं 05 जनवरी, 2014 को **ऑल असम कुँड़ुख़ (उराँव) साहित्य सभा** के तत्वधान में दो दिवसीय सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में श्री सिन्थयुस कुजूर, सदस्य, राज्यसभा एवं श्री जोसेफ टोप्पो, सदस्य, लोकसभा, मुख्य अतिथि तथा झारखण्ड से डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा0 अलबिनुस मिंज तथा छत्तिसगढ़ से डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज ने अपने विचार रखे। सम्मेलन में गहन विचार–विमर्ष के बाद तीन बातें सामने आयीं, जिसे सामाजिक मांग के तौर

पर असम राज्य सरकार के संमक्ष ज्ञापन के रूप में सांसद श्री सिन्थयुस कुजुर को सौंपा गया – 1. असम में रह रहे आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाय। 2. कुँड़ुख़ भाषा संविधान की 8 वीं अनुसूची में षामिल हो। 3. कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई तोलोंग सिकि (लिपि) के माध्यम से शुरू किया जाय।

2. 14 जनवरी, 2014 को **धुमकुड़िया उल्ला** ग्राम – छोटकासैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला (झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा डॉ0 नारायण उराँव एवं श्री मंगरा उराँव, सेवानिवृत कार्यपालक सहायक, एच. ई. सी. की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कई **धुमकुड़िया** के बच्चे उपस्थित थे।

3. **तोलोंग सिकि दिवस,** 20 फरवरी 2014 को ललित उराँव नगर भवन, गुमला में पूर्व विधायक श्री बेर्नाड मिंज, श्री विनोद भगत एवं श्रीमती बॉबी भगत के संयोजन में मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत एवं विशिष्ट अतिथि विशप डॉ0 निर्मल मिंज के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर बायें से दायें डॉ0 श्रीमती शान्ति खलखो, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री बेर्नाड मिंज, श्रीमती बॉबी भगत, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, श्री ए0एम0खलखो, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा के अतिरिक्त फा0 अलबिनुस मिंज, डॉ0 नारायण भगत, श्री जिता उराँव, श्री बहुरा उराँव, श्री भइया रामन कुजूर, एडवोकेट अघनु उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में एराउज, गुमला, कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागाटोली, डुमरी, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (शाखा कार्यालय) छोटकासैन्दा, सिसई, बालिका छात्रावास, गुमला, सिनगी दई महिला कॉलेज छात्रावास, गुमला, कार्तिक उराँव कॉलेज छात्रावास, गुमला, सरना कॉलेज छात्रावास, गुमला, उराँव छात्रावास, गुमला आदि के छात्र एवं छात्राएँ विशेष रूप से उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

4. 20, 21 एवं 20 मई 2014 को, *21 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा* एवं *अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में मौजा – छोटकासैन्दा, थाना सिसई, जिला गुमला में परम्परागत कुँड़ुख़ समाज के 21 ग्राम सभा के आदिवासियों ने, दो दिवसीय

सम्मेलन कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान किया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया के माध्यम से पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक घोषणा जारी की। सम्मेलन में श्री समीर उराँव, डॉ0 देवशरण भगत, श्री शिवशंकर उराँव एवं रा:जी पड़हा के कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

5. दिनांक 05 सितम्बर 2014, को ग्राम सभा छोटका सैन्दा, थाना सिसई, जिला गुमला द्वारा धुमकुड़िया मंडा स्थान में *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) की देखरेख में* **पड़हा धुमकुड़िया कुँड़ुखकत्थ लूरमंडा (विद्यालय)** की स्थापना की गई। इस विद्यालय में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुँड़ुख़ भाषा विषय (क्रमशः देवनागरी, रोमन एवं तोलोंग सिकि) को आधार बनाया गया है। साथ ही निर्णय लिया गया कि **स्कूल स्थपना दिवस** एवं **गुरूबाबा जतरा टाना भगत जयंती,** 05 सितम्बर को मनाया जाएगा।

6. 20 सितम्बर 2013 को **संत स्तानिस्लास उच्च विद्यालय, पतराटोली, लोहरदगा** में फा0, श्री विनोद भगत एवं प्राधानाचार्य, फा0 के अगुवाई में विद्यालयों में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) की आवश्यकता एवं उपयोगिता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोंजित हुई। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने उपरोक्त विषय पर विस्तृत चर्चा की तथा अग्रेतर विकास हेतु विशिष्ट दिशा निर्देश बतलाया।

7. **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का नौवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 2–4 अक्टूबर 2014 को **अण्डामन (अण्डामन निकोबार)** में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 हरी उराँव, सचिव श्री अशोक बखला, कोषाध्यक्ष डॉ0 सेशिल खाखा एवं अलग–अलग स्टेट चैप्टर चीफ मौजूद थे। फा0 अगस्तिन केरकेट्टा ने लगभग 1 महीना पूर्व से ही अलग–अलग द्वीप के लोगों से मिलकर सम्मेलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उपस्थित प्रतिभागियों के बीच *तोलोंग सिकि* विषयक परिचर्चा फा0 अगस्तिन केरकेट्टा के नेतृत्य में हुई।

8. 25 अक्टुवर 2014 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से **सोहराई टहड़ी उल्ला (सोहरई बाःसी)** श्री गजेन्दर उराँव *'पड़हा कोटवार'* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला **के बेलाटोंगरी** में मनाया गया। इस अवसर पर *मुख्य अतिथि, राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के धर्मगुरू श्री बंधन तिग्गा एवं* डॉ0 नारायण उराँव की उपस्थिति में शुभारंभ हुआ। इसमें धुमकुड़िया के बच्चे एवं स्थानीय पड़हा पंच प्रतिभागी थे।

9. दिनांक – 11 दिसम्बर 2014 से 13 दिसम्बर 2014 तक, **जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकता** में **कुँड़ुख़ लोक साहित्य का बंगला–अंगरेजी अनुवाद** विषयक कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा, श्री बिमल टोप्पो, श्री जवाल बघवार एवं श्रीमती सुको भगत द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। कार्यशाला में भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य (09432804387) ने कहा कि किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसे नेत्र ग्राह्य रूप यानि उसकी अपनी लिपि का होना आवश्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में **यूनिवर्सल सिस्टम** को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने के लिए अपनी मातृभाषा की शिक्षा आवश्यक है। कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग सिकि की ध्वनिमूलक पहचान को बरकरार रखने हेतु उन्होंने लिपि के विकास में कुछ कमियों की ओर तर्क पूर्ण विचार दिया और उसे दूर करने का सुझाव दिया।

10. भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 21 दिसम्बर 2014 को *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची* की सलाहकार समिति की बैठक हुई। बैठक में कई गनमान्य सदस्यों के साथ विचार–विमर्श कर सर्वसम्मति से अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए ' ̃' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम 'सरङा' रखा गया तथा निर्णय लिया गया कि समयानुकूल बेहतर सुझाव आने पर नामकरण में रूपांतर हो सकता किया जा सकता है।

वर्ष – 2015

1. 14 जनवरी, 2015 को **धुमकुड़िया उल्ला** (धुमकुड़िया प्रवेश दिवस) को छोटका सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला **(**झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा पडहापाट

सदस्यों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कई **धुमकुड़िया** के बच्चे उपस्थित थे।

2. 01 फरवरी, 2015 को **अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा** को करमटोली चौक राँची में सभा की बैठक कर की निर्णय लिया गया कि 20 फरवरी 2015 को तोलोंग सिकि दिवस, कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, सिसई, गुमला में मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए वहाँ की स्थानीय कमिटि द्वारा मांग की गई थी। बैठक में प्रचारिणी सभा के साथ अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सदस्य भी संयुक्त रूप से कार्यक्रम में शामिल होने के लिये तैयार हुए।

3. 03 फरवरी, 2015 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सहयोग से* **धुमकुड़िया माघ जतरा** (माघ पुर्णिमा) ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'पड़हा कोटवार'* के अगुवाई में 52 पडहा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा सम्मेलन समिति के सदस्यों एवं गाँव वालों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कई **धुमकुड़िया** के बच्चे उपस्थित थे।

4. 08 फरवरी 2015 को डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो एवं डॉ0 एतवा उराँव (लूरडिप्पा के संस्थापक) की उपस्थिति में तोलोंग सिकि की व्यवहारिक समस्याएँ एवं समाधान विषयक परिचर्चा, डॉ0 नारायण उराँव के आवास पर हुई। समीक्षोपरांत, देवनागरी लिपि के साथ लिप्यन्तरन में : स्=[illegible] श्=[illegible] ष्=[illegible] श्र=[illegible] क्ष=[illegible] त्र=[illegible] ज्ञ=[illegible] ऋ=[illegible] ई=[illegible] ऊ=[illegible] ए=[illegible] ओ=[illegible] ऐ=[illegible] औ=[illegible] अं=[illegible] अः=[illegible] अँ=[illegible] रखा गया।

5. 15 फरवरी, 2015 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से **धुमकुड़िया मंडा,** ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'पड़हा कोटवार'* के अगुवाई में बैठक हुई, जिसमें समिति के सदस्यों एवं गाँव वालों ने निर्णय लिया कि ग्राम स्तर पर **सिनगीदई महिला शक्तिकरण समिति** नामक उपसमिति गठित की गई जो अददी अखड़ा की देखरेख में संचालित होगी। इस अवसर पर कई **धुमकुड़िया** समिति के सदस्य उपस्थित थे।

6. तोलोंग सिकि उल्ला (दिवस), 20 फरवरी 2015 को *कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो,* सिसई, गुमला एवं *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* द्वारा आयोजित कार्यक्रम में **श्री दिनेश उराँव,** अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा, राँची

एवं पूर्व मंत्री झारखण्ड सरकार श्रीमती गीताश्री उराँव, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, फा0 प्रेमचन्द तिर्की, फा0 प्रफुल्ल तिग्गा, फा0 देवनीस खेस्स, श्री फिलमोन टोप्पो, श्री जिता उराँव, श्री मंगरा उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों तथा शिक्षकों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागीटोली, पड़हा धुमकुड़िया कुँड़ुख़कत्थ लूरमंडा, छोटकासैन्दा आदि के छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष, श्री दिनेश उराँव ने स्कूल के बच्चों के समक्ष दो वचन दिया – 1. वे, इस विद्यालय के टॉपर को अपने वेतन से 11000/..रूपये देंगे। 2. वर्ष 2016 सत्र से इस विद्यालय के बच्चे कुँड़ुख़ भाषा की परीक्षा, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि में लिखेंगे।

7. 09 – 10 मई 2015 को, *52 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा सम्मेलन समिति* एवं *अद्दी कुँड़ुख चाःला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में मौजा – चैगरी छपरबगीचा, थाना सिसई, जिला गुमला में परम्परागत कुँड़ुख़ समाज के 52 ग्राम सभा के आदिवासियों ने, दो दिवसीय सम्मेलन कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान किया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया के माध्यम से पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक घोषणा जारी की। सम्मेलन में झारखण्ड सरकार की पूर्व शिक्षा मंत्री, **श्रीमती गीताश्री उराँव** एवं पूर्व विधायक **श्री समीर उराँव** मौजूद थे।

न्यूज विंग NEWS WING — कवर विंग

09–10 मई 2015

दो दिवसीय 52 पड़हा बिसु सेन्दरा महाधिवेशन 2015 संपन्न

कुँड़ख परम्परा व रस्म रिवाज को सख्ती से निभाने का निर्देश

पड़हा के बुधना उरावं (बेल), गजेन्द्र उरावं (देवान) एवं बुधराम उरावं (भंडारी) द्वारा जारी विज्ञप्ति पर आधारित आलेख

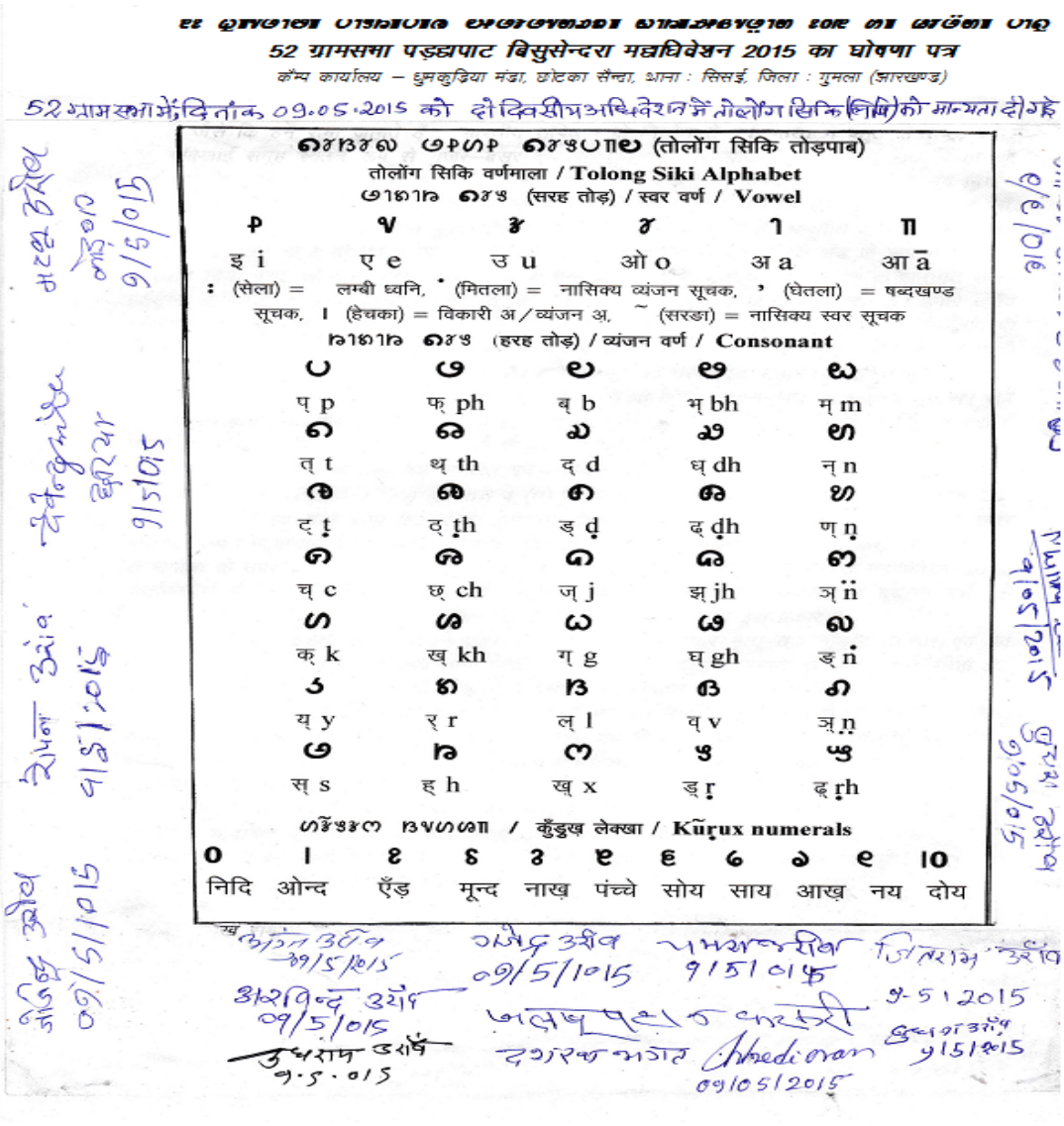

52 ग्रामसभा पड़्हापाट बिसुसेन्दरा महाधिवेशन 2015 का घोषणा पत्र

कैम्प कार्यालय – धुमकुड़िया मंडा, छोटका सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड)

52 ग्रामसभा में दिनांक 09.05.2015 को दो दिवसीय अधिवेशन में तोलोंग सिकि लिपि को मान्यता दी गई है

(तोलोंग सिकि तोड़पाब)

तोलोंग सिकि वर्णमाला / Tolong Siki Alphabet

(सरह तोड़) / स्वर वर्ण / Vowel

इ i	ए e	उ u	ओ o	अ a	आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = षब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = विकारी अ / व्यंजन अ, ˜ (सरडा) = नासिक्य स्वर सूचक

(हरह तोड़) / व्यंजन वर्ण / Consonant

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् c	छ् ch	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ञ़् ṉ
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

/ कुँड़ख़ लेक्खा / Kũṛux numerals

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
निदि	ओन्द	एँड़	मून्द	नाख़	पंच्चे	सोय	साय	आख़	नय	दोय

8. दिनांक 16–17 मई 2015 को **द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन,** विराटनगर, नेपाल में सम्पन्न। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि **नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री उपस्थित** थे। नेपाल में भूकम्प के वावजूद, भारत एवं बंगलादेश के कुँड़ुख़ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

9. 22, 23 एवं 24 मई 2015 को, रा:जी पड़हा, भारत का तीन दिवसीय रा:जी पड़हा अधिवेशन, लोरोबगीचा, नवडीहा, गुमला में राजी पड़हा देवान श्री खुदी भगत दुखी की अगुवाई में सम्मन्न हुआ। झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओड़ीसा एवं अन्य जगहों से आये पड़हा प्रेमी तीन दिवसीय सम्मेलन में विचार–विमर्श कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान किया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया एवं विद्यालयों में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक घोषणा जारी की।

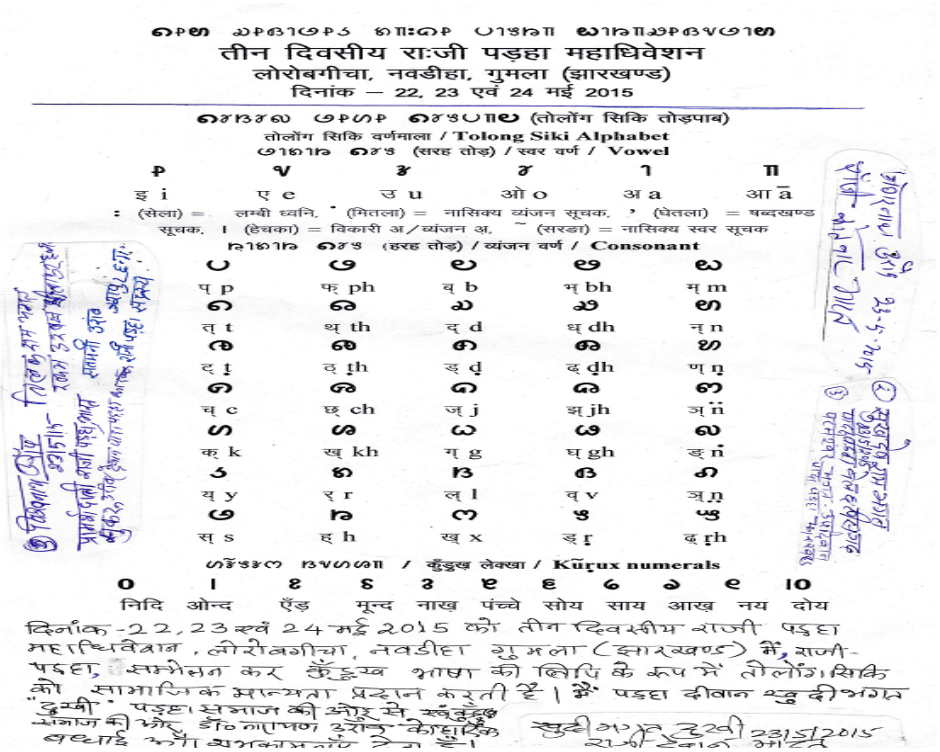

तीन दिवसीय रा:जी पड़हा महाधिवेशन
लोरोबगीचा, नवडीहा, गुमला (झारखण्ड)
दिनांक — 22, 23 एवं 24 मई 2015

(तोलोंग सिकि तोड़पाब)
तोलोंग सिकि वर्णमाला / Tolong Siki Alphabet
(सरह तोड़) / स्वर वर्ण / Vowel

इ i — ए e — उ u — ओ o — अ a — आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = षब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = विकारी अ/व्यंजन अ़, ˜ (सरडा) = नासिक्य स्वर सूचक

(हरह तोड़) / व्यंजन वर्ण / Consonant

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् c	छ् ch	ज् j	झ् jh	ञ् ṅ̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ञ़् ṉ
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

/ कुँड़ुख़ लेक्खा / Kũṛux numerals

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
निदि	ओन्द	एँड़	मून्द	नाख़	पंच्चे	सोय	साय	आख़	नय	दोय

दिनांक-22, 23 एवं 24 मई 2015 को तीन दिवसीय राजी पड़हा महाधिवेशन, लोरोबगीचा, नवडीहा गुमला (झारखण्ड) में, राजी-पड़हा, सम्मेलन कर कुँड़ुख भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान करती है। मैं पड़हा दीवान खुदी भगत "दुखी" पड़हा समाज की ओर से कुँड़ुख समाज की ओर डॉ॰ नारायण उराँव को हार्दिक बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।
खुदी भगत दुखी 23/5/2015
राजी दीवान भारत

10 24 एवं 31 मई 2015 को अददी कुँड़ुख़ चा:ला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), केन्द्रीय कार्यालय, राँची के तत्वाधान में संस्था के अध्यक्ष माननीय श्री अजीत मनोहर खलखो अगुवाई में आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में दो दिवसीय तोलोंग सिकि

(लिपि) प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में संस्था के सचिव श्री जिता उराँव, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री राजेन्द्र भगत, श्री मंगरा उराँव, श्री सरन उराँव, श्री भइया रमन कुजूर, श्री लोधेर उराँव, श्री किसुन उराँव, श्री नागेश्वर उराँव, शोधार्थी लक्ष्मी उराँव, शोधार्थी सीता कुमारी एवं लिपि सीखने वाले कई छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

रांची सोमवार, 25 मई, 2015

तेलोंग लिपि के प्रशिक्षण में जुटे जानकार

कुड़ुख की पहचान है तोलोंग सिकि लिपि : डॉ नारायण उरांव

लोंग सिकि लिपि प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल भाषा का जानकार।

रांची। अद्दी कुड़ुख चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) की ओर से आदिवासी हॉस्टल करमटोली में कुड़ुख लिपि तोलोंग सिकि का प्रशिक्षण दिया गया। कुड़ुख भाषा की लिपि तोलोंग सिकि को देश- विदेश में रहने वाले सभी क्षेत्र के उरांवों की लिपि बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुड़ुख भाषा की लिपि बनाने के लिए जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

लिपि के जनक डॉ नारायण उरांव ने बताया लिपि से ही कुड़ुख समुदाय की पहचान बचेगी। इसी के आधार पर आठवीं अनुसूची में कुड़ुख भाषा को शामिल किया जायेगा। इसके लिए काम किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 2001 से ही तोलोंग सिकि लिपि से पढ़ाई जारी है। 2003 में झारखंड सरकार ने इस कुड़ुख भाषा की लिपि माना है। 2009 से इस लिपि से जैक बोर्ड में विद्यार्थी परीक्षा देते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में तोलोंग सिकि लिपि पर कुड़ुख पुस्तकों का लेखन करैने का निर्णय भी लिया गया। संस्था के सचिव जिता उरांव ने बताया कि लिपि को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए लिपि जरूरी है।

इसमें अजीत मनोहर खलखो, जिता उरांव, राजेंद्र भगत, डॉ नारायण उरांव, डॉ नारायण भगत, विनोद उरांव, किसुन उरांव, शोधार्थी लक्ष्मी उरांव, शोधार्थी सीता कुमारी, नागेश्वर भगत, लोधेर उरांव सहित अन्य लोग शामिल हुए।

11. भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 07 जून 2015 को *तोलोंग सिकि (लिपि)* सलाहकार समिति की बैठक हुई। बैठक में कई गनमान्य सदस्यों के साथ विचार–विमर्श कर (इस क्रम में कुँड़ुख़ भाषा विशेषज्ञ डॉ0 नारायण भगत के साथ परिचर्चा करते हुए, तोलोंग सिकि संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।) सर्वसम्मति से अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए ' ˜' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम 'सेवाँ' रखा गया।

12. दैनिक समाचारपत्र Times of India अंगरेजी दैनिक समाचारपत्र द्वारा दिनांक 09 जून 2015 को Writting a New Identity शीर्षक लेख के माध्यम से तोलोंग सिकि के विकास एवं कठिनाईयों पर विस्तृत लेख प्रकाशित किया गया, जो भारत के दूरदराज सभी क्षेत्रों तक पँहुचा।

THE TIMES OF INDIA, RANCHI
TUESDAY, JUNE 9, 2015

TIMES NATION

Writing a New Identity

As acts of cultural assertion, indigenous tribes across India are devising scripts. But spreading the word isn't easy

13. भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 14 जून 2015 को सामाजिक संगठन, *राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, केन्द्रीय समिति* के पदाधिकारियों से विचार–विमर्श किया गया। (समिति के महासचिव सह धरमअगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव, सलाहकार, प्रो0 (श्रीमती) मन्ती उराँव के साथ विचार–विमर्श करते हुए तोलोंग सिकि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा')। लिपि में यथेष्ट संस्करण हेतु शिक्षाविदों एवं सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं के सदस्यों के साथ आवश्यक वैचारिक एवं तकनीकि समीक्षा के उपरांत अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए '˜' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम 'सेवाँ' नामित किया गया।

14. कुँड़ुख़ भाषा विकास समन्वय समिति के कार्यशाला समन्वयकों यथा डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं प्रो0 महेश भगत की ओर से **कुँड़ुख़ भाषा व्याकरणिक शब्दावली मानकीकरण** के तहत दिनांक 06.10.2015 को एक संयुक्त रिपोर्ट, समन्वय समिति के संयोजक, डॉ0 हरि उराँव को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग से प्रकाशित करने हेतु सौंपा गया। इस रिर्पोट पर खुशी जाहिर करते हुए डॉ0 हरि उराँव ने उपस्थित प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि वे जल्द ही इसे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची से समाज के लोगों के व्यवहार के लिए लोकार्पित करवाएंगे।

15. कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया का दसवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 21–22 अक्टूबर 2015 को **नागपुर, महाराष्ट्र** में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 हरी उराँव, सचिव श्री अशोक बखला, कोषाध्यक्ष डॉ0 सेशिल खाखा एवं अलग–अलग स्टेट चैप्टर चीफ मौजूद थे। इस अवसर पर *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा* की ओर से *सभाअध्यक्ष* फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं महासचिव डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों के बीच *तोलोंग सिकि* विषयक विशेष रूप से परिचर्चा की गई।

16. दिनांक 13 नवम्बर 2015 को **सोहराई टहड़ी उल्ला (सोहरई बाःसी)** श्री गजेन्दर उराँव के नेतृत्व में ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला में मनाया गया। जतरा में विशेष

रूप से सिसई विधान सभा के विधायक सह झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष, **श्री दिनेश उराँव** उपस्थित होकर ग्रामीणों का उत्साह वर्द्धन किया। उन्होंने कहा कि अब छात्रगण कुँड़ुख़ भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) से सत्र 2016 की मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिख सकेंगे, इसके लिए विभागीय कारवाई चल रही है। साथ ही कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, सिसई, गुमला की मैट्रिक टॉपर को 11000/–रूपये प्रोत्साहन राशि देकर मंगलो के बच्चों को दिये, प्रथम बचन को पूरा किया।

17. दिनांक 15 नवम्बर 2015 को अददी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), केन्द्रीय कार्यालय, राँची के तत्वाधान में संस्था के सचिव, माननीय श्री जिता उराँव एवं श्री राजेन्द्र भगत की अगुवाई में आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में संस्था की ओर से बायें से दायें बैठे हुए श्री राजेन्द्र भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री मंगरा उराँव, सचिव श्री जिता उराँव, डॉ0 नारायण भगत, कुँड़ुख़ भाषा शिक्षक श्री बन्दे_उराँव, श्री तेतरू उराँव, श्री रंजन उराँव, श्री राजु उराँव, श्री बासुदेव उराँव, श्री रंजन उराँव सुश्री सुखमनी उराँव, श्री कमला उराँव, सुश्री लक्षमी उराँव, श्री महेन्द्र उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा के कई छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

18.. दिनांक 29.11.2015, दिन रविवार को तोलोंग सिकि का संक्षिप्त इतिहास के संकलन की प्रति को प्रचार–प्रसार हेतु, संकलनकर्ता सह सम्पादक डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव (डॉ0 नारायण उराँव की धर्मपत्नी) द्वारा अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के अध्यक्ष श्री ए0 एम0 खलखो एवं सचिव श्री जिता उराँव को सौंपा गया। इस अवसर पर बायें से दायें दंत चिकित्सक डॉ0 अर्चना नुपुर खलखो, संकलनकर्ता सह सम्पादक डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री ए0 एम0 खलखो, श्री जिता उराँव, श्रीमती लीलावती खलखो, श्रीमती लकड़ा, श्री लकड़ा एवं प्रो0 बेनीमाधव भगत उपस्थित थे।

संकलन एवं सम्पादन : डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव
निवास : भुवनफूल एड़पा, खबरमंत्र लेन, बोड़ेया रोड, चिरौन्दी, राँची।

19. दिनांक 29.11.2015 को कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी, नई दिल्ली की ओर से वर्ष 2016 में लिटरेरी सोसाईटी का दशक समारोह मनाने के लिए केन्द्रीय कमिटि की बैठक गोस्सनर थियोलोजिकल संस्थान, राँची में सम्पन्न हुई। बैठक में 10 राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

20. दिनांक 30.11.2015, समय 11.30 बजे पूर्वाहन, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में **कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक शब्दावली शब्द भण्डार** का लोकार्पण, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची के विभागाध्यक्ष, डॉ0 के0 सी0 टूडू एवं डॉ0 हरि उराँव, की उपस्थिति में समारोह के मुख्य अतिथि विशप डॉ0 निर्मल मिंज के द्वारा किया गया। इस अवसर पर बायें से डॉ0 एच0 एन0 सिंह, डॉ0 नारायण भगत, श्री अशोक बाखला (मौसम वैज्ञानिक, भारत सरकार, नई दिल्ली), डॉ0 के0 सी0 टूडू, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज (अध्यक्ष, कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली), फा0 अगस्तीन केरकेट्टा, डॉ0 फांसिस्का कुजूर, श्री जिता उराँव (सचिव, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची) के साथ डॉ0 रामकिशोर भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री सरन उराँव, श्री बन्दे उराँव, श्री तेतरू उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के बहुत सारे छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। इन सभी भाषा विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों ने **पारिभाषिक शब्दावली** के गुण–दोषों एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए इसकी आवश्यकता आदि तथ्यों पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए जनसाधारण के व्यवहार के लिए **कुँड़ुख़ भाषा पारिभाषिक शब्दावली**

शब्द भण्डार को लोकार्पित किया गया तथा आह्वान किया गया कि इन पारिभाषिक शब्दावलियों के आधार पर विद्वतजन व्याकरण की रचना करें और पठन–पाठन में सहयोगी बनें।

वर्ष – 2016

1. दिनांक 05, 06 एवं 07 जनवरी 2016 को **ऑल कुँड़ुख़ (उराँव) साहित्य सभा, असम** के नेतृत्व में असम से 12 जिले से आये लगभग 15 हजार कुँड़ुख़ (उराँव) आदिवासियों ने **बी0 टी0 सी0 (बोड़ो टेरीटोरियल कान्सिल)** क्षेत्र के गोसांई सबडिभिजन मुख्यालय में तीन दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में **डॉ0 नारायण 'सैन्दा', डॉ0 (श्रीमती) शान्ति खलखो** एवं **श्री मंगरा उराँव झारखण्ड** से पहूँचे और तोलोंग सिकि के बारे में साहित्य सभा को जानकारी दी। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में **बी0 टी0 सी0 (बोड़ो टेरीटोरियल कान्सिल)** के उच्च पदाधिकारी एवं **राज्य सभा सांसद श्री सिन्थयुस कुजूर** उपस्थित थे।

2. दिनांक 12.02.2016 को झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि में लिखे जाने की अनुमति दी गई। यह दिन कुँड़ुख़ भाषा के इतिहास में स्वर्णिम दिन है। कुँड़ुख़ समाज, इस कार्य के लिये झारखण्ड सरकार एवं शिक्षा विभाग का आभार व्यक्त करता है।

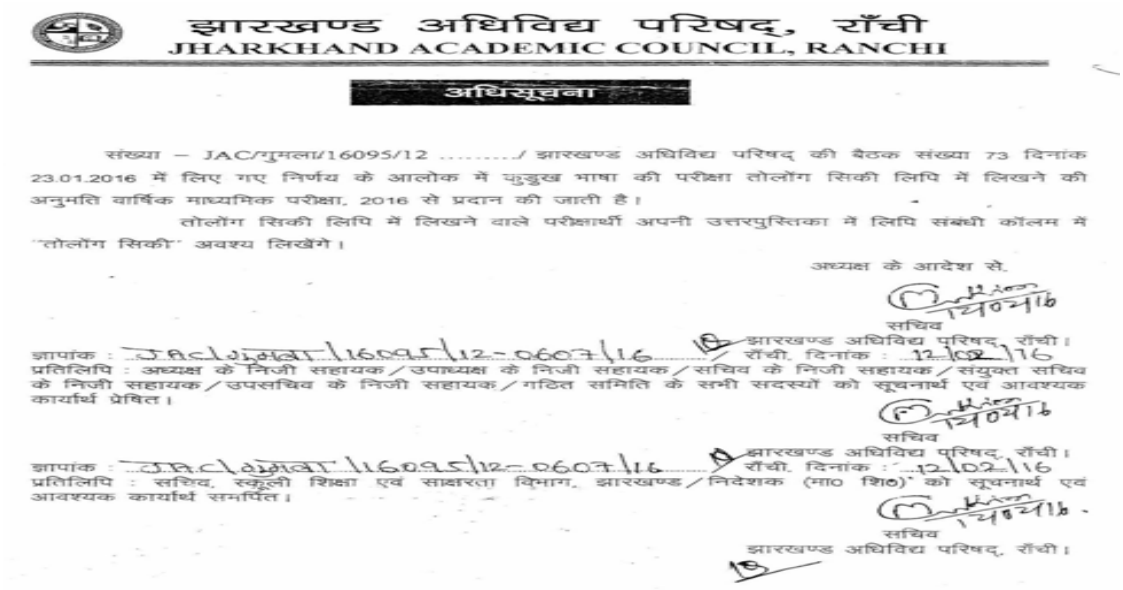

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ...../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुड़ुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में "तोलोंग सिकी" अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक/उपाध्यक्ष के निजी सहायक/सचिव के निजी सहायक/संयुक्त सचिव के निजी सहायक/उपसचिव के निजी सहायक/गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड/निदेशक (मा० शि०) को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

3. दिनांक 20 फरवरी 2016 को तोलोंग सिकि उल्ला (दिवस), राजकीयकृत मध्य विद्यालय छारदा, सिसई, गुमला के प्रांगन में मनाया गया। यह कार्यक्रम, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (स्वंय सेवी संस्था), कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो एवं राजकीयकृत कार्तिक उच्च विद्यालय, छारदा के जनसहयोग से आयोजित किया गया था। इस दिवस में बतौर मुख्य अतिथि शिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान विशप डॉ0 निर्मल मिंज उपस्थित थे। विशप मिंज ने अपने संबोधन में कहा – (1) अक्कुन गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेंदेरआ लगिया एकल, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेरओ। नेड्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टूःड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ोत–बचओत दरा एःदना जोःगे

कमओत। (2) एका बा:री नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, असन नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टू:ड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ्ई। नमूद गे – एङहय, निङहय, धरमे, करमा, बयना, मयना, कय्र, नउड़ा, डउड़ा, कव्डी, बव्ग, भँवरो, नव्र, चँव्र, चँव्रा–भँव्रा गुट्ठी।

मुख्य वक्ता के तौर पर तोलोङ सिकि (लिपि) के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा एवं संयुक्त सचिव श्री फिलमोन टोप्पो, मांडर के पूर्व विधायक श्री विश्वनाथ भगत, अद्दी अखड़ा के कोषाध्यक्ष श्री मंगरा उराँव, पड़हा कोटवार श्री गजेन्दर उराँव तथा जमशेदपुर से आये मेहमान श्रीमती बिलचो लकड़ा आदि कई गनमान्य व्यक्तियो ने कुँड़ुख़ कत्था एवं तोलोंग सिकि की आवश्यकता सह उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जनसाधारण को सूचना दी गई कि दिनांक 12.02.2016 को झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि में लिखे जाने की अनुमति मिली है। वर्ष 2015 के तोलोंग सिकि उल्ला (दिवस) में बतौर मुख्य अतिथि माननीय झारखण्ड विधान सभा अध्यक्ष, श्री दिनेश उराँव ने बच्चों के समक्ष कहा था कि कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो के छात्र 2016 सत्र से कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा अपनी लिपि तोलोंग सिकि में लिख सकें, उसके लिए वे प्रयास करेंगे। बच्चों की मांग दिनांक 12.02.2016 को पूरी हुई और वे खुशी–खुशी अपनी इच्छानुसार परीक्षा लिखें। स्थानीय लोगों में सिसई प्रखण्ड के प्रमुख श्री देवेन्द्र उराँव, उपप्रमुख श्री दीपक देवघरिया, छारदा पंचायत की मुखिया एवं स्थानीय पड़हा पंच के कई पदाधिकारी मौजूद थे। इस अवसर पर कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, पड़हा धुमकुड़िया कुँड़ुख़कत्थ लूरमंडा, छोटकासैन्दा, नव प्राथमिक विद्यालय नीचेटोली छारदा, जय सरना उच्च विद्यालय, देवाकी, घाघरा, नवीन डोमन थियोलोजिकल कॉलेज, इटकीमोड़, राँची आदि विद्यालय छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। सभा का शुभारंभ राजकीयकृत मध्य विद्यालय छारदा की शिक्षिका के स्वागत भाषण से हुआ। सभा का संचालन श्री बिनोद भगत 'हिरही' के द्वारा सम्पन्न हुआ। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अद्दी अखड़ा के सदस्य श्री राजेन्द्र उराँव ने कुँड़ुख़ समाज के अगुओं तथा झारखण्ड सरकार के नेताओं एवं अधिकारियों को, विशेष रूप से मानव संसाधन विकास विभाग, राँची एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया तथा उन्हें इस ऐतिहासिक कार्य के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

4. दिनांक 22.02.2016 को डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी राँची के सभागार में तोलोंग सिकि सम्मान सह कुँड़ुख़ भाषा जनजागृति समारोह सम्पन्न हुआ। यह समारोह, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा दिनांक 12.02.2016 को कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि (लिपि) में लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के पर समाज एवं सरकार का आभार व्यक्त करने के उदेश्य से आयोजित किया गया था। मुख्य रूप से इसका आयोजन अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (रजि0) एवं अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची (केन्द्रीय कार्यालय) तथा कुँड़ुख़ समाज के लोगों द्वारा किया गया था। समारोह के मुख्य अतिथि झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष प्रो0 दिनेश उराँव, विशिष्ट अतिथि डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत, डॉ0 विशप निर्मल मिंज, आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरीशंकर मिंज, वरीय पत्रकार श्री किसलय जी एवं श्री बंधन तिग्गा उपस्थित थे। सभी वक्ताओं ने तोलोंग सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के लिए झारखण्ड सरकार एवं शिक्षा विभाग का आभार व्यक्त किया और इसे कुँड़ुख़ समाज की एक बड़ी उपलब्धि कही गई। इस अवसर पर शिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान विशप डॉ0 निर्मल मिंज ने अपने संबोधन में कहा कि – (1) अक्कुन गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेंदेरआ लगिया एकल, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेरओ। नेड्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टूःड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ोत–बचओत दरा एःदना जोःगे कमओत। (2) एका बाःरी नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, असन नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टूःड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ्ई। (3) कुँड़ुख़ समाज के लिय तोलोंग सिकि की रचना करने वाले डॉ0 नारायण उराँव को राँची विश्वविद्यालय की ओर से डी0लिट0 की उपाधी प्रदान करे, इसके लिए सामाजिक सह प्रशासनिक प्रयास हो। प्रो0 डॉ0 करमा उराँव ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर संविधान की आठवीं सूची में कुँड़ुख़ भाषा को शामिल करवाने हेतु कार्य किया जाय। डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत ने कहा कि कुँड़ुख़ भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु कुँड़ुख़ भाषा सप्ताह मनाया जाय तथा जगह–जगह पर अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ। गुमला के विधायक श्री शिवशंकर उराँव ने कहा कि तोलोङ सिकि, एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली लिपि है, अतएव भाषा–संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्द्धन के लिए तोलोङ सिकि को अपनाना ही पड़ेगा। आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरी शंकर मिंज ने कहा कि कल्याण विभाग ही ओर से संचालित विद्यालयों में तोजोंग सिकि से पठढ़ाई आरंभ करने की व्यवस्था आरंभ की जाएगी, इसके लिए 1ली से 3री कक्षा तक पुस्तक की छपाई की जाएगी। सरना प्रार्थना सभा के धरम गुरू श्री बंधन तिग्गा ने कहा कि धुमकुड़िया के माध्यम से तोलोंग सिकि में पढ़ाई–लिखाई की जाएगी। मुख्य अतिथि प्रो0 दिनेश उराँव ने कहा – मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि यह महती कार्य का शुभारंभ, संयोग से मेरे विधान सभा क्षेत्र से ही हुआ है। अतएव इस कार्य में मैं भी आप सबसें के साथ जुड़ा हुआ हूँ और इसके विकास में मेरी आवश्यकता जहाँ भी होगी वहाँ मैं समाज के साथ हूँ।

समारोह में लिपि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव ने कहा – ''मैंने अपना कार्य पूरा किया, अब समाज की बारी है। समाज के लोग मिलकर इसे आगे ले चलें।'' मंच का संचालन श्री राजेन्द्र

भगत द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के केन्द्रीय अध्यक्ष फादर अगुस्तिन केरकेट्टा ने किया।

भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में बोले विधानसभा अध्यक्ष डॉ. दिनेश उरांव

तोलोंग सिकि को मान्यता मिलने से कुड़ख को मिला भाषा का दर्जा

- मोरहाबादी के डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में किया गया समारोह का आयोजन
- 12 फरवरी को जैक ने अधिसूचना जारी कर परीक्षा में 'तोलोंग सिकि' लिपि में लिखने की अनुमति दी थी

सिटी रिपोर्टर | रांची

तोलोंग सिकि लिपि को सरकारी मान्यता मिल जाने से कुड़ख को अब पूर्ण भाषा का दर्जा मिल गया है। यह अत्यंत हर्ष का अवसर है कि दशकों बाद आदिवासी संस्कृति में यह नया आयाम जुड़ा है। उक्त बातें झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष दिनेश उरांव ने कही। वे सोमवार को मोरहाबादी स्थित डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में आयोजित 'तोलोंग सिकि सम्मान सह कुड़ख भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह' को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

गौरतलब है कि 12 फरवरी 2016 को जैक (झारखंड अधिविध परिषद) ने एक अधिसूचना जारी करते हुए निर्णय लिया था कि विद्यार्थी अब माध्यमिक परीक्षा में कुड़ख भाषा 'तोलोंग सिकि' लिपि में लिख सकते हैं। विस अध्यक्ष ने आदिवासी कल्याण आयुक्त की उस घोषणा पर प्रसन्नता व्यक्त की। कहा कि कल्याण विभाग के विद्यालयों की कक्षा एक और दो में कुड़ख अब एक विषय के तौर पढ़ाई जाएगी। झारखंड में ऐसे कुल 132 स्कूल चल रहे हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत कुड़ख विनती के साथ हुई। आयोजक संस्था 'अड़ी अखड़ा' के सचिव जीता उरांव ने लिपि और संस्कृति की महत्ता का बखान मांदर की थाप पर अपने 'जादुर गीत' से किया। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र भगत ने किया। स्वागत भाषण संस्था के अध्यक्ष एएम खलखो ने किया और धन्यवाद ज्ञापन फादर अगुस्टीन केरकेट्टा ने किया।

मोरहाबादी के डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विस अध्यक्ष।

आठवीं अनुसूची के लिए हो प्रयास : डॉ. करमा

रांची विवि के डीन सह मानवशास्त्री डॉ. करमा उरांव ने तोलोंग सिकि लिपि के सर्जक डॉ. नारायण उरांव के इस काम को अतुलनीय बताते हुए उनका आभार जताया। उन्होंने कहा कि अब वक्त आ गया है कि कुड़ख भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करवाने की कोशिश की जाए। राष्ट्रीय स्तर पर स्टीयरिंग कमेटी बनाकर केंद्र पर दबाव बनाने की रणनीति अपनाई जाएगी। उन्होंने मौजूद श्रोताओं को आश्वासन दिया कि इस वर्ष होनेवाले सभी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में वह तोलोंग सिकि का भरपूर प्रचार-प्रसार करेंगे।

स्कूलों के लिए उपलब्ध कराएं पुस्तकें : मिंज

कार्यक्रम में कल्याण आयुक्त गौरी शंकर मिंज ने कहा कि संबंधित विशेषज्ञ इस विषय की पुस्तक तोलोंग सिकि लिपि में तैयार कर उन्हें उपलब्ध कराएं, ताकि जल्द से जल्द कक्षाओं में इसकी पढ़ाई शुरू हो सके। विनोबा भावे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. आरएन भगत ने सुझाव दिया कि 12 फरवरी की यह बड़ी उपलब्धि हर वर्ष 'कुड़ख भाषा सप्ताह' के तौर पर मनाया जाए, जिसमें सांस्कृति, शैक्षिक प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें। कार्यक्रम को धर्मगुरु बंधन तिग्गा, गुमला के विधायक शिवशंकर उरांव, पत्रकार किसलय ने भी संबोधित किया।

आदिवासी समाज निभाए जिम्मेवारी : डॉ. नारायण

तोलोंग सिकि लिपि का सृजन करनेवाले डॉ. नारायण उरांव ने लिपि का लोकार्पण करते हुए कहा, मैंने अपना काम पूरा किया, अब यह पूरे आदिवासी समाज की जिम्मेवारी है कि कुड़ख को दुनिया की भाषाओं की अंतिम पंक्ति तक पहुंचाने का प्रयास शुरू करें। इससे हमारी झारखंडी संस्कृति को दुनिया भर में पहचान मिलेगी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर आमंत्रित बिशप डॉ. निर्मल ने डॉ. नारायण उरांव के इस योगदान के लिए उन्हें डी.लिट. की उपाधि दिए जाने की वकालत की, जिसका सभाम वक्ताओं ने समर्थन किया।

तोलोंग सिकि सम्मान सह कुड़ुख भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में स्पीकर ने कहा

अनमोल उपहार है तोलोंग सिकि लिपि

5. दिनांक 21.02.2016, दिन रविवार को **52 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा** के सदस्यों द्वारा ग्राम छोटकासैन्दा, सिसई, गुमला में पड़हा कोटवार श्री गजेन्द्र उराँव के संयोजन में बैठक हुई। बैठक में झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा दिनांक 12.02.2016 को कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि (लिपि) में लिखे की अनुमति प्रदान किये जाने पर कुँड़ुख़ समाज के लोगों ने सरकार का आभार व्यक्त किया। समाज के चिंतनशील व्यक्तियों ने, झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष श्री दिनेश उराँव, मुख्यमंत्री, श्री रघुवर दास, मानव संसाधन विकास मंत्री, डॉ0 (श्रीमती) नीरा यादव, प्रधान सचिव, श्रीमती अराधना पटनायक एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अध्यक्ष, श्री अरविन्द कुमार सिंह को इस कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही ''अद्दी अखड़ा (रजि0) एवं अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची (संस्था) के सदस्यों एवं विशिष्ट रूप से डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' (तोलोङ सिकि के संस्थापक), वरीष्ठ पत्रकार श्री किसलय जी (लिपि का फोन्ट निर्माण) एवं फा0 अगस्तिन केरकेट्टा को समाज की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया गया, जिनके सार्थक प्रयास से कुँड़ुख़ भाषा को इस उँचाई तक पहुँचाने में सफलता हासिल हुई।

6. दिनांक 08–09 मई 2016 को 52 पड़हा ग्रामसभा बिसु सेन्दरा का दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन ग्राम : बुड़का, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में सम्पन्न हुआ। पड़हा बिसुसेन्दरा सम्मेलन में कुँड़ुख़ भाषा–संस्कृति की रक्षा एवं विकास के लिए कठोर निर्णय लिया गया। निर्णय में कहा गया कि सामुहिक प्रयास से कुँड़ुख़ भाषा की लिपि **तोलोंग सिकि** को झारखण्ड सरकार द्वारा शिक्षा पद्धति में शामिल कर लिया गया, जिसके लिए सरकार के सभी लोग धन्यवाद के पात्र हैं। अब समाज की बारी है कि सभी मिलकर इसे अपने जीवन पद्धति में यानि पठन–पाठन में शामिल करें। इस सम्मेलन में स्वयं सेवी संस्था – अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अख़ड़ा) के सचिव श्री जिता उराँव, कोषाध्यक्ष श्री बिपता उराँव, 52 पड़हा के बेल, देवान, कोटवार एवं ग्राम सभा के पहान, पुजार, महतो, करठा, गँवरो लोगों के साथ मिलकर परम्पारिक सामाजिक स्वशासन व्यवस्था को, वर्तमान परिस्थिति में व्यवहारिक बनाने की दिशा में ढाँचा तैयार किया गया।

7. दिनांक 21–22 मई 2016, दिन शनिवार एवं रविवार को **कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया** का दोयता चान जतरा राँची विश्वविद्यालय राँची आर्यभट्ट सभागार में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 उषा रानी मिंज, सचिव श्री नाबोर एक्का की उपस्थिति में मुख्य अतिथि विधान सभा अध्यक्ष श्री दिनेश उराँव, राष्टीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री रामेश्वर उराँव, मानवशास्त्री डॉ0 करमा उराँव, पद्मश्री सिमोन उराँव, टी0आर0एल0 के अध्यक्ष डॉ0 के0सी टुडू आदि के उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मंच संचालन श्री अशोक बखला ने किया।

05 • रांची • रविवार • 22 मई 2016 हिन्दुस्तान रांची

कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया के दो दिवसीय दशक समारोह की शुरुआत

भाषाएं जोड़ने का काम करती हैं

शनिवार को आर्यभट्ट सभागार में आयोजित दशक समारोह में पुस्तक का विमोचन करते स्पीकर दिनेश उरांव, सिमोन उरांव (पद्मश्री) व रामेश्वर उरांव व अन्य।

रांची | प्रमुख संवाददाता

भाषाएं संस्कृति और सभ्यता को जोड़ती हैं। जनजातीय भाषाओं में उनकी समृद्ध संस्कृति का इतिहास समाहित है। जो जनजातीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोकर भाषाई संस्कृति को सुदृढ़ किया जा सकता है। यह बात विधानसभा अध्यक्ष दिनेश उरांव ने कही।

शनिवार को वह मोरहाबादी स्थित आर्यभट्ट सभागार में आयोजित दो दिवसीय दशक समारोह के राष्ट्रीय सम्मेलन में बोल रहे थे। कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से इसका आयोजन किया गया है। इस सम्मेलन में 10 राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ नेपाल व बांग्लादेश के कुड़ुख भाषाविद भी हिस्सा ले रहे हैं। सम्मेलन में राज्य की नौ जनजातीय भाषा- कुड़ुख, मुंडारी, हो, संताली, खड़िया, नागपुरी, कुरमाली, खोरठा व पंचपरगनिया के भाषाविद, शिक्षाविद, विद्यार्थी व शोधार्थी मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लिटरेरी सोसाइटी की अध्यक्ष उषा रानी मिंज ने की।

विधानसभा अध्यक्ष प्रो दिनेश उरांव ने यह आश्वासन दिया कि कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए उनके स्तर से जो सहयोग बन पड़ेगा, देंगे। उन्होंने मैट्रिक में टॉप करनेवाली कुड़ुख भाषा की छात्रा को अपनी तरफ से 31,000 रुपए की पुरस्कार राशि देने की घोषणा की। रांची विश्वविद्यालय के डीन सोशल साइंस डॉ करमा उरांव ने कहा ऐसे आयोजनों से भाषाई संस्कृति मजबूत होगी।

सम्मेलन के पहले दिन दो तकनीकी सत्र हुए। इनमें शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र पढ़े। सम्मेलन में दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, ओडिशा समेत 10 राज्यों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। मौके पर पानीवाले बाबा सिमोन उरांव (पद्मश्री), अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष रामेश्वर उरांव, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ केसी टुडू, डॉ हरि उरांव, डॉ उमेश नंद तिवारी, डॉ त्रिवेणी नाथ साहू, नाबोर एक्का, नेपाल के आर विजय उरांव आदि मौजूद थे।

राष्ट्रीय सम्मेलन

- कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने में सहयोग देने का स्पीकर का आश्वासन
- मैट्रिक में टॉप करनेवाली कुड़ुख भाषा की छात्रा को 31,000 रुपए की पुरस्कार राशि देने की घोषणा
- सम्मेलन में 10 राज्यों के प्रतिनिधि के साथ नेपाल व बांग्लादेश के कुड़ुख भाषाविद ले रहे हिस्सा

पुस्तकों का विमोचन

संगोष्ठी में कुड़ुख सोसाइटी की स्मारिका 'दोयता चान जतरा- दिन्धा पुना', का विमोचन किया गया। साथ ही महेश भगत की किताब- 'कुड़ुख भाषा का उद्भव एवं विकास' व 'कुड़ुख भाषा व्याकरण एवं साहित्य', पुस्तक का विमोचन हुआ। डॉ नारायण उरांव की कुड़ुख भाषा की पारिभाषिक शब्दावली नामकरण योजना व बंदे उरांव के 'पड़हा अखड़ा खंडखा-2 कार्तिक उरांव विशेषांक', का विमोचन हुआ।

आज निकलेगी रैली: रविवार को कुड़ुख भाषा की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से शुरू कराने व इसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर जिला स्कूल मैदान से सुबह नौ बजे रैली निकाली जाएगी। रैली कचहरी चौक, रेडियम रोड से होकर आर्यभट्ट सभागार तक जाएगी।

प्रभात खबर कैंपस/सिटी रांची, रविवार 22.05.2016

आयोजन . कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी का समारोह शुरू, विधानसभा अध्यक्ष ने कहा

अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा जरूरी

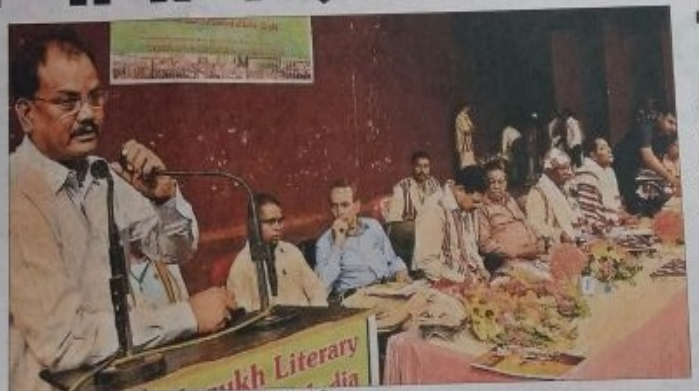

कुड़ुख लिटररी सोसाइटी ऑफ इंडिया का दशक समारोह शनिवार को आर्यभट्ट सभागार में शुरू हुआ. कार्यक्रम के पहले दिन कई विद्वानों ने विचार रखे.

संवाददाता ▸ रांची

कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष समेत कई अतिथियों ने रखे विचार .

- 'दोयता चान जतरा' सहित छह पुस्तकों का लोकार्पण
- आज निकलेगा जुलूस

कुड़ुख भाषा-संस्कृति वालों के लिए अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा जरूरी है. अपनी भावी पीढ़ी को इसे धरोहर के रूप में सौंपने के लिए संस्थागत तरीके से विचार करने की आवश्यकता है. उक्त बातें विधानसभा अध्यक्ष अध्यक्ष दिनेश उरांव ने कही. वे शनिवार को आर्यभट्ट सभागार में कुड़ुख लिटररी सोसाइटी ऑफ इंडिया के दशक समरोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे.

श्री उरांव ने कहा कि कुड़ुख को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की चिंता पूरे समाज की है. वह इसके लिए अपने स्तर से पूरा प्रयास करेंगे. जेपीएससी में जन जातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को समाहित करने की दिशा में भी आगे बढ़ रहे है. पहली बार तोलोंग सिकि लिपि में मैट्रिक की परीक्षा लिखने की अनुमति मिली है.इस लिपि के प्रति विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए वह इस साल ऐसे विद्यार्थियों में अव्वल आनेवाले को 31,000 रुपये देकर पुरस्कृत करेंगे. अनुसूचित जन जातीय आयोग के अध्यक्ष डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि गांव-देहात में ही कुड़ुख को बचा कर रखा गया है. पढ़े-लिखे लोग सिर्फ हिंदी-अंगरेजी में बात करते हैं. भाषा तभी बचेगी, जब इसमें साहित्य का सृजन होगा. पद्मश्री पड़हा राजा सिमोन उरांव ने कहा कि हमारे पुरखों ने भाषा, रीति-रिवाज सबको सहेज कर रखा, पर हम इन्हें छोड़ते जा रहे हैं. रांची विवि में सोशल साइंसेज के डीन डॉ करमा उरांव ने कहा कि कुड़ुख भाषियों का लेखन व साहित्य सृजन मजबूत होगा, तो भाषा भी सशक्त होगी. इससे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ ऊषा रानी मिंज ने प्रतिभागियों का स्वागत किया. इस दौरान दशक समारोह की स्मारिका 'दोयता चान जतरा', महेश भगत की 'कुड़ुख भाषा, साहित्य और व्याकरण' व 'कुड़ुख भाषा का उदभव और विकास', डॉ नारायण उरांव की 'कुड़ुख भाषा की पारिभाषिक शब्दावली योजना', नेपाल से आये बेचन उरांव के संकलन 'कुड़ुख उरांव' और बंदे खलखो की 'पड़हा पत्रिका' (कार्तिक उरांव विशेषांक) का लोकार्पण किया गया. वर्धा विवि महाराष्ट्र में कुड़ुख-हिंदी के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध करनेवाली गोल्ड मेडलिस्ट दीप्ति एक्का को भी सम्मानित किया गया. कुड़ख को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने व स्कूलों में इसकी पढ़ायी प्राथमिक स्तर से शुरू करने की मांग को लेकर 22 मई को जिला स्कूल मैदान से आर्यभट्ट सभागार तक जुलूस निकाला जायेगा. कार्यक्रम में प्रो हरि उरांव, नाबोर एक्का, डॉ एचएन सिंह, भुवनेश्वर अनुज, अथनास टोप्पो,जॉन मिंज, नाबोर एक्का, बेचन उरांव, प्रो महेश भगत, शशि विनय भगत, गोरख नाथ तिर्की, अशोक बखला आदि मौजूद थे.

सर्च कमेटी में

रांची LIVE सिटी

Hindustan 23 May

कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया का दशक समारोह आयोजित, 12 राज्यों से जुड़े कुड़ुखभाषियों ने अपनी आवाज बुलंद की

'कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करें'

ांची | प्रमुख संवाददाता

कुड़ख भाषा को आठवीं अनुसूची में ामिल करने व झारखंड की तृतीय राजभाषा के रूप में इसकी पढ़ाई सभी ाथमिक स्तर पर सभी कुड़ुख भाषी क्षेत्रों ें सुनिश्चित करने की आवाज बुलंद की ई। रविवार कुड़ुख लिटरेरी सोसाईटी की ओर से आयोजित दो दिवसीय दशक समारोह संपन्न हुआ। 12 राज्यों से जुड़े कुड़ुखभाषियों ने इसके प्रचार-प्रसार और संरक्षण के हक में अपनी आवाज बुलंद ी। साथ ही, तय हुआ कि इस वर्ष कुड़ख ाषा का राष्ट्रीय सम्मेलन अलीपुर द्वार में ायोजित होगा।

प्रभातफेरी निकाली : कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को झारखंड समेत 12 राज्यों से आए तिनिधियों ने प्रभातफेरी निकाली। भातफेरी सुबह 9 बजे जिला स्कूल रिसर से निकली। कचहरी चौक, रेडियम ड से गुजरती हुई प्रभातफेरी आयोजन स्थल मोरहाबादी स्थित आर्यभट्ट सभागार तक पहुंची। यह मांग भी गई कि झारखंड में तृतीय राजभाषा का दर्जा होते हुए भी कुड़ुख को वे सुविधाएं नहीं मिल रही हैं, जिसकी यह हकदार है। साथ ही, राज्य के सभी कुड़ुखभाषी क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर पर कुड़ुख की पढ़ाई शुरू करने की मांग की गई। जबकि, पायलट प्रोजेक्ट के तहत राज्य सरकार इस सत्र से गुमला से इसकी शुरुआत कर रही है। रैली में पश्चिम बंगाल की एक महिला प्रतिभागी की तबीयत बिगड़ गई।

कुड़ुख को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर प्रभातफेरी निकाली।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं : विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भाषाई एकता को मजबूत करने का संकल्प दुहराया। दिल्ली, अंडमान, असम, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार व झारखंड के अलावा नेपाल से आए कलाकारों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों से सांस्कृतिक छटा बिखेरी।

रविवार की शाम विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भाषाई एकता को मजबूत करने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक हुई : राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई। इसमें तय हुआ कि इस वर्ष अक्तूबर में कुड़ख भाषा का राष्ट्रीय सम्मेलन अलीपुर द्वार में होगा। कुड़ख को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए सभी 12 राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों के मुख्यमंत्री व राज्यपाल की ओर से केंद्र सरकार को ज्ञापन भिजवाएंगे। यह निर्णय भी लिया गया कि कुड़ुख की शोध पत्रिका 'कुड़ुख डहरे' का मासिक प्रकाशन किया जाएगा। अक्तूबर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन कुड़ुख के वृहद निबंध साहित्य के विमोचन का निर्णय लिया गया। मौके पर डॉ उषा रानी मिंज, डॉ हरि उरांव, महेश भगत, प्रो चौठी उरांव, प्रो प्रवीण उरांव, डॉ सविता उरांव, प्रो महामणि उरांव, प्रो मंती उरांव व डॉ आभा खलखो मौजूद थे।

Khabar Mantra 23 May

कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग पर निकाली प्रभात फेरी

■ दो दिनी कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी का दशक समारोह संपन्न

रांची। भारत के 13 राज्य के उरांव समुदाय के लोगों ने कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर सुबह जिला स्कूल परिसर से प्रभात फेरी निकाली। यह फेरी कचहरी, रेडियम रोड होते आर्यभप्त सभागार पहुंची। कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से निकाली गयी रैली में उरांव समुदाय के लोग हुए और अपनी मांग रखी। डॉ हरि उरांव ने बताया कि कुड़ुख़ भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के उद्देश्य से पिछले दस वर्षों से काम किया जा रहा है। सभी अर्हताएं पूरी करता है यह भाषा। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 50 लाख है। साहित्य की कोई कमी नहीं है। सरकार से हमारी मांग है कि कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करे। प्रभात फेरी के बाद आर्यभप्त सभागार में भाषा के विकास, संरक्षण, संवर्द्धन पर चर्चा हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। मौके पर अध्यक्ष डॉ उषा रानी मिंज, नबोर एक्का, महेश भगत, अशोक बखला सहित अन्य उपस्थित थे।

8. दिनांक 29 मई 2016, दिन रविवार को कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा के विकास हेतु कुँड़ुख़ भाषी बुद्धिजीवियों द्वारा तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि का गठन किया गया। यह बैठक, कमिटि कार्यालय – लॉन व्यू , मकान संख्या 10, करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची में हुई। बैठक में, सभी संबंधित विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए टेक्स्टबुक कमिटि के प्रस्ताव को अनुमोदित कर सबों से हस्ताक्षर लिया गया। कमिटि इस प्रकार है :– अध्यक्ष – डॉ0 रामकिशोर भगत, अध्यक्ष – डॉ0 रामकिशोर भगत, उपाध्यक्ष – श्री बिपता उराँव, सचिव – श्री जिता उराँव, उपसचिव– श्री बहुरा उराँव, कोषाध्यक्ष – श्री फिलमोन टोप्पो, उपकोषाध्यक्ष – श्री बिनोद भगत 'हिरही', सदस्य – डॉ0 नारायण भगत, फा0 अगस्तिन केरकेटटा, श्री सरन उराँव, श्री मनोरंजन लकड़ा, डॉ0 नारायण उराँव, श्री लोधेर उराँव, श्री किसुन उराँव, श्री नागराज उराँव, श्री भुनेश्वर उराँव एवं श्री किसलय (तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर फोन्ट निर्माता) को सदस्य मनोनित किया गया।

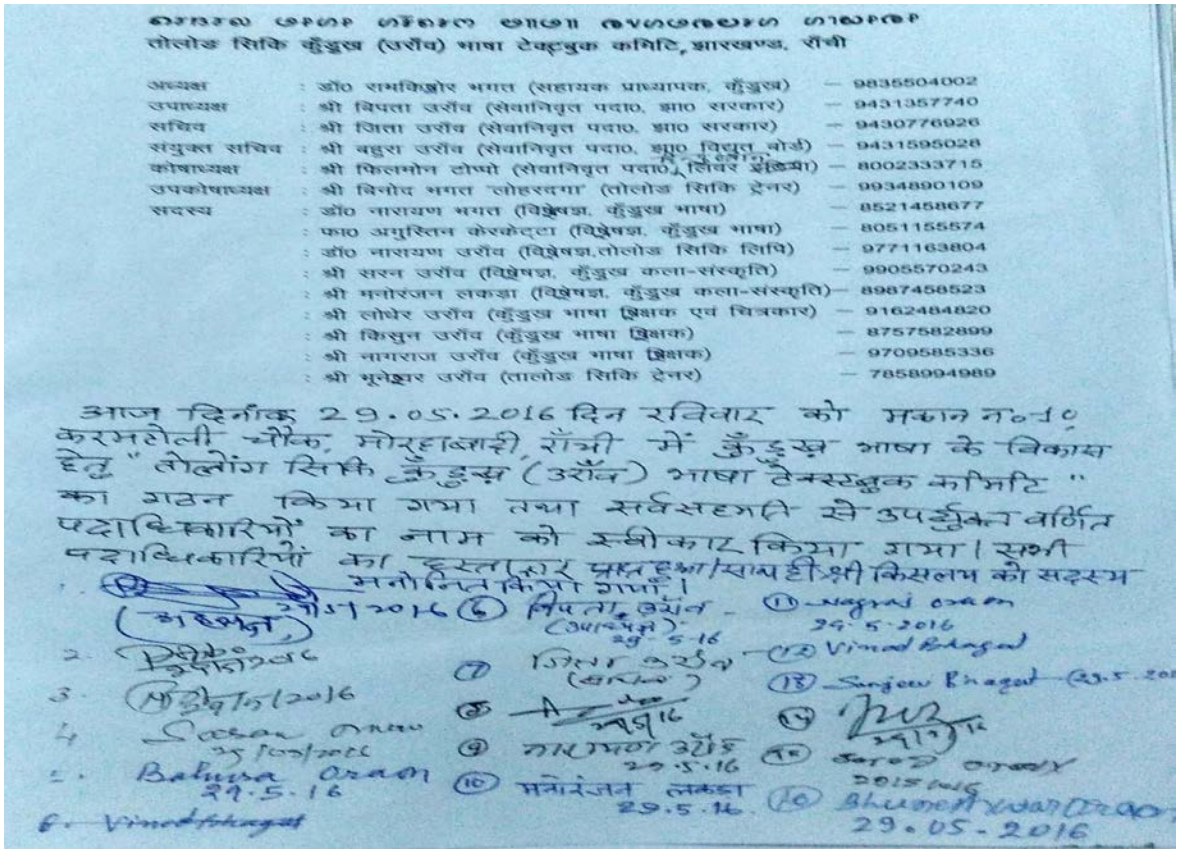

तोलोङ सिकि कुँड़ुख (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि, झारखण्ड, राँची

अध्यक्ष	: डॉ0 रामकिशोर भगत (सहायक प्राध्यापक, कुँड़ुख)	– 9835504002
उपाध्यक्ष	: श्री बिपता उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 सरकार)	– 9431357740
सचिव	: श्री जिता उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 सरकार)	– 9430776926
संयुक्त सचिव	: श्री बहुरा उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 विद्युत बोर्ड)	– 9431595028
कोषाध्यक्ष	: श्री फिलमोन टोप्पो (सेवानिवृत पदा0, लिवर इंडिया)	– 8002333715
उपकोषाध्यक्ष	: श्री बिनोद भगत 'लोहरदगा' (तोलोङ सिकि ट्रेनर)	– 9934890109
सदस्य	: डॉ0 नारायण भगत (विशेषज्ञ, कुँड़ुख भाषा)	– 8521458677
	: फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा (विशेषज्ञ, कुँड़ुख भाषा)	– 8051155574
	: डॉ0 नारायण उराँव (विशेषज्ञ,तोलोङ सिकि लिपि)	– 9771163804
	: श्री सरन उराँव (विशेषज्ञ, कुँड़ुख कला-संस्कृति)	– 9905570243
	: श्री मनोरंजन लकड़ा (विशेषज्ञ, कुँड़ुख कला-संस्कृति)	– 8987458523
	: श्री लोधेर उराँव (कुँड़ुख भाषा शिक्षक एवं चित्रकार)	– 9162484820
	: श्री किसुन उराँव (कुँड़ुख भाषा शिक्षक)	– 8757582899
	: श्री नागराज उराँव (कुँड़ुख भाषा शिक्षक)	– 9709585336
	: श्री भुनेश्वर उराँव (तोलोङ सिकि ट्रेनर)	– 7858994989

आज दिनांक 29.05.2016 दिन रविवार को मकान नं० 10, करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची में कुँड़ुख़ भाषा के विकास हेतु " तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि " का गठन किया गया तथा सर्वसम्मति से उपर्युक्त वर्णित पदाधिकारियों का नाम को स्वीकार किया गया। सभी पदाधिकारियों का हस्ताक्षर प्राप्त हुआ। साथ ही श्री किसलय को सदस्य मनोनित किया गया।

29.5.16

29.05.2016

9. दिनांक 12.06.2016, दिन रविवार को **ग्राम सियांग, थाना – सिसई, जिला – गुमला (झारखण्ड)** के **उराँव (कुँड़ुख़) आदिवासी समाज** ने अपनी **परम्परागत शिक्षा केन्द्र, धुमकुड़िया** का शुभारंभ किया। इस अवसर पर पी0 एम0 सी0 एच0, धनबाद के चिकित्सक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं उनके साथी अद्दी अखड़ा, संस्था, मुख्यालय, राँची के कोषाध्यक्ष श्री बिपता उराँव ने वर्तमान समय में परम्परागत शिक्षा केन्द्र, धुमकुड़िया की आवश्यकता एवं उपयोगिता के बारे में विस्तार पूर्वक बतलाया। डॉ0 उराँव ने कहा कि – जिस समय हमारे पूर्वजों के पास स्कूल–कॉलेज, थाना–पुलिस, कोर्ट–कचहरी, मंदिर, मस्जिद, गिरजा आदि कुछ भी नहीं पँहुचा था, उस समय हमारे पूर्वज, कौन सी शक्तियों के बल पर हम सब को संजोकर रख पाये ? एक सभ्य समाज के प्रत्येक मनुष्य को – रोटी, कपड़ा, मकान और स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अध्यात्म की आवश्यकता होती है। रोटी, कपड़ा, मकान आवश्यक आवश्यकता की पूर्ती, मनुष्य व्यक्तिगत रूप से कर लेता है, किन्तु अन्य तीन यानि स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अध्यात्म की आवश्यकता की पूर्ती हेतु सामूहिक रूप से मिल–बैठकर पूरा करता है। उराँव (कुँड़ुख़) समाज के पूर्वजों ने भी इन आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु उपाय खोज रखे थे। हमारे पूर्वजों की वे शक्तियाँ थीं – 1. पड़हा 2. अखड़ा 3. धुमकुड़िया 4. ग्राम सभा 5. चाःला अयंग 6. देवती अयंग 7. बिसु सेन्दरा। इन शक्तियों के जोड़कर, हम लोगों के पूर्वज हम सबको यहाँ तक ले आये, किन्तु वर्तामान में हमने अपने पूवर्जों की सभी चीजों को छोड़ दिया है और समय की दौड़ में दिशाहीन नजर आ रहे हैं। हम सबको फिर से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु सामूहिक तरीके को अपनाना होगा। हमें शिक्षा के परम्परागत तरीके को फिर से मुल्यांकन करना होगा। हमारे पूर्वजों के समय काल में, सिर्फ श्रुति साहित्य ही विकसित थी, अतएव धुमकुड़िया में सिर्फ बोलकर या गाकर या किसी कार्य को सम्पन्न कर सिखलाया जाता था। वर्तमान स्कूल में बोलकर या गाकर सीखने के साथ–साथ लिखकर सिखलाये जाने की व्यवस्था है। इस नई विधा ने, परम्परागत विधा का कमर तोड़ दिया। अब हम सबकों इस नई विधा अर्थात लिखने–पढ़ने की विधा को धुमकुड़िया के साथ जोड़ना होगा। हमारे बच्चे, आधुनिक स्कूल में, हिन्दी पढ़ेंगे, अंगरेजी पढ़ेंगे और अपनी मातृभाषा (कुँड़ुख़) भी पढ़ेंगे। झारखण्ड सरकार, हमारी भाषा–संस्कृति की सुरक्षा हेतु मातृभाषा में पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था कर रही है और सभी नौकरियों में मातृभाषा को स्थान दिया जा रहा है। ऐसे में हम सबको अपनी परम्परागत व्यवस्था को फिर से मुल्यांकन कर यथोचित निर्णय लेना होगा। पूर्व में राजा–राजवाड़ों के क्षेत्र में गुरूकूल (आश्रम) हुआ करता था, जहाँ सिर्फ राजपरिवार या उनके निकट संबंधी ही शिक्षा ग्रहण करते थे। आम लोगों के लिये शिक्षा ग्रहण करने की कोई सामान्य व्यवस्था नहीं थी, किन्तु हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक गाँव एवं टोला में परम्परागत शिक्षा केन्द्र, धुमकुड़िया खोल रखा था। शायद यह दुनिया में अनोखी पाठशाला थी। राज्य सरकार इस अनोखी पाठशाला को मदद करे। इस संबंध में पद्मश्री डॉ0 रामदयाल मुण्डा कहा करते थे – जब तक सउब गाँव कर अखड़ा अउर धुमकुड़िया नी जागी तब तक हामर आदिवासी समाज कर विकास अधुरा रही। से ले हर गाँव में ए गो अखड़ा होवेक चाही अउर अखड़ा जगन धुमकुड़िया। संगे–संगे हर धमकुड़िया में ए गो पुस्तकालय अउर प्राथमिक उपचार कर साधन होवेक चाही। डॉ0 मुण्डा जी का यह सपना शायद सियांग वासियों ने आरंभ कर दिया है और समय की मांग भी यही है। अपनी भाषायी धरोहर को बचाकर रखने के संबंध में हुई परिचर्चा में जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकता **के** प्रोफेसर, भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य का कहना है – **किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसे नेत्र ग्राह्य रूप यानि उसकी अपनी लिपि का होना आवश्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में यूनिवर्सल सिस्टम को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने के लिए अपनी मातृभाषा की शिक्षा आवश्यक है।** कुँड़ुख़ भाषा की लिपि भी विकसित हो चुकी है, जिसका इसका नाम **तोलोंग सिकि** है। इस लिपि का कम्प्यूटर वर्जन, केलितोलोंग फॉन्ट, newswing.com में निशुल्क उपलब्ध है। सियांग गाँव वाले भी **भाषायी धरोहर को संरक्षित एवं सुरक्षित** करने की

दिशा में तोलोंग सिकि (लिपि) की पढ़ाई धुमकुड़िया के माध्यम से आरंभ कर चुके हैं। धुमकुड़िया उद्घाटन के अवसर पर गाँव के पहान, पुजार, महतो एवं पड़हा पंच के साथ श्री लोहरा उराँव, श्री जतरू उराँव, श्री बुधराम उराँव, श्री चमरा उराँव, पड़हा कोटवार श्री गजेप्दर उराँव, श्री कैलाश उराँव, सिसई प्रखण्ड के प्रमुख श्री देवेन्द्र उराँव एवं गाँव के बहुत से युवक–युवतियाँ उपस्थित थे।

देश–विदेश

1. नेपाल देश में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर नेपाल वासी कुँडुख़ भाषा साहित्यकार श्री बेचन उराँव को उनके योगदान के लिए **राष्ट्र मातृभाषा सेवा पुरस्कार** प्रदान किया गया।

तोलोंग सिकि (लिपि) के संस्थापक का परिचय

नाम : डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'

जन्म स्थान : ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई,
जिला – गुमला, झारखण्ड।

षिक्षा–दीक्षा : मैटिक – 1979 ई0, संत तुलसी दास उच्च विद्यालय,
सिसई, गुमला।

: आई.एस.सी. – 1981 ई0, राँची कॉलेज, राँची।

: आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची में रहकर, झारखण्ड अलग राज्य आन्दोलन से जुड़ाव।

: एम.बी.बी.एस. – 1989 ई0, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार)।

: पी.जी.डी.एम.सी.एच. – 2001 ई0, इग्नू।

: एफ.सी.जी.पी. – 2007 ई0।

कार्यानुभव : चिकित्सा पदाधिकारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, रामगढ़, दुमका, 06.11.1990 से 20.05.1996 तक।

: आवासीय चि0 पदा0/सिनियर रेजिडेन्ट, अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया (बिहार), 29.05.1997 से 10.06.2010 तक।

: चिकित्सा पदाधिकारी (प्रतिनियुक्ति), *स्पेषल केयर न्यू बॉर्न यूनिट* (SCNU), रिम्स, राँची (झारखण्ड), 23.10.2010 से 03.1.2015 तथा 06.02.2015 से 09.3.2015 तक।

: व्याख्याता (सिनियर रेजिडेन्ट), षिषु रोग विभाग, पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल, धनबाद, (झारखण्ड), 27.07.2010 से अबतक।

लेखन :

1. सरना समाज और उसका अस्तित्व – 1989.
2. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न – 1994.
3. ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि – 1997, 1999, 2001.
4. कइलगा – 1998, 1999, 2000, 2008, 2013.
5. चींचो डण्डी अरा ख़ीःरी – 2002.
6. तोलोंग सिकि का उद्‌भव और विकास – 2003.
7. तुङुल – 2005. 2016
8. कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा – 2011.
9. कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा पिंज्जसोर – 2012.
10. कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा पच्चपाब – 2016.

तोलोङ सिकि (लिपि) सलाहकार समिति

1. डॉ0 विशप निर्मल मिंज मो0 न0 – 08987458689

संस्थापक प्राचार्य, गॉस्सनर कॉलेज, राँची (वर्ष 1971 ई0 में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई शुरू हुई।)

2. डॉ0 करमा उराँव मो0 न0 – 09304454836

प्रोफेसर, स्नातकोत्तर मानवषास्त्र विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची।

3. डॉ0 रविन्द्रनाथ भगत मो0 न0 – 09431107316

प्रोफेसर, बिजनेस मैनेजमेंट, बी0 आई0 टी0 मेसरा, राँची।

4. फा0 अगस्तिन केरकेट्टा मो0 न0 – 08051155574

अध्यक्ष, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय समिति।

5. डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' मो0 न0 – 09771163804

संस्थापक, तोलोंग सिकि (लिपि) सह महासचिव, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा।

6. डॉ0 जेफ्रेनियुस बख़ला मो0 न0 – 09905582725

संस्थापक, कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, डुमरी, गुमला।

7. फा0 जेम्स टोप्पो मो0 न0 – 09835389339

पूर्व प्रधानाचार्य, संत जॉन हाई स्कूल, राँची।

8. डॉ0 हरि उराँव मो0 न0 – 09334907447

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची। **9.**

डॉ0 नारायण भगत मो0 न0 – 08521458677

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कुँड़ुख़, डोरण्डा कॉलेज, राँची।

10. श्री किसलय मो0 न0 – 09431113111

वरिष्ठ पत्रकार, 218 एल एन मिश्रा कॉलोनी, इटकी रोड, राँची।

11. डॉ0 रामकिषोर भगत मो0 न0 – 09835504002

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कुँड़ुख़, सूरज सिंह मेमोरियल कॉलेज, राँची।

12. डॉ0 बिन्दु पहान मो0 न0 – 09234707509

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थषास्त्र, ए0बी0एम0 कॉलेज जमषेदपुर।

13. श्री विनोद भगत 'हिरही' मो0 न0 – 08987625713

कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा।

14. डॉ0 दुखा भगत मो0 न0 – 09431166202

एसोसिएट प्रोफेसर, कुँड़ुख़, गॉस्सनर कॉलेज, राँची।

15. श्री फिलमोन टोप्पो मो0 न0 – 09430776926

संयुक्त सचिव, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा।

16. प्रो0 प्रवीण उराँव मो0 न0 – 07677135119

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल, संजय गांधी मेमोरियल कॉलेज, राँची।

17. डॉ0 (श्रीमती) षान्ति खलखो मो0 न0 – 09905328984

उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय समिति।

18. डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज मो0 न0 – 09009154321

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, छत्तीसगढ़।

19. श्री अथनास टोप्पो मो0 न0 – 09300296678

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, मध्यप्रदेष।

20. श्री डेविड बाड़ा मो0 न0 – 09678605414

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, असम।

21. श्री बिमल टोप्पो मो0 न0 – 0953942838

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, पष्चिम बंगाल।

22. श्री मनीलाल केरकेट्टा मो0 न0 – 09437187780

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, ओड़िसा।

23. श्री सुशील कुजूर मो0 न0 – 09975104161

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, महाराष्ट्र।

24. श्री अशोक बखला मो0 न0 – 09818429165

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, नई दिल्ली।

25. श्री ललित भगत मो0 न0 – 09572276336

संयोजक, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, बिहार।

****

(ध्यानाकर्षण :– *तोलोंग सिकि का संक्षिप्त इतिहास (भाग 1),* संकलन प्रस्तुति, मई 1989 से आरंभ कर मई 2016 को अंत किया गया है। इसमें, 26 वर्षों के लिपि का इतिहास की संघर्ष गाथा चित्रित है। सर्वप्रथम इस लिपि को, सार्वजनिक व्यवहार के लिए 15 मई 1999 को लोकार्पित किया गया था।)